उर्दू काव्य की एक नई धारा

उर्दू काव्य की एक नई धारा

श्री उपेंद्रनाथ, 'अश्क'

१९४१

हिंदुस्तानी एकेडमी
इलाहाबाद

प्रकाशक
हिंदुस्तानी एकेडेमी
यू० पी०, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
मूल्य १) ५०

मुद्रक: ओंकार प्रसाद गौड़, मैनेजर,
कायस्थ पाठशाला प्रेस व प्रिंटिंग हाउस, इलाहाबाद

धर्मवीर आनंद

को

जिस का प्रोत्साहन कठिनतम

परिस्थितियों में मेरा

साथी रहा है

कविता मे हिंदुस्तान की संस्कृति ज़ोर से झलकती दिखाई देती है। आगे चलिए, अठारवीं सदी मे सौदा के मरसियों और क़सीदों में हिंदुस्तानियत का चोखा रंग है, उन्नीसवीं सदी में नज़ीर अकबराबादी इसी रंग में रँगा है। यही हाल बीसवीं सदी का है।

श्री उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने, जो ख़ुद उर्दू के अच्छे शायर और कहानी लिखनेवाले हैं, इस छोटी सी पुस्तक मे उन थोड़े से उर्दू के कवियों का ज़िक्र किया है जिन्हों ने अपनी कविता मे हिंदी के असर को क़ुबूल किया है। इन कवियों मे हिंदू भी हैं और मुसलमान भी. लेकिन इन के गीतों को पढ़ कर कोई भी यह नहीं कह सकता कि इन में मत या धर्म का भेद है।

मेरा विचार है कि यह पुरानी कविता की धारा न केवल मधुर और सुंदर है यह शक्ति और ओज से भरी है। यह सैकड़ों और हज़ारों नहीं लाखों और करोड़ों के दिलों को लुभाने और गरमाने वाली है। अगर हमारा साहित्य थोड़े से इने-गिने पढ़े-लिखों को आनंद देने के लिए ही नहीं, लेकिन हमारे गांव और हाट का कड़ा जीवन बितानेवाले अनगिनत भाइयों के दिलों को गुदगुदाने और सुख देने के लिए बनना चाहिए, तो वह इस मिली-जुली भाषा में ऐसे ही मिले-जुले छंदो मे और इसी तरह के भावों से जो सब में समान हैं प्रेरित होगा, जिस के नमूने श्री उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने इस पुस्तक में जमा किए हैं।

ताराचंद

विषय-सूची

विविध

प्रवेश

वर्तमान उर्दू काव्य पर हिंदी का प्रभाव कैसे पड़ा, क्यों पड़ा और कब से पड़ना आरंभ हुआ और इस का इतिहास क्या है ? मुझे इन बातों से कुछ मतलब नहीं। मैं तो केवल यह कहना चाहता हूं कि उर्दू कविता की वर्तमान धारा पर हिंदी का प्रभाव पड़ा है, और ख़ूब पड़ा है। 'ज़माना' कानपुर के किसी अंक में स्वर्गीय मुंशी प्रेमचंद जी ने भारत की साझी भाषा के संबंध में एक लेख लिखा था, जिस में दूसरी बातों के अतिरिक्त उन्हों ने यह भी कहा था, कि उर्दूवाले हिंदी शब्दों के साथ छुआछूत का बर्ताव करते हैं। इस का उत्तर देते हुए उर्दू के प्रख्यात गल्प-लेखक मौ० ल० अहमद ने पंजाब के प्रसिद्ध मासिक पत्र 'नैरंगे-ख़याल' के एक अंक में लिखा था—"हालाँकि मैं समझता हूं कि उर्दूवाले हिंदी की ओर स्वभावतया अधिक झुकाव रखते हैं। उर्दू के साहित्यिक सदैव हिंदी शब्दों के प्रयोग की कोशिश में व्यस्त दिखाई देते हैं, और उर्दू कवि अपनी कविताओं मे न केवल हिंदी शब्द ही अधिक रखते हैं, बल्कि हिंदी भावों और हिंदी विचारों को भी अपनाने से परहेज़ नहीं करते।" और यह है भी सत्य। जो भी कोई उर्दू काव्य का तनिक बारीकी से अध्ययन करेगा, उसे मौ० ल० अहमद के कथन की सत्यता का पता चल जायगा, उसे आधुनिक उर्दू कविता में हिंदी का प्रभाव साफ़ दिखाई देगा।

पंजाब के प्रसिद्ध व्यंग्य-लेखक हज़रत 'पाग़ल' ने (जिन का पागलपन इसी से ज़ाहिर है कि वे अपने को पागल न लिख कर व्याकरण की बेड़ियों का मज़ाक उड़ाते हुए 'पाग़ल' लिखा करते हैं) एक जगह लिखा है :—

जेब में पैसा नहीं और रोटियों से तंग है,
लोग कहते हैं कि पाग़ल गाँधी टोपीपोश है।

अर्थात्—'लोग पागल को गाँधी टोपी और खादी से सुसज्जित देख कर समझते है कि पागल गाँधी का चेला हो गया है। उन्हे क्या मालूम कि उस के पास दूसरे मूल्यवान वस्त्र ख़रीदने को पैसा ही नही ?'

मै भी जब यह कहता हूं कि उर्दू काव्य पर हिंदी का प्रभाव पड़ा है, तो मैं ऐसे विवश लोगों की कविताओं को देख कर ऐसा नही कहता, जो न हिंदी मे कविता कर सकते हैं न उर्दू मे, और इस लिए गंगा-जमनी भाषा मे अपने कविता के शौक़ को पूरा किया करते हैं। मै यह दावा उर्दू के उन महारथियो की उच्च कोटि की कविताओं को देख कर करता हूं, जिन्हों ने 'बॉगे-दरा', 'शाहनामाए-इस्लाम', 'आहंगे-रज़्म', 'दर्दे-जिंदगी' और 'नैरंगे-फ़ितरत' जैसे उर्दू साहित्य में अपना सानी न रखनेवाले ग्रंथ लिखे हैं। मेरा इशारा महाकवि 'इक़बाल', अब्बुल असर 'हफ़ीज़', 'वक़ार' अंबालवी, अहसान 'दानिश', पंडित इंद्रजीत शर्मा और अख्तर शेरानी तथा दूसरे समर्थ कवियों की ओर है।

आधुनिक उर्दू काव्य की उस धारा को, जिस पर हिंदी का प्रभाव पडा है, मै तीन श्रेणियो में विभक्त करता हूं—ग़ज़लें[1], नज़्में[2] और गीत[3]। यद्यपि यह प्रभाव पूर्णतया तो गीतों की सूरत में ही प्रस्फुटित हुआ है, तो भी ग़ज़लों और नज़्मों पर हिंदी का जो प्रभाव पडा है, उस का ज़िक्र अत्यावश्यक है, क्योंकि इन्ही दो रंगो के बाद गीतों का रंग शुरू होता है।

ग़ज़लें

(क) गीतों तक पहुँचने के लिए उर्दू कविताएं प्रायः एक दो मरहलों से

---

[1]ग़ज़ल वह कविता है, जिस में कई शेर होते हैं। उन मे क़ाफ़िया और रदीफ़ (साधारणतया प्रत्येक शेर के पिछले दो शब्द) आपस मे मिलते है, परन्तु एक शेर विषय मे दूसरे से सर्वथा विभिन्न होता है।

[2]नज़्म में विषय एक ही होता है और छन्द विभिन्न होते है।

[3]गीत प्रायः हिंदी गीतों जैसे ही होते है।

अवश्य गुज़रती हैं। मैं ने ऐसा नहीं देखा कि कोई उर्दू कवि एकदम ही सरल सीधे गीत लिखने लगा हो। प्रारंभ उन की ग़ज़लों और नज़्मों में सरल भाषा के प्रयोग से ही होता है। आधुनिक कविताओं का अध्ययन करने से ज्ञात होगा कि प्रवृत्ति कठिन और क्लिष्ट शब्दों को छोड़ कर सीधी-सादी उर्दू में लिखने की ओर अधिक है।

प्रसिद्ध कवि श्री 'जिगर' मुरादाबादी के तीन शेर हैं; देखिए भाषा कितनी सरल है :—

उदासी तबीयत पै छा जायेगी, उन्हें जब मेरी याद आ जायगी।
मेरे बाद ढूँढोगे मेरी वफा, मेरे साथ मेरी वफा जायगी।
मुझे उस के दर पर है मरना जरूर, मेरी यह अदा उस को भा जायगी।

पंडित हरिचंद 'अख़्तर', एम० ए०, उर्दू के प्रसिद्ध कवि हैं। प्रायः उन की भाषा कठिन और भावों की उड़ान ऊँची होती है, परंतु हाल ही में उन की जो ग़ज़लें छपी हैं, उन में क्लिष्टता नाम को भी नहीं और फिर भावों की उत्कृष्टता भी वैसी ही है। देखिए कितने सरल शेर हैं और फिर ऊँचे भावों से कितने परिपूर्ण :—

आप का इंतजार[1] कौन करे? और फिर बार-बार कौन करे?
खुदफरेबी[2] की भी कोई हद है, नित नया एतबार[3] कौन करे?
दिल में शिकवे[4] तो हैं बहुत लेकिन, अब उन्हें शरमसार[5] कौन करे?

और फिर दो शेर हैं :—

मैं अपने दिल का मालिक हूँ, मेरा दिल एक बस्ती है,
कभी आबाद करता हूँ, कभी बर्बाद करता हूँ।
मुलाक़ातें भी होती हैं, मुलाक़ातों के बाद अकसर,
वे मुझ को भूल जाते हैं, मैं उन को याद करता हूँ।

इन शेरों में यद्यपि हिंदी शब्द नहीं हैं; लेकिन उर्दू इतनी आसान है

---

[1]प्रतीक्षा। [2]अपने आप को धोका देना। [3]विश्वास। [4]उलाहने। [5]लज्जित।

कि हिंदी-भाषी भी इन्हें भली-भाँति समझ सकते हैं।

हज़रत 'बहज़ाद' लखनवी की एक ग़ज़ल अपनी सरलता के कारण बड़ी प्रसिद्ध हुई है। चंद शेर देता हूं :—

दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे,
ऐसा न हो तक़दीर तमाशा न बना दे।
मैं ढूंढ रहा हूं वह मेरी शम्अ[1] किधर है,
जो बज़्म[2] की हर चीज को परवाना बना दे।
ऐ देखनेवालो मुझे हँस-हँस के न देखो,
यह इश्क कहीं तुम को भी मुझ सा न बना दे।
आख़िर कोई सूरत भी तो हो खानए-दिल[3] की,
काबा[4] नहीं बनता है तो बुतखाना[5] बना दे।

अब्बुल असर 'हफ़ीज़' जालंधरी की ग़ज़लों में भी आप को यही रंग मिलेगा। एक ग़ज़ल देता हूं :—

दिल अभी तक जवान है प्यारे, किस मुसीबत में जान है प्यारे!
तू मेरे हाल का ख़याल न कर, इस मे भी एक शान है प्यारे!
तल्ख[6] कर दी है जिदगी जिस ने, कितनी मीठी ज़बान है प्यारे!
खैर फ़रियाद[7] बे असर ही सही, ज़िंदगी का निशान है प्यारे!

और फिर अपनी इस सरल भाषा के संबंध में स्वय ही लिखते हैं:—

जग छिड़ जाय हम अगर कह दें, यह हमारी जबान है प्यारे!

(ख) दूसरा रंग उर्दू ग़ज़लों का वह है, जिस में सरल उर्दू के साथ हिंदी के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यहां मैं एक बात कह दूं। जब हिंदी शब्द उर्दू में आते हैं, तो उन की सूरत कुछ बदल जाती है, और इसी लिए उन के उच्चारण मे भी परिवर्तन आ जाता है। इसी बदले हुए

---

[1]दीपक। [2]सभा। [3]दिल का घर। [4]खुदा का घर। [5]बुतों की जगह। उर्दू शायरी मे बुत माशूक़ को कहते हैं। [6]कड़वी। [7]ज़ुल्म की शिकायत।

उच्चारण से ये हिंदी शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं। परंतु मेरा विषय चूँकि उर्दू काव्य पर हिंदी के प्रभाव तक ही परिमित है, इस लिए मैं इन शब्दों के उच्चारण इत्यादि के प्रश्न को न छेड़ूँगा।

इस रंग की ग़ज़लें भी उर्दू में काफ़ी लिखी गई हैं। दूसरे कवियों की बात दूर रही, स्वयं महाकवि स्वर्गीय 'इक़बाल' अपनी ग़ज़लों में हिंदी शब्दों के प्रयोग की लालसा को नहीं छोड़ सके। वे अधिकतर फ़ारसी में लिखते थे और कदाचित् फ़ारसी में उन्हें उर्दू की अपेक्षा आनंद तथा सफलता भी अधिक मिली। परंतु हिंदी शब्दों की सरलता तथा माधुर्य ने उन से भी अनायास लिखवा लिया है :—

'इक़बाल' बड़ा उपदेशक है, मन बातों में मोह लेता है,
गुफ़्तार[1] का यह ग़ाज़ी[2] तो बना, किरदार[3] का ग़ाज़ी बन न सका।

और फिर 'नया शिवाला' में, जो आज भी स्कूल और कालेज के छात्रों, दूकानदारों और दफ़्तर के क्लर्कों, मतलब यह कि जनसाधारण को ज़बानी याद है, महाकवि 'इक़बाल' लिखते हैं :—

सच कह दूँ ऐ ब्रिरहमन गर तू बुरा न माने,
तेरे सनमकदों[4] के बुत हो गए पुराने।
अपनों से बैर करना तू ने बुतों से सीखा,
जंगो-जदल सिखाया वाइज़[5] को भी ख़ुदा ने[6]।
तंग आके मैं ने आख़िर दैरो-हरम को छोड़ा,
वाइज़ का वाज़ छोड़ा, छोड़े तेरे फ़िसाने[7]।
पत्थर की मूरतों में समझा है तू ख़ुदा है,
ख़ाके-वतन[8] का मुझ को हर ज़र्रा[9] देवता है।
आ ग़ैरियत[10] के परदे इक बार फिर उठा दे,

---

[1]बोल। [2]विजयी। [3]कर्म। [4]मंदिरों। [5]उपदेशक। [6]मंदिर-मसजिद। [7]कहानियाँ। [8]देश की धूल। [9]कण। [10]वैमनस्य।

''नक्शे दुई[1] मिटा दे, फ़स्ले बहार[2] ला दे!
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती,
आ इक नया शिवाला इस देश में बना दें!
दुनिया के तीरथों से ऊँचा हो अपना तीरथ,
दामाने आसमाँ से उस का कलश मिला दे!
हर सुबह उठ के गाए मंतर वह मीठे-मीठे,
सारे पुजारियों को मय[3] प्रीत की पिला दे!
शक्ती भी शांती भी भक्तों के गीत में है,
धरती के वासियों की मुक्ती भी प्रीत में है।

जनाब 'साग़र' निज़ामी उर्दू के प्रख्यात कवि हैं। आप की भाषा में रस है, मस्ती है और सुंदरता है। देखिए, उन की निम्न-लिखित ग़ज़ल में उर्दू-हिंदी का कितना सम्मिश्रण है। लिखते हैं:—

यह महफ़िल में किस ने मधुर गीत गाया?
सँभालो सँभालो मुझे वज्द[4] आया!
सियहख़ानए दिल में यह कौन आया?
ज़मीं मुसकराई फ़लक[5] जगमगाया!
बड़ी भूल की हुस्न से दिल लगाया,
दीवाने यह है एक सपने की माया।
मुहब्बत में सूदो-ज़ियाँ[6] की न पूछो,
बहुत हम ने खोया, बहुत हम ने पाया।
न वह हैं न मैं हूँ न दीन और दुनिया,
जनूने मुहब्बत[7] कहाँ खींच लाया।

---

[1]भेद-भाव का नाम। [2]वसंत ऋतु। [3]मदिरा। [4]बेहोशी की हद तक पहुँचनेवाली तन्मयता। [5]आस्मान। [6]हानि-लाभ। [7]प्रेम का उन्माद।

गजल मेरी 'सागर' वह नगमा[1] है जिस को,
जवानी ने लिक्खा मुहब्बत ने गाया।

(ग) 'क़ैस' जालंधरी उर्दू संसार मे ख़ूब चमके हैं। आप का कलाम फ़ारसी में भी मिलता है। मैं आप की एक ग़ज़ल 'माया' देता हूं, जिस मे यह रंग पूरे यौवन पर है, और यदि इसे हिंदी ग़ज़ल ही कह दिया जाय, तो अनुचित न होगा:—

माया पर मत भूल रे प्राणी, माया तो है आनी-जानी।
जीवन है वायू का झोंका, या नदिया का बहता पानी।
यौवन रूप जवानी क्या है? क्या है यौवन रूप जवानी?
प्रेम से सब की सेवा कर तू, सेवा मे है किस की हानी?
त्याग बुरे पुरुषो की संगत, सुन हरदम संतों की बानी।
ज्ञान की खाली बातें क्या हैं? कर ले कुछ जग मे ऐ ज्ञानी!
यह जग तो है रैन-बसेरा, किस बिरते पर तत्ता पानी?
'क़ैस' प्रभू से प्रेम लगा ले, दुनिया तो है आनी-जानी।

नज़्में

(क) नज़्मों को ग़ज़लों और गीतों की दरम्यानी कड़ी समझ लीजिए। पहले-पहल उर्दू कविता ग़ज़लों, मसनवियों और मरसियों तक ही परिमित थी। 'ग़ालिब', 'ज़ौक', 'दाग़', 'मीर', 'सौदा' आदि पुराने कवियों के दीवान आप को अधिकतर ग़ज़लों तथा मसनवियों आदि में ही मिलेंगे। नज़्में काफी देर बाद लिखी जाने लगी हैं, और आधुनिक युग की देन हैं। ये नज़्में भी पहले मुश्किल उर्दू में लिखी जाती रहीं। बाद को जब सरल उर्दू मे लिखी जाने के कारण अधिक रोचक प्रतीत होने लगीं, तो ग़ज़लों का दौर रुख़सत हो गया। आधुनिक युग के कवियों के दीवानों में आप को इन्हीं नज़्मों का आधिक्य दिखाई देगा। इस के बाद वह युग भी आया,

[1] गान।

जब इन्हीं नज़्मों में हिंदी के शब्दों का प्रयोग होने लगा, और फिर हिंदी शब्दों के सम्मिश्रण ने कवियों को इतना मोह लिया कि वे नज़्में लिखते-लिखते हिंदी गीत लिखने लगे। इस रंग की नज़्में भी एक हद तक हिंदी. गीत बन गई हैं।

नए युग की ख़ालिस उर्दू नज्म का नमूना देखिए। शीर्षक है—'आए न वह बहार मे, बीत चली बहार भी'। 'वक़ार' साहब लिखते हैं:—

दिलकशो[1] दिलफरेब[2] हैं, दश्त[3] भी राहगुजार[4] भी,
बाग भी हैं खिले हुए फ़ूलो पै है निखार भी,
क्या करूं मैं बहार को, दिल पै हो इख़्त्यार भी,
रुखसते सैर[5] दे मुझे, सदमए[6] इतजार भी,
आए न वह बहार मे, बीत चली बहार भी!
दिल की कली न खिल सकी, मेरे लिए बहार क्या?
नजहते[7] लालाजार क्या. निकहते[8] मुश्कबार क्या?
उन के बगैर आ सके दिल को मेरे करार[9] क्या?
कहती हैं सच सहेलिया, मर्द का एतबार क्या?
आए न वह बहार में, बीत चली बहार भी!
मौत पै बस नहीं मेरा, दिल नहीं इख़्त्यार मे,
यह न खबर थी दुख मुझे, सहने पड़ेगे प्यार मे,
ऐश-तरब[10] के थे ये दिन, खो दिए इतजार मे,
हसरते दिल मे रह गईं, आए न वह बहार में,
आए न वह बहार मे, बीत चली बहार भी!

यही नज़्में सरलता और सुंदरता की किस हद तक पहुँची हैं, यह मियां बशीर अहमद बैरिस्टर, मालिक तथा संपादक 'हुमायूँ' की आधुनिक नज़्मों

---

[1]आकर्षक। [2]दिल लुभानेवाला। [3]मरुस्थल। [4]मार्ग। [5]सैर की आज्ञा। [6]दुःख। [7]विचित्रता। [8] सुगंधि। [9]चैन। [10]सुख-आराम।

को पढ़ कर ही ज्ञात होगा। 'मेरे फूल' शीर्षक नज़्म में मियां बशीर अहमद लिखते हैं :—

मेरे घर में तुझ से नूर,
मेरा टीला तुझ से तूर[1],
मेरी जन्नत[2] की तू हूर[3],
तेरी ख़ुशी मुझे मंजूर,
फूलों में ऐ मेरे फूल!
गाने गा और झूला झूल।
तेरी बातों में है रस,
बिजली सा है तेरा मस[4],
उम्र है तेरी चार बरस,
अल्लाह बस बाकी है हवस,
फूलों में ऐ मेरे फूल!
गाने गा और झूला झूल।

मियां साहब की 'संगतरे' शीर्षक कविता में सरलता अपनी चरम-सीमा को पहुँच गई है :—

संगतरे, रंगतरे, ख़ुशनुमा,[5] रस भरे,
पाँच-छः लीजिए! इन का रस पीजिए!
जिंदगी आगही[6], बार है, आर है!
जब तलक, रस न हो! जब तलक, बस न हो!
काम सब छोड़ के, बाग़ में शाख़ से,
संगतरे तोड़ के, उन का रस पीजिए!
ऐश यूं कीजिए।

---

[1] तूर वह पहाड़ था, जहां हज़रत मूसा को ख़ुदा ने अपना जल्वा दिखाया था, और जो उस ज्योति की तपिश से जल कर राख हो गया था। [2] स्वर्ग। [3] अप्सरा। [4] स्पर्श। [5] सुंदर। [6] ज्ञान।

(ख) और फिर, जैसा मैं ने कहा, इन सरल नज़्मों में कहीं-कहीं हिंदी के शब्द भरे जाने लगे। इस से इन की सुंदरता और माधुर्य में जो वृद्धि हुई. वह निम्नलिखित नज़्मों से साफ़ प्रकट है। डाक्टर मुहम्मद दीन 'तासीर', एम० ए०, प्रिंसिपल, एम० ए० ओ० कालेज अमृतसर की एक नज़्म है :—

मान भी जाओ, जाने भी दो, छोड़ो भी अब पिछली बातें।
ऐसे दिन आते हैं कब-कब, कब आती हैं ऐसी रातें ?
मान भी जाओ, जाने भी दो।
देख लो वह पूरब की जानिब[1], नूर ने दामन[2] फैलाया है।
रात की खलअत[3] दूर हुई है, सूरज वापस लौट आया है।
मान भी जाओ, जाने भी दो।
जल-जल कर मर जानेवाले, परवानों[4] का ढेर लगा है।
यह भी लेकिन देखा तुम ने, शम्अ[5] का क्या अंजाम हुआ है ?
मान भी जाओ, जाने भी दो!

सैयद ज़ुल्फ़िकार अली बुख़ारी, स्टेशन डारेक्टर, आल इंडिया रेडियो, बंबई, की नज़्म 'जोगी' करुण-रस के साथ-साथ मिठास से कितनी भरी हुई है :—

यह उस से जाकर पूछो, जिस का मज़हब दुनियादारी है,
यह दुनिया कितनी अच्छी है, यह दुनिया कितनी प्यारी है ?
हां, बीत गए वह दिन. जब था हंगामए हाओ-हू[6] बरपा[7],
अब दिल की बस्ती सूनी है. इक हू का आलम[8] तारी[9] है।
इस रोने पर, इस हँसने पर, हैरान न हो, इतना तो समझ,
वह जीने की तैयारी थी, यह मरने की तैयारी है।

---

[1]तरफ़। [2]आँचल। [3]पोशाक। [4]पतंगों। [5]दीपक। [6]हाय-हाय का शोर। [7]जारी। [8]निस्तब्धता। [9]छाया।

इक और भी दुनिया बसती है, इन क्रोध की दुनिया के बाहर ;
उस दुनिया में सुख मिलता है, यह दुनिया सब दुखियारी है।
ऐ मायावालो, अपनी माया इस कुटिया से ले जाओ!
यह साधू प्रेम-पुजारी है, यह साधू प्रीत-भिखारी है।

(ग) उन नज़्मों में जहां उर्दू के मुश्किल शब्दों के साथ-साथ हिंदी के शब्द भी मौजूद हैं और नज़्म की सुंदरता को घटाने के बदले बढ़ाते हैं, मैं हज़रत अहसान 'दानिश' और 'निशात' जायसी की दो नज़्में देता हूं। अहसान साहब की नज़्म है—'बरसात के अंतिम दिन' :—

बरसात है ख़त्म इस महीने, कीने[1] से धुले हुए हैं सीने।
बदली जो बरस के थम गई है, गुलशन[2] पै' बहार जम गई है।
नाले हैं कि राग गा रहे हैं, जंगल हैं कि सनसना रहे हैं।
संसार का मुँह सा धुल गया है, हर चीज़ का रंग खुल गया है।
नहरें-सी बनी हुई हैं राहें, पेड़ों की लचक रही हैं बाहें!
अहसान हूं किस हाल में न पूछो, हूं किस के ख़याल में न पूछो!

'निशात' जायसी की नज़्म है, 'चाँद की बस्ती'। लिखते हैं :—

दिलकश औ' नूरानी[3] दुनिया, मदमाती मस्तानी दुनिया।
दुनिया है मतवारी सारी, मतवारी है बादे-बहारी[4]।
फ़ितरत[5] प्यारी झूम रही है, दुनिया सारी झूम रही है।
नीला अंबर रौशन तारे, नन्हे नन्हे प्यारे प्यारे।
बस्ती में हर सू[6] है मस्ती, यह बस्ती है चाँद की बस्ती।

(घ) और फिर उर्दू नज़्मों में हिंदी का यह संमिश्रण इस हद तक बढ़ा कि नज़्में गीत बन कर रह गईं। इस के बाद ही गीतों का वह युग आया, जो एक बार उर्दू संसार पर छाकर रह गया और अपनी व्यापकता में नज़्मों को भी मात कर गया। उर्दू के प्रसिद्ध मस्त कवि 'अख़्तर'

---

[1]द्वेष। [2]वाटिका। [3]ज्योतिर्मय। [4]मधुऋतु की हवा। [5]प्रकृति। [6]तरफ़।

शेरानी की नज़्म 'ऐ इश्क़ कहीं ले चल' इस रंग का उत्तम उदाहरण है। सरलता और मीठेपन में यह नज़्म गीत ही बन गई है और इस की लोक-प्रियता का यह आलम है कि बीसियों बार छप जाने के पश्चात् आज तक बराबर छप रही है। उच्च कोटि की नज़्मों मे जितनी यह गाई गई है, शायद ही कोई दूसरी नज़्म गाई गई हो। सीधी सरल भाषा है, मीठे-मीठे हिंदी के शब्द है और दुनियादारों की स्वार्थ-प्रियता से तंग आया हुआ कवि का हृदय है। लिखते हैं :—

ऐ इश्क कहीं ले चल, इस पाप की बस्ती से,
नफ़रतगहे[1] आलम से, लानतगहे[2] हस्ती[3] से,
इन नफ्स - परस्तों[4] से, इस नफ्स - परस्ती से,
दूर और कहीं ले चल, ऐ इश्क़ कहीं ले चल!

हम प्रेम पुजारी हैं, तू प्रेम-कन्हैया है,
तू प्रेम - कन्हैया है, यह प्रेम की नैया है,
यह प्रेम की नैया है, तू इस का खेवैया है,
कुछ फ़िक्र नहीं, ले चल, ऐ इश्क़, कहीं ले चल!

बेरहम ज़माने को, अब छोड़ रहे हैं हम,
बेदर्द अज़ीज़ों[5] से मुँह मोड़ रहे हैं हम,
जो आस कि थी वह भी बस तोड़ रहे हैं हम,
अब ताब[6] नहीं ले चल, ऐ इश्क़, कहीं ले चल!

आपस में छल औ' धोके ससार की रीते हैं,
इस पाप की नगरी में उजड़ी हुई प्रीतें हैं,
या न्याय की हारें हैं, अन्याय की जीतें हैं,
सुख-चैन नहीं, ले चल, ऐ इश्क़, कहीं ले चल!

---

[1]उपेक्षा की जगह। [2]निंदा की जगह। [3]अस्तित्व। [4]कामियों।
[5]प्रियजनों। [6]संतोष।

संसार के उस पार इक इस तरह की बस्ती हो ,
जो सदियों से इसा[1] की सूरत को तरसती हो ,
औ' जिस के मनाज़र[2] पर तनहाई[3] बरसती हो ,
यूं हो तो वहां ले चल , ऐ इश्क़, कहीं ले चल !
वह तीर हो सागर का, रुत छाई हो फागन की ,
फूलों से महकती हो पुरवाई घने बन की ,
और आठ पहर जिस में झड़-बदली हो सावन की ,
जी बस में नहीं ले चल , ऐ इश्क़ कहां ले चल !
पच्छिम की हवाओं से आवाज सी आती है ,
औ' हम को समुदर के उस पार बुलाती है ,
शायद कोई तनहाई का देस बताती है ,
चल, उस के क़रीं[4] ले चल , ऐ इश्क़ कहीं ले चल !
बरसात की मतवाली घनघोर घटाओं में ,
कुहसार[5] के दामन की मस्ताना हवाओं में ,
या चाँदनी रातों की शफ़्फ़ाफ़[6] फ़िज़ाओं[7] में .
दिल चाहे वहीं ले चल ! ऐ इश्क़ कहीं ले चल ।

(ङ) इस से पहले कि मैं तीसरे रंग का—गीतों का—ज़िक्र करूं, मैं यहां उन नज़्मों का ज़िक्र भी कर देना चाहता हूं, जिन में हिंदी के शब्द चाहे इतने न हों, पर हिंदी भाव कूट-कूट कर भरे हुए हैं । मैं इस संबंध में एक कविता देता हूं, जिस का उर्दू शीर्षक भी कवि ने 'मेघदूत' ही रक्खा है । इस के रचयिता जनाब 'मंज़ूर' सिद्दीक़ी अकबराबादी हैं । एक फ़ुरक़त —वियोग—का मारा घटाओं के द्वारा अपनी प्रेमिका को अतीत की याद दिलाता हुआ अपने दुख की कहानी कहता है :—

---

[1]मनुष्य । [2]दृश्य । [3]एकांत । [4]समीप । [5]पहाड़ । [6]उज्ज्वल । [7]वातावरण ।

यह काफिर घटाए, यह काफिर घटाए,
नज़र मे समाए तो क्योंकर समाए ?
कही और बरसे, कहीं और जाए,
मुनासिब यही है, न हम को सताए।
घटाए जो हमदर्द हैं तो खुदा रा,
यह पैग़ामे[१] ग़म उन को मेरा सुनाए.
कि ऐ कायनाते[२] मुहब्बत की देवी.
तेरे हिज्र[३] का बार कब तक उठाए ?
ख़ुदा मेहरबा है न तू मेहरबा है,
कहानी यह अपनी कहा जा सुनाए ?
मगर हा जिसे तू ने बिसरा दिया है,
तुझे याद वह दौरे-माज़ी[४] दिलाए !
वह अक्सर तेरा रूठ कर मुझ से कहना,
हमे तुम मनाओ, तुम्हे हम मनाए !
जुदा थी ज़माने से दुनिया हमारी.
प्रेमी हवाए, अछूती हवाए !
मगर आह, ऐ इनक़लाबे[५] ज़माना,
कि अब हैं वफाओं के बदले जफाए !
बफ़ूरे ग़मो रज से घुल रहे हैं,
यह है आरज़ू अपनी हस्ती मिटाए।

एक नज्म और है। रचयिता का नाम तो मालूम नहीं, परंतु नज़्म भाषा की सरलता के साथ हिंदी भावों और हिंदी के माधुर्य से कितनी ओतप्रोत है, इस का अनुमान केवल इसे पढ कर ही किया जा सकता है। यह नज्म उर्दू के प्रसिद्ध मासिक पत्र 'नैरंगे ख़याल' मे प्रकाशित हुई थी

---

[१]संदेश। [२]दुनिया। [३]वियोग। [४]पुराना समय। [५]परिवर्तन।

कोई साहब बिरहिन के हृदय मे उठनेवाले भावों का चित्र इस कुशलता से खींचते हैं कि क़लम चूम लेने को जी चाहता है। वर्षा ऋतु है और प्रियतम परदेश मे और—

उमग इक जी मे उठ रही है, घटाए घिर-घिर के छा रही हैं
पडोसिने झूलने को झूला, घने घने वन मे जा रही हैं।
कहीं पे बादल बरस रहे हैं, कहीं पे बिजली चमक रही है,
हरी-हरी डालियों पे चिडिया, जगह-जगह चहचहा रही हैं।
लगा है सावन घिरा है बादल, पडा है झूला, लगी हैं लडियां;
बड़े-बड़े पींग चल रहे हैं पडोसिने गीत गा रही हैं।
इधर पपीहे की 'पी कहां', छेड़ती है बैठे-बिठाए मुझ को·
उधर निगोडी यह कोयल और भी मेरा जी जला रही है।
जहां-जहां पड चुका है पानी, भरी हुई हैं वहां की झीले·
और उन में जाकर सुहागने सब की सब झपाझप नहा रही हैं।
मुझे नहीं चैन बिन तुम्हारे, अकेले घर मे उलझ रही हैं·
पहाड से दिन सता रहे हैं, सुहानी राते रुला रही हैं।
हो तुम तो परदेस मे ऐ साजन, मैं कैसे काटूंगी इन दिनों को?
ऐ मेरे प्यारे, तुम्हारी बाते, बहुत कलेजा दुखा रही हैं।

(च) इसी संबंध मे यह अन्याय होगा, यदि मैं उर्दू के युग-प्रवर्तक कवि स्वर्गीय अज़मतुल्ला का ज़िक्र न करूं। श्री अख्तर हुसेन रायपुरी ने उन के विषय में सुदर्शन जी के दिवंगत मासिक पत्र 'चंदन' मे एक सुंदर लेख भी लिखा था। उर्दू में हिंदी शब्द तथा भाव लाने और क्लिष्ट भाषा को सरल बनाने में स्वर्गीय अज़मतुल्ला का हाथ कुछ कम नहीं। आप ने उर्दू के दकियानूसी अरूज़ (पिंगल) और उर्दू के क्लिष्ट और दुरूह शब्दों के विरुद्ध एक भारी विद्रोह किया, और उर्दू मे हिंदी भाव तथा हिंदी शब्द लाने पर ही बस नहीं की, बल्कि अरबी और हिंदी छंदों को मिला कर नई बहरे (छंद) बनाईं और उन मे सुंदर कविताएं कीं।

नए छंदों में उन की कविता का नमूना देखिए। शीर्षक है, 'बरसात की रात'। लिखते हैं :—

वर्षा रुत है, घटा है छाई,
बालों को खोले रात है आई,
अँधियारी में, है गहराई,
झड़ी लगी है हलकी-हलकी।
जानवरों ने लिया बसेरा,
तारीकी ने जग को घेरा,
छाया घटाटोप अँधेरा,
हां, कभी हंस पड़ती है बिजली।
नींद जो आई वक्त से पहले,
फूल से बालक पँखुड़िया मूंदे,
सोए बेसुध औंधे-सीधे।
जल्दी-जल्दी घर का बखेड़ा।
सुंदर चित्रा ने निबटाया,
हर एक बिछौना बिछवाया,
पान बनाया, खाया खिलाया,
ज़ोर का आया मेंह का तरेड़ा।
होने लगीं फिर घर की बातें,
बच्चों की दिन-भर की बात,
बे-सिर की बे-पर की बातें,
औ' कुछ इधर-उधर की बातें।

कितना सुंदर चित्र है और भाषा कितनी सरल ! न शब्दों का गोरख-धंधा है, न रूपों का इंद्रजाल !!

उर्दू में हिंदी-भाव लाने के लिए श्री अज़मतुल्ला ने जो कुछ किया है, उस का पता केवल आप की नज़्म 'मुझे प्रीत का यां कोई फल न मिला'

से ही लग सकेगा। वास्तव में यह नज़्म नहीं, एक कहानी है - विहाग में गाई और करुणा रस में डूबी हुई। कथानक चाहे मुसलमान संस्कृति से ही संबंध रखता है; परंतु भाव वही हैं, जिन से हिंदी कविता श्रोतप्रोत है, और छंद भी सर्वथा नए हैं।

एक मुसलमान युवती बचपन से अपने चचेरे भाई के साथ रही है। दोनों साथ इकट्ठे खेले-कूदे और पढ़े हैं। यौवन का देवता आता है और चुपके से दोनों के दिलों में प्रेम का संचार कर देता है। एक-दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। उन की माताएं यह देख कर उन के विवाह की बात पक्की कर देती हैं। लड़का उसे स्वयं पढ़ाता है, और फिर शिक्षा-प्राप्ति के लिए विलायत चला जाता है। वहां से वापस आकर एक ऊंचे सरकारी पद पर नियुक्त हो जाता है। लड़के का पिता अपने निर्धन भाई के यहां संपन्न पुत्र का विवाह नहीं करना चाहता, और उस की सगाई किसी रईस के घर कर देता है। उस की प्रेयसी दिल पर पत्थर रख कर उस के विवाह की तैयारी शुरू कर देती है। इस के बाद उस की सगाई भी कहीं हो जाती है और उस के विवाह की तैयारियां भी आरंभ हो जाती हैं; परंतु उसे इन तैयारियों से क्या मतलब ? वह तो मृत्युशय्या पर पड़ जाती है। इस स्थल पर उस दुखियारी विरह की मारी की रामकहानी उस की अपनी ज़बानी सुनिए :—

मैं नन्हीं-सी जान ग़रीब बड़ी, कभी भूल के दुख न किसी को दिया !
न तो रूठी कभी न किसी से लड़ी, मेरी बातों ने घर भर का है मोह लिया !
मेरे सर में तुम्हारा ही ध्यान बसा, मेरी चाह के राज - दुलारे बने !
तुम्हें देवता जान के मन में रखा, मेरी भोली-सी आंखों के तारे बने !

शेली ने कहा है—'कविता हृदय के भावों की प्रतिच्छाया मात्र है।' दिल के दर्पण का इस से सुंदर चित्र और कौन उतार सकता है ? निराशा की मारी मृत्यु की बाट जोहती है, और तड़प-तड़प कर कहती है :—

मुझे प्रीत का या कोई फल न मिला, मेरे तन को यह आग जला ही गई !
मुझे चैन यहा क़ोई पल न मिला, मेरे मन को यह आग जला ही गई !
मेरा एक जगह जो पयाम[1] लगा, मेरे दिल से तड़प के यह निकली दुआ,
नहीं चाह ही दिल में तो ब्याह है क्या, तू खुदाया मुझे यूंही जग से उठा !
मुझे चाह ने खा लिया घुन की तरह, मेरी जान की कल ही बिगड़-सी गई !
मेरा जिस्म भी बन गया बन की तरह, योंही बिस्तरे मर्ग[2] पै पड़-सी गई !
मुझे जीते-जी प्रीत का फल न मिला, मेरे तन को यह आग जला ही गई !
मुझे प्रीत की रीत का फल न मिला, मेरे मन को यह आग जला ही गई !

निराशा और निराशाजनक भावों तथा उद्गारों का चित्र-चित्रण तो बहुतों ने किया होगा; परंतु निराशा की दबी हुई आहों का नक़्शा जिस प्रकार अज़मतुल्ला ने खींचा है, उस की नज़ीर बहुत कम मिलती है।

गीत

पिछले पृष्ठों को पढ़ने के बाद इस बात का पता चल जाएगा कि उर्दू कविता मे एक नए युग का आविर्भाव हुआ है। एक नए रंग की कविता लिखी जाने लगी है। जिस प्रकार हिंदी कविता नायिका-भेद और राजा-महाराजाओं की स्तुति तथा विलास-भावनाओं के संकुचित युग से निकल कर मुक्ति के महान आकाश मे चिड़ियों की भाँति विविध स्वरों से चहकने लगी है, उसी प्रकार उर्दू शायरी भी शमा-परवाने, गुलो-बुलबुल, महबूबा-माशूक़ के जाल से निकल कर नई भावनाओं के साथ जगत में प्रवेश कर रही है।

एक ही तरह की ग़ज़लों का दौर ख़त्म हुए भी देर हो चुकी। अब तो कवि नज़्मों की दुनिया से भी आगे निकल कर, कविता के एक नए संसार की सृष्टि कर रहे हैं। बड़े-बड़े शायर छोटे-छोटे सीधे और सरल गीतों में

---

[1] विवाह-संबंध। [2] मृत्यु-शय्या।

हृदय के कोमलतम उद्गारों को व्यक्त कर के साहित्य में नई गंगा बहा रहे हैं। यह गीत पंजाब में सर्वसाधारण की ज़बान पर चढे हुए हैं और कुछ तो इतने लोकप्रिय हुए हैं कि गले में अमृत रखने वाले अपने मीठे, मादक स्वरों से गाते हुए इन से पंजाब की महफ़िलों को गुँजा देते हैं।

सुंदरता के जादू से दिलों को मोह लेने वाले इन गीतों को जन्म देने का श्रेय जालंधर की नररत्न-प्रभू भूमि में जन्म लेने वाले मौलाना अबुल असर 'हफ़ीज़' को है। अपने इस रंग के विषय में वह स्वयं ही लिखते हैं—

किया पाबंदे नै नाले का मैं ने,
यह तर्ज़े ख़ास है ईजाद मेरी।[1]

और है भी ठीक। उन्हों ने वे गीत लिखे हैं जिन में नाले गान बन गए हैं और आहें तानें। 'मन है पराए बस में' शीर्षक से उन का गान मेरे इस कथन का प्रमाण है।

साहित्य में भी क्रांति का पैग़ाम लाने वाले की क़द्र पहले कठिनाई से ही होती है। उन्हों ने अपना इस प्रकार का पहला गीत 'कान्ह की बंसरी' लिख कर जब लाहौर के एक प्रसिद्ध साप्ताहिक में भेजा, तो उस के संपादक ने, जो 'हफ़ीज़' साहब के घनिष्ट मित्र थे, उन को 'इस बेगार टालने' पर बहुत उलाहना दिया, और गीत को आकर्षक स्थान न देकर एक कोने में छाप दिया। किंतु जादू वह जो सर पर चढ कर बोले। दूसरे ही दिन जब 'हफ़ीज़' साहब ने वही गीत अपनी जादू भरी आवाज़ में गाकर सुनाया तो महफ़िल झूम गई। उक्त संपादक महोदय भी वहीं बैठे थे। उन्हों ने अपनी ग़लती को महसूस किया और जाना कि इस प्रकार के छोटे-छोटे गीतों की ईजाद एकदम फ़ज़ूल नहीं और साहित्य के ख़ज़ाने को और भी समृद्ध करने वाली है। दूसरे अंक में उन्हों ने इस गीत को दोबारा, संपादकीय नोट में उस की विशेष प्रशंसा करते हुए छापा, और महीनों वह गीत

---

[1] मैं ने नालों को लय में बंद कर दिया है, और यह नई तर्ज़ मेरी अपनी ईजाद है।

लोगों की जबान पर रहा।

'शाहनामा इस्लाम' के लेखक, श्री 'हफ़ीज़' इस रंग में लिखते हैं:—

बंसरी बजाए जा!
कान्ह मुरली वाले नंद के लाले,
बंसरी बजाए जा!
प्रीत में बसी हुई अदाओं[1] से,
गीत में बसी हुई सदाओं[2] से,
ब्रजवासियों के झोंपड़े बसाए जा,
सुनाए जा, सुनाए जा!
कान्ह मुरली वाले नंद के लाले,
बंसरी बजाए जा!
बंसरी की लय नहीं है आग है,
और कोई शय[3] नहीं है आग है,
प्रेम की यह आग चार सू लगाए जा!
सुनाए जा, सुनाए जा!
कान्ह मुरली वाले नंद के लाले,
बंसरी बजाए जा!

इस के बाद गीतों में पंजाब का कवि-समाज बह चला, और बरबस बह चला। इस गीत का प्रभाव अभी तक इतना बाक़ी है कि 'दर्दे ज़िंदगी' और 'हदीस-अदब' के रचयिता हज़रत अहसान 'दानिश' ने हाल ही में लिखा है—

ब्रजवासियों में शाम, बंसरी बजाए जा।
मस्तियां उबल पड़े, मदभरी सदाओं से;
प्रेम-रस बरस पड़े, मनचली हवाओं से;

---

[1] भावभंगियों। [2] आवाज़ों। [3] वस्तु।

मुसकरा रही है शाम, श्याम मुसकराए जा।
ब्रजवासियों में शाम, बंसरी बजाए जा।
गोपियों को सुध नहीं, मस्तियों में जोश है;
रागरग में है ग़र्क़[1], रग मयफ़रोश[2] है।
झूमती है कायनात[3] झूम कर झुमाए जा।
ब्रजवासियों मे शाम, बंसरी बजाए जा।

कृष्ण के गीत

'हफ़ीज़' साहब के इस गीत के बाद गोकुल के इस प्रेमावतार ने, कविता के संसार को चिर जाग्रत रखनेवाले बंसरीवाले ने राग की दुनिया मे अगणित गीतों का निर्माण कराया, और सांप्रदायिकता के गढ पंजाब के उर्दू कवियों से कराया। सच है शायरों का कोई मज़हब नहीं, यदि कोई धर्म है तो प्रेम। आज यदि कवियों के हाथ में विश्व के संचालन का भार और अधिकार हों तो देश और धर्म की तंग दीवारें खड़ी न रह पाएं और दुनिया की चप्पा-चप्पा ज़मीन भाई-भाई के ख़ून से तर न हो।

मौलवी मक़बूल हुसेन अहमदपुरी, जो उर्दू में अपने मीठे-मीठे गानों के कारण प्रसिद्ध हैं, और जिन की कविता पर ब्रजभाषा का रंग ग़ालिब 'हुमायूं' मे लिखते हैं—

बंसीधर महराज हमारे,
हृदय-कुंज में बंसी बजाओ!
सब भक्तों के राजा हो तुम,
प्रेम-गीत से मन को रिझाओ,
तुम सब प्यारों के प्यारे हो,
आओ प्रीत की रीत सिखाओ,

[1]डूब गया। [2]मदिरा वेचने वाला। [3]सृष्टि।

राधा-स्वामी, अंतर्यामी,
परमानंद की राह सुझाओ!
बंसीधर महराज हमारे,
हृदय-कुंज में बंसी बजाओ!

और 'अदबे-लतीफ़' पत्रिका के एक दूसरे गीत में आप विह्वल होकर पुकार उठे हैं—

अब तो श्याम से उलझे नैन!
कोई बुलाए हरि के घर से,
बंसी बजाए प्रेम-नगर से,
दिल रूठा अब दुनिया भर से,
मन की डोर लगी ईश्वर से,
क्या जानूं आई है रैन!
अब तो श्याम से उलझे नैन!

भक्तों की इस भक्ति से परे, जिस का प्रदर्शन ऊपर के गीतों में किया गया है, भगवान् कृष्ण से संबंधित कविता का एक और रूप भी है. इस में जुदाई के गीत लिखे गए हैं। जब कृष्ण गोकुल को छोड कर मथुरा जा बसे तो उन के विरह में गोपियां जिस प्रकार तडपती थीं, उस का पता केवल इस एक पद से लग जाता है, जब ऊधव के आने पर कोई गोपी रो कर, सिहर कर, कह उठती है—

ऊधव ब्रज की दसा निहारो!

और इसी विरह की उदासी में—जब मथुरा से कोई संदेसा नहीं आता और तड़प-तड़प कर सवेरा करने वाली गोपी फिर संध्या के आने पर विह्वल हो उठती है। उस का चित्र 'नश्तर' जालंधरी ने एक गीत में खींचा है—

तड़प-तड़प कर भर हुई थी, ना आया पैग़ाम!
कन्हैया, उजड़ चला मन-ग्राम!
बादल गरजे बिजली चमके, उठीं घटाएं शाम!

कन्हैया, उजड़ चला मन-ग्राम !
आँख में आँसू, कसक हृदय में, फिर आई है शाम !
कन्हैया, उजड़ चला मन-ग्राम !

पंजाबी भाषा के प्रख्यात कवि लाला धनीराम जी ने भी 'आह्वान' शीर्षक एक कविता में श्याम का आवाहन करते हुए लिखा है:—

आजा, शाम बिहारी आजा !
शाम घटा लाइया घनघोरा,
बाग उठा लये सरते मोरा,
हुन ता शामा तेरिया लोडा,
बुझे दिला विच जोत जगाजा !
आजा, शाम बिहारी आजा[1] !

और हिंदी भाषा में तो मीराबाई, सूरदास आदि के गीतों में न जाने कितने आवाहन, कितनी मनुहारें और कितने अभिसार भरे पड़े हैं। उर्दू में भी बीसियों ऐसे गीत लिखे गए हैं जिन में घनघोर घटाओं, पुरशोर हवाओं और उन्मत्त मोरों को देख कर कोई गोपी अपने चितचोर श्याम को पुकार उठती है। उन गीतों में से मैं किसी युवक रामप्रसाद 'नसीम' का एक गीत देता हूं। कितना दर्दभरा और मर्म-स्पर्शी है !

घटाए घिर आईं घन घोर,
हवाए चलती हैं पुर शोर !
मस्त पपीहा,
बेसुध कोयल,
औ' पागल है मोर !

---

[1] ऐ मेरे श्यामबिहारी तू आजा ! ऐ श्याम, घनघोर घटाएं छाई हैं, मोरों ने अपनी झंकार से बागों को सर पर उठा लिया है। ऐ श्याम, अब तो तेरा अभाव ही अखरता है। आजा, और बुझे हुए दिलों में आग लगा दे !

घटाएं घिर आईं घनघोर !
बिजली चमकें,
बादल बरसे ;
आन मिलो चित चोर !
घटाएं घिर आईं घनघोर,
हवाएं चलती हैं पुरशोर !

वसंत के गीत

चलने लगा बिल्लूर का सागर किनारे जू,
पत्थर में जान फूंक दी बादे-बहार ने ।[1]
(कैस जालंधरी)

उस वसंत ऋतु को आते देख कर, जिस के आगमन पर पत्थरों तक में भी जान आ जाती है, उर्दू का एक कवि अपने ग़म को भूल जाना चाहता है और निश्चिन्त हो कर कहता है;--

छलकता हुआ कैफ़[2] का जाम ले कर,
नसीमे बहारी[3] का पैगाम ले कर,
वसंत आ रहा है, वसंत आ रहा है !
जलाएगा अब क्या भला सोज[4] हम को,
भुलाएँगे रंजो मुहन[5] और ग़म को,

---

[1] बिल्लूर (शीशे) का प्याला नदी के किनारे चलने लगा है—अर्थात् वसंत के समीरण से मतवाले होकर मयख्वार नदी के किनारे जाकर मदिरा-पान कर रहे हैं, और मदिरा का पात्र इस हाथ से उस हाथ में चल रहा है । कवि कहता है कि वसंत की बयार में वह जादू है कि पत्थर अर्थात् जड़ पदार्थों में भी इस ने जान फूँक दी है ।

[2] मस्ती । [3] वसंत का समीरण । [4] दर्द । [5] दुख ।

वसत आ रहा है, वसंत आ रहा है !

अपने गीत 'पुरानी बसंत' में अब्दुल असर 'हफ़ीज़' भी इसी भाव से प्रेरित होकर कहते हैं—

उम्र घट गई तो क्या, डोर कट गई तो क्या ?
यह हवाए तुदो-तेज़, रुख़ पलट गई तो क्या ?
आ गई बसत रुत
और इक पतग दे !
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

और पंडित इंद्रजीत शर्मा, जिन्हों ने उर्दू मे अपनी पुस्तक 'नैरंगेफ़ितरत' लिखने के बाद इस रंग को भी अपने गीतों से काफी समृद्ध बनाया है 'वसंत' शीर्षक गीत में लिखते हैं—

आओ सखी री चलें कुज मे छाई है हरियाली,
फूलों की भरमार है ऐसी लदी है डाली-डाली,
गेंदा और गुलाब खड़े हैं लिए हाथ में प्याली,
आँख खोल कर ताक-झाँक में नरगिस है मतवाली !

इसी उल्लास के रंग में एक और भी गीत है। लिखने वाले कोई 'वनवासी' हैं :—

सजनि, आओ वसत मनाए !
प्रीत के ही वे रंग जमाए !
सुदर निर्मल, हो फुलवार !
और जहा हो,
फूलो की महकार !
भवरों की गुजार !
ऐसे में फिर खुशी मनाएं !
सजनि, आओ बसंत मनाए !

परतु दुनिया में सुख ही सुख हो यह बात तो नहीं। सुख की छाया में

दुख है, हर्ष के दामन में व्यथा है, उल्लास की गोद में विषाद है। वसंत में सब ही उल्लास और हर्ष से विभोर हो उठते हों, इस दुखी संसार में यह कहां! 'ग़ालिब' ही कहते हैं :—

उग रहा है दरो दीवार से सब्ज़ा ग़ालिब।
हम बयाबां में हैं और घर में बहार आई है॥

अब्दुल असर 'हफ़ीज़' भी जहां सरसों के फूलने का, सखियों के झूलने का, तरुणों के गीत गाने का, मनचलों के पतंग उड़ाने का ज़िक्र करते हैं, वहां उस युवती को भी नहीं भूलते, जिस ने वसंत के आने पर फूलों के पीले गहने तो पहन लिए हैं परंतु प्रियतम परदेस में हैं इस लिए—

है नगर उदास
नहीं पी के पास
ग़मो रंजो यास[1]
दिल को पड़े हैं सहने

उसी विरहिन के हार्दिक मर्म को पंजाब के तरुण कवि, जनाब 'क़ैस' जिन्हों ने उर्दू ग़ज़लों से काफ़ी अरसे तक पंजाब में सिक्का जमा कर इस रंग में लिखना आरंभ किया है, एक सरल गीत में व्यक्त करते हैं—

फूली फुलवारी-फुलवारी;
फूल-फूल फूले लहराए;
झूम-झूम कर भँवरा गाए;
महकी क्यारी-क्यारी!
फूली फुलवारी-फुलवारी!
सखिया झूलें और झुलाए,
रल-मिल कर सब मंगल गाए,
मैं पापिन दुखियारी!

---

[1] निराशा।

फूलीं फुलवारी-फुलवारी !

और फिर वसंत के दिनों में यौवन-मदमाती दुलहिन किस प्रकार सहर कर मिन्नत से अपनी सखी से कहती है यह 'प्रीतम' ज़ुयाई के गीत में देखिए :—

सजनि, लिख भेजो कोई पाती !
आई बसंत पिया नहीं आए,
किस विध चैन दुखी मन पाए !
आग विरह की जिया जलाए,
बात कही नहीं जाती !
सजनि, लिख भेजो कोई पाती !

और ताना देते हुए लिखो, कि—

वा रसिया भूले विरहन को,
खो बैठी मैं जीवन-धन को,
चैन नहीं है पापी मन को,
नाम जपूं दिन-राती !
सजनि, लिख भेजो कोई पाती !

लिखो कि—

घर को आओ भिखारन के धन !
सदके[1] तुम पर जीवन यौवन,
लौट आओ परदेसी साजन,
फितरत[2] है मदमाती !
सजनि, लिख भेजो कोई पाती !

और फिर वसंत के दिन मालिन को सरसों के फूल लाते देख कर विरहिन दुखित हो जाती है, और चिढ़ कर उस से कहती है—

---

[1] निछावर। [2] प्रकृति।

ऐ मालिन इन फूलों को तू, जा ले जा मेरे सामने से;
यह लहू रुलाती है मुझ को, सूरत मतवाली सरसों की।
यह ज़र्दी इन को लाली है, पीलापन है गहना इन का;
मै जन्म-जली दुख की मारी, लू छीन न लाली सरसों की।
जब आए वसत मेरे मन का, तो लाख बसंत मनाऊं मै;
सरसों के हार पिरोऊं मै, और गीत बसंत के गाऊ मै।

होली के गीत

होली और वसंत का चोली-दामन का-सा साथ है। एक की याद आते ही दूसरे का चित्र आँखों के सम्मुख खिंच जाता है। उन दिनों की स्मृति भी जागृत हो उठती है जब वसंतोत्सव मनाए जाते थे, और होली खेली जाती थी जब भारत ख़ुशहाल था, संपन्न था और देश का कोना-कोना ब्रज बन जाता था; नाचता, गाता और फाग मनाता था। फिर यह कैसे संभव था कि भगवान् कृष्ण और वसंत के गीत तो गाए जाते पर होली को विस्मृति के गर्त मे फेंक दिया जाता?

इस रंग में होली के गीत भी गाए गए हैं, और ख़ूब गाए गए हैं, परंतु उन में उल्लास नही है, हर्ष नही है। जब ब्रज वह ब्रज नही रहा तो होली फिर वह होली कहां रहती! आज कल जो होली खेली जाती है वह होली कहां है. होली का स्वाँग मात्र है। 'वकार' साहब ने इसी वर्तमान दशा का चित्र खींचा है। एक दुखिया अपनी सखी से कहती है:—

होली खेलें किस के सॅग आली?

ब्रज में अब वह बात नहीं है, कान्हा वाली घात नहीं है।
जीवन का वह रंग नहीं है, प्रेम का पहला सग नहीं है॥
नगर-नगर से प्रीत उठी है, डगर-डगर से रीत उठी है।
खेल कहा? इस खेल में चूके, सखिया भूकों बालक भूके॥
कौन से रॅग में चोली रॅगाऊं, कौन से मुॅह से फाग सुनाऊॅ?
नम में नहीं है मन साजन का, राग रग रूप हैं मन का॥

मुरली मूक, टूटा मृदग आली।
होली खेले किस के सग आली?

और फिर मज़दूर की होली मे भावों की तीव्रता देखिए—

कष्ट उठाए औ' दुख झेले,
मैं ने कितने पापड़ वेले,
मेरे रक्त से होली खेले,
सरमाया[1] चालाक!

नगा रह कर सर्दी काटी,
भूका रह कर ख़ाक भी चाटी,
नीचे माटी ऊपर माटी,
मेरी होली ख़ाक!

और अपनी दीन दशा से दुखी होकर अछूत पुकार उठता है:—

होली आई कैसे खेलूं?
मेरा रग है फीका-फीका,
कमबख़्ती बदहाली-सी का,
हाल बुरा है मेरे जी का,
होली आई कैसे खेलूं?
हिंदू कुछ वेरंग हैं मुझ से,
आमादाये-जग[2] हैं मुझ से,
मेरा भी दिल तंग है मुझ से,
होली आई कैसे खेलूं?

लेकिन फिर भी होली के दिन रंग उड़ाया जाता है। स्वॉग ही सही, पर त्योहार निभाया जाता है। सखी उदास है, वह होली न खेले, अछूत और श्रमी दुखी हैं, वे होली न खेलें, और कवि भी इन दुखियों के दुख से

[1] पूँजीवाद। [2] लड़ने को तैयार।

दुखी हो कर होली न खेले, परंतु दूसरे तो खेलेंगे। उस सूरत मे शायर का कर्तव्य केवल नसीहत करना रह जाता है, यदि होली खेलना ही है तो ऐसी होली खेल जिस से—

बिछड़े हैं जो वह मिल जाए,
मन की कलिया फिर खिल जाए,
बैरी देखे औ' हिल जाए,
तेरे घर का मेल !
ऐसी होली खेल !

एकता के गीत

कृष्ण के संबंध में गीत लिखने के बाद मौलाना 'हफ़ीज़' ने एक प्रीत का गीत लिखा, जिस मे सांप्रदायिकता को मिटा कर एकता का राज्य स्थापित करने की अपील उन्हों ने की। गीत लबा है, यहां पूरा नहीं दिया जा सकता फिर भी एक दो बंद देखिए:—

अपने मन में प्रीत बसा ले,
अपने मन में प्रीत !
मन-मदिर मे प्रीत बसा ले, ओ मूरख, ओ भोले-भाले !
दिल की दुनिया कर ले रौशन, अपने घर मे जोत जगा ले !
प्रीत है तेरी रीत पुरानी, भूल गया ओ भारत वाले !
भूल गया ओ भारत वाले,
प्रीत है तेरी रीत !
बसा ले, अपने मन मे प्रीत !
क्रोध-कपट का उतरा डेरा, छाया चारों खूँट अँधेरा,
शैख़ बरहमन दोनों रहज़न[1], एक से बढ कर एक लुटेरा,

[1] डाकू।

ज़ाहरदारों[1] की संगत में, कोई नहीं है संगी तेरा,
कोई नहीं है संगी तेरा,
मन है तेरा मीत!
बसा ले, अपने मन मे प्रीत!
भारत माता है दुखियारी, दुखियारे हैं सब नर-नारी,
तू ही उठा ले सुंदर मुरली, तू ही बन जा श्याम मुरारी,
तू जागे तो दुनिया जागे, जाग उठे सब प्रेम पुजारी,
जाग उठें सब प्रेम पुजारी,
गाए तेरे गीत!
बसा ले, अपने मन में प्रीत!

पंजाब सांप्रदायिकता के लिए बदनाम है और पंजाब के मुसलमान सांप्रदायिकता के कट्टर अनुयायी कहे जाते है। उसी पंजाब के मुसलमान कवि के मुंह से सांप्रदायिकता के विरुद्ध ऐसी बात निकलना क्या गौरव का विषय नहीं है, और क्या यह नवयुग की प्रतिनिधि हिंदी भाषा के प्रभाव का स्पष्ट प्रमाण नही?

दूसरा गीत मैं मौलवी मक़बूल हुसेन अहमदपुरी का देता हूं जिस के एक-एक शब्द से एकता का भाव टपका पड़ता है। गीत का शीर्षक है— 'प्रेमपुजारी'। प्रेम का अर्थ यहां एकता से है—

हम तो प्रेम-पुजारी!
धर्म प्रेम का सब से अच्छा, प्रेम की शोभा सारी;
कोई माने या ना माने, हम तो प्रेम-पुजारी!
आशा है यह अपने मन की, प्रेम कन्हैया आए!
साँस-साँस को अपना कर ले, हिरदय में रम जाए!
विपदा कटे हमारी।
हम तो प्रेम-पुजारी!

---

[1] जो भीतर बाहर से एक नहीं।

गाए भजन बंसी वाले के, ख़्वाजा[1] की जय बोलें;
बड़े पीर[2] की आसा ले कर मन की घुंडी खोलें!
नाव चले मँझधारी।
हम तो प्रेम-पुजारी!

दास बने कमलीवाले के, रामचंद्र के दरबारी!
कहें मगन हों 'अहमदपुरी'[3] सब से हमारी यारी।
सब से लाज हमारी।
हम तो प्रेम-पुजारी!

मौलाना 'वक़ार' ने भी वर्तमान फूट के विरुद्ध आवाज़ उठाई है और कहा है:—

जगत में घर की फूट बुरी!
फूट ने रघुवर घर से निकाले पापन फूट बुरी,
रावन से बलवान पिछाड़े जल गई लंकपुरी,
जगत में घर की फूट बुरी!
फूट पड़ी तो करबल[4] जाकर हुए हुसेन[5] शहीद[6],
मान हो जिन का सारे जग में मारे उन्हें यज़ीद[7],
जगत में घर की फूट बुरी!
फूट ने अपना देश बिगाड़ा खो दी सब की लाज,
बना हुआ है देश अखाड़ा फूट बुरी महराज,
जगत में घर की फूट बुरी!
तन से कपड़ा, पेट से रोटी फूट ने ली हथियाय,
धन बल मान सभी कुछ अपना हम ने दिया गँवाय,
जगत में घर की फूट बुरी!

---

[1] ख़्वाजा मुईयन दीन चिश्ती। [2] ख़्वाजा गौस समदानी जिन को भारत में 'बड़ा पीर' भी कहा जाता है। [3] मौलवी मक़बूल हुसेन अहमदपुर के रहने वाले हैं। [4] करबला। [5] हज़रत हुसेन। [6] बलिदान। [7] हज़रत हुसेन का घातक।

देश के गीत

पंजाबी भाषा मे तो आप को सैकड़ों देश के गीत मिलेंगे, परंतु उर्दू में सब से पहले शायद महाकवि 'इक़बाल' ने ही देश का गीत लिखा। देश के बच्चे तथा युवक उसे लय और तन्मयता से गाते हैं—

सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा।
हम बुलबुले हैं उस की, वह गुलिस्तां[1] हमारा॥
गुरबत[2] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में।
समझो हमें वहां ही, दिल हो जहां हमारा॥
परबत वह सब से ऊंचा, हमसाया[3] आसमां का।
वह संतरी हमारा, वह पासबां[4] हमारा॥
गोदी में खेलती हैं जिस की हज़ारों नदियां।
गुलशन है जिन के दम से रश्के जनां[5] हमारा॥
मजहब नहीं सिखाता आपस मे वैर रखना।
हिंदी हैं, हम वतन है हिंदोस्तां हमारा॥

इसी दौर मे उन्हों ने भारतीय बच्चों का राष्ट्रीय गीत 'मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है' और 'नया शिवाला' लिखे थे। अपने अंतिम दिनों में वह यह मय पीना छोड़ चुके थे, परंतु प्याला आज भी दूसरों के हाथों में घूम रहा है। कवि 'अख्तर' शेरानी गाते हैं—

भारत, सब की आँख का तारा भारत,
भारत है जन्नत का नज़ारा भारत,
सब से अच्छा सब से न्यारा भारत,
दुख-सुख में दुख-सुख का सहारा भारत,
प्यारा-प्यारा देश हमारा भारत!

---

[1]उपवन। [2]निर्वासन। [3]पड़ोसी। [4]रक्षक। [5]वह जिस पर स्वर्ग को भी ईर्ष्या हो।

शाही शानो-शौकत वाली बस्ती,
इज्जत वाली अजमत[1] वाली बस्ती,
सदियों की जिंदा शोहरत[2] वाली बस्ती,
तारीख़ों[3] की आँख का तारा भारत,
प्यारा-प्यारा देश हमारा भारत!
कैसी भीनी-भीनी हवाएं इस की,
कैसी नीली-नीली घटाएं इस की,
कैसी उजली-उजली फिजाएं इस की,
दुनिया में जन्नत का नजारा भारत,
प्यारा-प्यारा देश हमारा भारत!

यह गीत गाने के लिए लिखा गया है। सब मिल कर एक साथ इस पद को गाते हैं—'प्यारा-प्यारा देश हमारा भारत' और फिर दो व्यक्ति मिल कर अन्य पद गाते हैं। फिर सब वही पद गाते हैं।

भारतवर्ष और महात्मा गांधी एक नाम होकर रह गए हैं, जैसे गोकुल और कृष्ण, फिर यह कैसे संभव था कि देश के गीत गाए जाते और महात्मा गांधी का गीत न गाया जाता! इस नए युग में यह गीत भी गाया गया है और इस के गानेवाले हैं प्रसिद्ध मुसलमान राष्ट्रीय कवि 'साग़र' निज़ामी। 'महात्मा गांधी' शीर्षक गीत में वे लिखते हैं—

कैसा सत हमारा
गांधी
कैसा सत हमारा!
दुनिया गो थी बैरी उस की दुश्मन था जग सारा,
आख़िर में जब देखा साधू वह जीता जग हारा,
कैसा सत हमारा

---

[1]प्रतिष्ठा। [2]ख्याति। [3]इतिहासों।

गांधी
कैसा संत हमारा !
सच्चाई के नूर[1] से इस के मन में है उजियारा,
बातिन[2] में शक्ती ही शक्ती ज़ाहर[3] में बेचारा,
कैसा संत हमारा
गांधी
कैसा संत हमारा !
बूढ़ा है या नए जन्म में धर्मी का मतवारा,
मोहन नाम सही पर साधू रूप वही है सारा,
कैसा संत हमारा
गांधी
कैसा संत हमारा !
भारत के आकाश पै है वह एक चमकता तारा,
सचमुच ज्ञानी सचमुच मोहन सचमुच प्यारा-प्यारा,
कैसा संत हमारा
गांधी
कैसा संत हमारा !

यह गीत 'कोरस' में गाने वाले हैं। इन की लय और तान भी वैसी ही है। इन को पढ़ते समय प्रतीत भी ऐसा ही होता है जैसे देश-प्रेमियों का जलूस-स्वदेश प्रेम से विभोर होकर यह गीत गाते-गाते जा रहा है।

वैसे तो देश और उस की विभिन्न समस्याओं के संबंध में इतने गीत लिखे गए हैं कि केवल देश के गीतों से ही एक पुस्तक तैयार हो सकती है। 'हुमायूं' के १६२८ के वार्षिक अंक में श्री हामिद अल्लाह 'अफ़सर' मेरठी का एक सुंदर गीत 'भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से न्यारा

[1]ज्योति। [2]अंदर से। [3]प्रकट में।

है' उद्धृत हुआ है, जो आगामी पृष्ठों में दिया गया है यहां मैं मौलवी मुहम्मद फ़ैज़ लुधियानवी, मुंशी फ़ाज़िल के गीत का एक बंद देना चाहता हूं। सोए हुए देश-वासियों को ग़फ़लत की नींद से जगाने के लिए ही यह गीत लिखा गया है—

> आन पड़ी है मुश्किल भारी,
> लेकिन तुम पर नींद है तारी[1],
> जाग उठी है ख़लक़त[2] सारी,
> सुन कर बेदारी[3] का राग,
> ऐ हिंदी, तू अब तो जाग !

माया के गीत

अतीत काल से संतजन माया को कोसते आए हैं। कबीर ने लिखा है—

> माया महा ठगनी हम जानी।
> निरगुन फॉस लिए कर डोले, बोले मधुरी बानी।
> केशव के कमला ह्वै बैठी, शिव के भवन भवानी।

माया के विषय में इस युग के प्रायः सभी कवियों ने गीत लिखे हैं। मैं यहां एक-दो गीत दूँगा। माया के संबंध में अधिक लोकप्रिय होनेवाला गीत जो बहुत-सी पत्र-पत्रिकाओं में उद्धृत होने के बाद जन-साधारण की ज़बान पर चढ़ गया है वह कवि मनोहरलाल 'राहत' का गीत है। यह सब से पहले सुदर्शन जी की मासिक पत्रिका 'चंदन' में निकला था। कवि लिखता है:—

> बाबा, सुन लो मेरा गीत !
> दुखिया मन है दुखिया काया,
> छूट गया है अपना पराया,
> दुनिया क्या है ? माया, माया !

---

[1]छाई। [2]सृष्टि। [3]जागरण।

माया के सब मीत हैं लेकिन,
माया किस की मीत?
बाबा, सुन लो मेरा गीत!

माया वाले लोभ के बंदे,
तन के उजले मन के गंदे,
झूठी दुनिया झूठे धंदे,
कोई नहीं है संगी-साथी,
सब की झूठी प्रीत!
बाबा, सुन लो मेरा गीत!

माया ही से प्यार है सारा,
झूठा यह संसार है सारा,
खोटा कारोबार है सारा,
रीत का कोई खरा नहीं है,
सब की खोटी रीत!
बाबा, सुन लो मेरा गीत!

इसी सिलसिले में स्वर्गीय अब्दुल रहमान बिजनौरी का एक गीत 'जोगी की सदा' भी काफ़ी मर्मस्पर्शी है। मैं इस के दो बंद नीचे देता हूं—

यह निथरी-निथरी आँखें,
यह लंबी-लंबी पलकें,
यह तीखी-तीखी चितवन,
यह सुंदर-सुंदर दर्शन,
माया है, सब माया है!

यह गोरे-गोरे गाल,
यह लंबे-लंबे बाल,
यह प्यारी-प्यारी गरदन,
यह उभरा-उभरा यौवन,

माया है, सब माया है !

माया की मदिरा पीकर गहरी नींद में सोने वालों को जगाने के लिए श्री अमरचंद 'क़ैस' ने भी एक सुंदर गीत लिखा है—

उठ निद्रा से जाग ए प्यारे, उठ आलस का त्याग ऐ प्यारे !
तेरे जागे जाग उठेंगे, तेरे सोए भाग, ऐ प्यारे !
इस धन से क्यों खेल रहा है, यह धन तो है नाग, ऐ प्यारे !
मन चंचल है, थामे रखना, चंचल मन की बाग, ऐ प्यारे !
आशा तृष्णा जाल सुनहरी, इन दोनों से भाग, ऐ प्यारे !
माया एक मनोहर छल है, इस माया को त्याग, ऐ प्यारे !

'वक़ार' साहब का यह गीत भी काफ़ी शिक्षाप्रद है—

रंग रूप रस सब माया है !
इस माया की चाल से बचना, इस माया के जाल से बचना,
इस ने बहुतों का मन भरमाया है।
रंग-रूप-रस सब माया है !
राग की लहरें जाल की तारें, मन-पंछी उलझा कर मारें,
इस में फँस कर मन पछताया है !
रंग-रूप रस सब माया है !
रंग है क्या, इक नीझ[1] का धोका, रूप है क्या, इक रीझ का धोका;
रस क्या ? ढलती फिरती छाया है !

पंडित इंद्रजीत शर्मा के एक-दो चौपदे भी देखिए:—

माया आनी-जानी है,
माया बहता पानी है,
माया रूप कहानी है,
त्याग रे मूरख, माया त्याग !

---

[1] दृष्टि—यह शब्द पंजाबी भाषा का है।

माया को तू मीत न जान,
इस बैरन की प्रीत न जान,
सीधी इस की रीत न जान,
त्याग रे मूरख, माया त्याग !

जान पाप का मूल इसे,
जान दुखों का भूल[1] इसे,
याद न कर अब भूल इसे,
त्याग रे मूरख, माया त्याग !..

संसार

कवियों ने संसार को कई पहलुओं से देखा है, और ऐसा ज्ञात होता है कि उन के हाथ भ्रांति के सिवा कुछ नहीं आया। पंजाब के प्रसिद्ध सूफ़ी कवि साईं बुल्हेसाह ने इसे भीतर से देखने का उपदेश दिया है:—

इस दुनिया विच अँधेरा है,
इह तिलकन बाज़ी वेहड़ा है,
वड़ अंदर देखो केहड़ा है,
बाहर खफ़तन पई ढुंढेंदीए[2] !

वे सूफ़ी थे फ़कीर थे, कदाचित् उन्हों ने ऐसा किया हो, परंतु जन-साधारण तो ऐसा नहीं कर सकते और जन-साधारण के दुखों से दुखी कवि इस के भीतरी रूप को देख कर कब शांत हो कर संतोष से बैठ सकते हैं? अबुल असर 'हफ़ीज़' संसार को दुखी देखते हैं और एक गीत में कहते हैं:—

---

[1]चोला। [2]साईं बुल्हेशाह कहते हैं कि इस दुनिया में चहुँदिशि अँधेरा ही अँधेरा है, यह तो एक फिसलते आँगन की नाईं है। जो आता है फिसल जाता है। ऐ बावरी, तू इसे भीतर से देख। पागल, बाहर ही क्यों सर पटक रही है?

दुखिया सब संसार,
प्यारे, दुखिया सब ससार !
मोह का दरिया, लोभ की नैया, कामी खेवनहार,
मौज के बल पर चल निकले थे, आन फँसे मँझधार,
प्यारे, दुखिया सब संसार !

और इन दुनिया वालों की दुनियादारी से भी कवि दुखी है:—

तन के उजले, मन के मैले, धन की धुन असवार,
ऊपर - ऊपर राह बतावे, भीतर से बटमार,
प्यारे, दुखिया सब ससार !

'अहसान' साहब ने भी 'संसार' पर एक गीत लिखा है और इसे सपना कहा है:—

सीस नवा कर झरना रोए, छोड के उत्तम देस।
उस की चिंता राम ही जाने, जिस का पी परदेस ॥
सावन औ फिर काली बदली, बूँदनियों के तार।
रीत जगत की प्रीत से खाली, सपना है ससार ॥

इंद्रजीत शर्मा इसे 'झूठ' समझते हैं। समझते है संसार में सत्य कुछ नहीं, नित्य कुछ नहीं, सब झूठ है। इस लिए कहते हैं: -

झूठी है यह दुनियादारी, झूठा है व्योहार,
प्रेम है झूठा, प्रीत है झूठी, झूठा है सब प्यार,
प्यारे झूठा सब ससार !
रिश्ते-नाते झूठ के बधन, हैं जी का जजाल,
झूठ का चारो ओर जगत में फैल रहा है जाल,
प्यारे झूठा सब ससार !
झूठे ज्ञानी, झूठी बानी, झूठा दीन उपदेश,
झूठी रीत जगत की बाबा, देश हो चाहे बिदेश,
प्यारे झूठा सब ससार !

झूठी नैया, झूठा खेवट, झूठे है पतवार,
भवसागर मे आन फँसे हैं, कैसे हो उद्धार?
प्यारे झूठा सब ससार!

पंडित बिहारीलाल 'साबिर' को जग मे प्रेम दिखाई देता है और वे लिखते हैं:—

यह जग प्रेम-पुजारी है बाबा!
विरहन का मन प्रेम का मंदिर,
प्रियतम इस मंदिर के अंदर,
ईश्वर प्रेम, प्रेम है ईश्वर,
इस की गत न्यारी है बाबा!
यह जग प्रेम-पुजारी है बाबा!

और इतनी भिन्न बातों को देख कर कोई क्या निर्णय कर सके? वास्तव मे न संसार सपना है, न झूठ है, न प्रेम-पुजारी है, कुछ है तो अपने मन का प्रतिबिंब है। जैसा किसी का मन होता है वैसा ही उसे संसार लगता है।

जीवन

जीवन क्या, जग में झाँकी है!
झंकार कौन वीणा की है?
है चमक मेघ की, बिजली की,
यह फुदकन है किस तितली की?
डोरी यह किस के है कर में,
जो उडा रहा दुनिया भर मे?
यह उलझन कैसी बाँकी है!

श्री उदयशंकर भट्ट ने अपनी 'जीवन' शीर्षक कविता में कुछ ऐसे ही प्रश्न किए हैं। हां, यह उलझन ही है।

जीवन माया है अथवा माया ही जीवन है, इस का कोई पता नहीं

चलता। वास्तव में माया, संसार और जीवन तीनों ही रहस्य हैं। जहां कवि माया और संसार की गुत्थी को नहीं सुलझा सके, वहां जीवन की गुत्थी उन से क्या सुलझती!

उर्दू के इस दौर में जीवन पर भी गीत लिखे गए हैं। मैं एक गीत देता हूं, जिस मे जीवन, संसार, और माया तीनों पर ही प्रकाश डाला गया है। कवि लिखता है:—

जीवन दुख की पोट है प्यारे,
जीवन दुख की पोट!
जीवन का अभिमान भी झूठा, ख्याति और सम्मान भी झूठा,
झूठी इस की चोट ऐ प्यारे, झूठी इस की चोट!
जीवन दुख की पोट है प्यारे,
जीवन दुख की पोट!
जन्म पै मूरख, क्यों मुसकाए? मरन पै क्यों कोई नीर बहाए?
काल के मन में खोट ऐ प्यारे, काल के मन में खोट!
जीवन दुख की पोट है प्यारे,
जीवन दुख की पोट!
झूठा है ससार का सपना, झूठा झूठे प्यार का सपना,
माया की यह ओट है प्यारे, माया की यह ओट!
जीवन दुख की पोट है प्यारे,
जीवन दुख की पोट!

'वक़ार' साहब ने लिखा है—

मोह चचल की नदिया पर है, माया-रूपी घाट,
आशा नैया, काम खेवैया, लोभ हैं इस के पाट,
जीवन है इक रैन अँधेरी, साँस दुखों की बाट!
सम्मुख कजली-बन है भयानक, चिंता मन का रोग,
टेढ़ा मारग, लगी हुई है बाघ के मुँह को चाट,

'जीवन है इक रैन अँधेरी, साँस दुखों की बाट!

रहस्यवादी गीत

हिंदी मे आजकल छायावाद की बडी धूम है। रहस्यवाद का ही दूसरा नाम छायावाद है। हिंदी का सब से पहला रहस्यवादी कवि कबीर हुआ है। आजकल तो हिंदी में रहस्यवाद की बडी सुंदर कविता हो रही है। उर्दू साहित्य भी हिंदी की इस धारा से प्रभावित हुआ है। मौलाना 'वक़ार' ने 'उस पार' शीर्षक कविता मे लिखा है—

मुझ पै चला है मतर किस का? धरती किस की अबर किस का?
सूरज किस का सागर किस का? कौन बसत उस पार?
सजनी, कौन बसत उस पार?
नीला अबर सुदर तारे, यह सागर वे मोती सारे,
चाँद की नैया धारे-धारे, किरणों की पतवार!
सजनी, कौन बसत उस पार?
बन के ऊँचे वृक्ष घनेरे, चीते शेर औ' लाल बघेरे,
फिरते हैं दौडे शाम-सबेरे, मोरो की झकार!
सजनी, कौन बसत उस पार?

हिंदी के छायावादी कवियों के सम्मुख यह चीज़ कदाचित् बहुत फीकी जान पडेगी, किंतु इस से यह तो ज्ञात हो ही जायगा कि हिंदी भाषा ही नहीं, उस के भावों का भी उर्दू की इस नई धारा पर प्रभाव पड़ा है।

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' अपने काव्य 'अनंत के पथ पर' मे ऐसी ही अनंत के पथ पर चलनेवाली का चित्र खींचते हैं जो सृष्टि और इस की अद्भुत चीज़ों को देख कर आश्चर्यान्वित रह जाती है और उस के हृदय मे ऐसे ही प्रश्न उठते हैं। वह भी पूछती है:—

इस रत्न-जटित अबर को, किस ने वसुधा पर छाया?
करुणा की किरणे चमका, क्यों अपना आप छिपाया?

नभ के परदे के पीछे, करता है कौन इशारे ?
सहसा किस ने जीवन के, खोले हैं बंधन सारे ?

इसी 'किस' की तलाश में वह अपनी कुटिया से चल देती है। 'वक़ार' साहब लिखते हैं—

पीत का किस की रोग लिया है ? ऐश को छोड़ा सोग लिया है,
याद में किस की जोग लिया है ? त्याग दिया घर-बार,
सजनी, कौन बसत उस पार ?
जोत जगी है किस की मन में ? बीत रही है किस की लगन में ?
ढूँढ रही हूं किस को बन में ? किस के हूं बलिहार ?
सजनी, कौन बसत उस पार ?
ज्ञान का सागर लहरें मारे, ध्यान की नैया धारे-धारे,
साँस हैं नैया खेवन हारे, कठिन बड़ी मँझधार !
सजनी, कौन बसत उस पार ?

'प्रेमी' जी की 'अनंत के पथ पर' चल निकलने वाली भी ऐसा ही कहती है: —

किस का अभाव मानस में, सहसा शशि-सा आ चमका ?
है क्या रहस्य, बतला दे, कोई इस अंतर-तम का ?
इन सरल-तरल नयनों में, किस की उज्ज्वल छवि छाई ?
किस ने मेरे प्राणों में, अपनी तस्वीर बनाई ?
अब पथ भूली उस सुख का, पाया यह कंटक-कानन,
किस ओर बहा जाता है, अब मेरा आकुल जीवन ?

इन दोनों कविताओं को देने से मेरा तात्पर्य कदापि यह दर्शाना नहीं कि 'वक़ार' साहब ने प्रेमी जी की कविता को देख कर अपनी कविता लिखी है। कहना केवल यह है कि उर्दू में भी, हिंदी जैसी, हिंदी के भावों से ओत-प्रोत कविताएं लिखी जा रही हैं।

यों तो उर्दू के कवियों पर रहस्यवाद का प्रभाव ख़ूब रहा है।

नक़्श फ़रियादी है किस की शोख़िए तहरीर का ।
काग़ज़ी है पैरहन हर पैकरे तस्वीर का ॥

'ग़ालिब' का यह शेर रहस्यवादी कविता का उत्तम उदाहरण है । उर्दू ग़ज़लों में बीसियों ऐसे शेर मिल जायँगे और प्राचीन ढंग की ग़ज़लें कहनेवाले आजकल के उर्दू कवियों में भी यह रहस्यवाद किसी न किसी अंश में पाया जाता है । 'बर्क़' का एक सरल पर रहस्यवादी शेर है:—

सौ बार यहाँ हम आए भी, यह बात न लेकिन जान सके :
यह आना-जाना कैसा है, क्यों आते-जाते रहते हैं ?

परन्तु इस विषय के जो गीत उर्दू के कवि आजकल लिख रहे हैं उन में हिंदी से जो भाव तथा भाषा-साम्य है, मेरा अभिप्राय उस की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करने से ही है ।

विरहिन के गीत

संसार का साहित्य वियोग की करुण भावनाओं से भरा हुआ है । श्रीयुत पंत लिखते हैं :—

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान ।

उर्दू में भी हिज्रो-फ़िराक़ सदैव से कवियों के आकुल मन में उथल-पुथल मचाते रहे हैं। वियोग चाहे किसी का हो हृदय को विकल कर देता है, रुला देता है । कौन जाने इस संसार में दिन-रात वियोग की अग्नि में कितने हृदय जल कर भस्म हो रहे हैं ! भावुक पंजाब के प्राणों पर तो वियोग का साम्राज्य ही है । अपने माता-पिता की जुदाई के ख़याल से ही पंजाबी बहन सिहर उठती है और जी में रो कर गा उठती है—

साडा चिड़ियाँ दा चंबा वे, बाबल असाँ उड़ जाना ।[1]

---

[1] हे पिता, हम सहेलियों का गुट तो चिड़ियों के चंबे (झुंड) जैसा है, हमें तो एक न एक दिन विभिन्न दिशाओं में उड़ जाना है ।

और फिर—

खेडन दे दिन चार नी माए बरजत नाहीं।[1]

पंजाबी युवती .फ़ुरक़त की मारी बैठी है। कौवा मुंडेर पर आकर कॉय-कॉय करता है परंतु निराशा इस हद तक बढ गई है कि कौवे के बोलने से भी आशा नहीं बँधती। जल कर उसे कहती है—

तेरी काँ काँ कागा अड़िया, मेरे जी नू साड़े।
ओह न आए, अखा पक गइया, बीते कई दिहाड़े।
चगा है जल जल बुझ जाइये, मुक्कन सगर पुआड़े।
दोस भला की तेरा कागा, कर्म असाड़े माड़े।[2]

उर्दू कविता में विरहिन के गीत हिंदी के प्रभाव के बाद ही लिखे गए हैं। उर्दू का हिज्रो-फ़िराक़ प्रेमी को ही तड़पाता रहा, प्रेमिका को नहीं, परंतु जहां हिंदी ने अन्य बातों में पंजाब की उर्दू कविता पर प्रभाव डाला है, वहां हिंदी की कविता के करुण स्रोत ने भी उर्दू शायरों को मोहित किया है।

विरहिन के गीतों का आरंभ कैसे हुआ, इस विषय पर मैं कुछ नहीं कह सकता। इतना ही कहना काफ़ी है कि इस शीर्षक से अनगिनत गीत

---

[1] चार दिन ही तो खेलने के हैं ऐ मा, मुझे मत रोक !—इस एक ही वाक्य में माता-पिता के जुदाई के ख़याल और सुसराल के व्यस्त जीवन की झलक और उस से उत्पन्न होनेवाली कैसी हसरत मौजूद है, इस का पाठक भली भाँति अनुमान कर सकते हैं।

[2] ऐ काग, तेरी काँय-काँय मेरे जी को जलाती है। प्रतीक्षा करते-करते मेरी आँखें पक गईं, दिन पर दिन बीत गए, पर वे नहीं आए (तेरे बोलने से आशा बँधे तो कैसे बँधे ?) विरह की आग में तिल-तिल जलने से तो अच्छा है कि शीघ्र ही जल कर सदैव के लिए बुझ जायँ। (फिर दूसरे क्षण जब निराशा चरम सीमा तक पहुँच जाती है तो, विरहिन कहती है) 'ऐ कौवे भला इस में तेरा क्या दोष है, हमारे ही भाग्य मद हैं।'

लिखे गए हैं। मुझे याद है- आठ-नौ साल पहले जब पंजाब मे ऐसे गीत नजर न आते थे, मै ने स्वयं एक गीत 'विरहिन का बसंत' शीर्षक से लिखा था, जो गवर्नमेंट कालिज होशियारपूर के हिंदी कवि-सम्मेलन मे पढा गया था। श्री 'हफीज' होशियारपुरी[1] ने भी, जो उस समय उस कालेज के छात्र थे, एक गीत लिखा था और मुसलमान होते हुए भी हिंदी में अच्छा गीत लिखने पर उन की विशेष प्रशंसा भी हुई थी।

मौलाना. 'वक़ार.' पडित बिहारी लाल, पंडित इंद्रजीत शर्मा, श्री 'कैस' और दूसरों ने विरह भावनाओं को प्रदर्शित करने वाले बीसियों गीत लिखे हैं। हाल ही में उर्दू के प्रख्यात कवि मौलाना 'फाख़िर हरियानवी, जिन्हों ने 'वहां ले चल मेरा चरखा, जहां चलते है हल तेरे.' 'ज़फ़रवाल' आदि नज़्मे लिख कर उर्दू मे काफी ख्याति प्राप्त की है, 'विरहिन का गीत' शीर्षक से एक गीत लिखा है: —

घर है सूना रात उदास ?
दीरघ दिन अँधियारी राते, कैसे गुजरेगी बरसाते !
झूठी थीं सब उन की बाते, रहता है अब यह विश्वास !
घर है सूना रात उदास !
मै दुखियारी पीत की मारी, पड़ गई मुझ पर विपता भारी,
मन में सुलग रही अँगियारी, कौन बुझाए दिल की प्यास ?
घर है सूना रात उदास !
छाई हैं घनघोर घटाए, चलती हैं पुरशोर हवाए,
मन के मीत अगर आ जाए, तो पूरी हो मन की आस।
घर है सूना रात उदास !

इसी संबंध में श्री 'हफ़ीज' होशयारपुरी का एक गीत देने का लोभ मै संवरण नहीं कर सकता। कोई विरह की मारी बैठी है, प्रतीक्षा करते

[1] 'हफीज़' जालधरी और 'हफ़ीज़ होशियारपुरी, एम० ए०, दो भिन्न कवि हैं।

करते संध्या हो जाती है, परंतु उस का प्रियतम नहीं आता, जल कर कह उठती है:—

आग लगे इस मन को आग!
लो फिर रात विरह की आई, चारो ओर उदासी छाई,
जान मेरी तन मे घबराई, अपनी क़िस्मत अपने भाग।
आग लगे इस मन को आग!
काली और बरसती रैन, उस बिन नींद को तरसें नैन,
जिस के साथ गया सुख चैन, उस की याद कहे, अब जाग।
आग लगे इस मन मे आग!
जिस दिन से वह पास नहीं है, कोई ख़ुशी भी रास नहीं है,
जीने तक की आस नहीं है, जान को है अब तन से लाग!
आग लगे इस मन मे आग!
कौन जिए औ' किस के सहारे, मीठे-मीठे बोल सिधारे,
गीत कहा वे प्यारे-प्यारे? अब न तान न अब वह राग!
आग लगे इस मन मे आग!

और फिर जल कर ताना देते हुए कहती है:—

दरस दिखा कर जा छिप जाए, कौन ऐसे से प्रीत लगाए?
क्यों अपनी कोइ दसा सुनाए, छोड़ मुहब्बत का खटराग?
आग लगे इस मन मे आग!

श्री अमरचंद 'क़ैस' का गीत 'पी दर्शन की प्यास' भी काफ़ी लोकप्रिय हुआ है। लिखते हैं:

फुलवाड़ी में फूल हैं फूले,
सखियों ने डाले हैं झूले,
वह अपनी दासी को भूले,
होकर किस के दास?
लगी है पी-दर्शन की प्यास।

सुख को मतलव वेचैनों से ?
काम है सारा दिन वैनों से ,
कितने दूर हैं वह नैनों से—
जो थे हर दम पास ?
लगी है पी-दर्शन की प्यास !
वरसों वीते आँख लगाए ,
इक जा पर सौ-सौ दुख पाए ,
ये दिन आए उन ना आए—
टूट चली है आस !
लगी है पी-दर्शन की प्यास !

मैं मानता हूं कि इन गीतों में 'सखी, वे मुझ से कह कर जाते', 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल', 'तुम दुख बन इस पथ से आना', और ऐसे ही दूसरे उच्च कोटि के हिंदी गीतों की उड़ान नहीं, परंतु इतना मैं कहूँगा कि इन सब में दिल है, दिल की कसक और दिल के उद्गार भी हैं और भाषा के अत्यंत सरल होने के कारण यह दिल मे घर भी कम नहीं करते।

स्मृति के गीत

स्मृति के गीत भी वास्तव मे विरह के गीत ही है, परंतु गत शीर्षक मे मै ने उन गीतों में से कुछ दिए है जो 'विरहिन' के नाम से लिखे गए हैं और यह शीर्षक तनिक व्यापक है। इस वात के अतिरिक्त मै वर्तमान शीर्षक में यह भी दिखाना चाहता हूं कि किस भाँति विभिन्न कवियों ने एक ही भाव से प्रेरित होकर गीत लिखे है। कविता वास्तव में भावों का चित्र होती है और चूँकि इस संसार में एक-जैसी परस्थितियों में फँसे हुए मनुष्यों के दिलों में एक-जैसे उद्गार उठ सकते हैं, इस लिए उन भावों को जिस भाषा का चोला पहनाया जाता है, वह भी एक-जैसी हो सकती है। अच्छी कविता है भी वही जिसे पढ कर उस परिस्थिति से दो-चार होनेवाले उस में अपने ही हृदय की प्रतिच्छाया देखे।

दिलवाले लोगों के जीवन में स्मृति भी काफ़ी दर्द पैदा किया करती है। श्रीमती महादेवी वर्मा की एक कविता में विरहिन का सारा जीवन बरसात की रात बन कर रह गया है, क्योंकि जीवन-आकाश पर कोई सुधि बन कर, स्मृति बन कर छा रहा है। लिखा है :--

बाहर घन तम, भीतर दुख तम, नभ में विद्युत् तुझ में प्रियतम ,
जीवन पावस रात बनाने, सुधि बन छाया कौन ?

हां तो वर्षा ऋतु मे, वर्षा ही क्यों, शीत, ग्रीष्म, पतझड़, वसंत, सब ऋतुओं में ही कौन जाने किस की सुधि किस के दिल को तड़पाती रहती है।

पंजाबी भाषा के कवि नंदकिशोर 'तेरी याद' नामक कविता मे लिखते हैं:—

जिस वेले पत्तियां दे पक्खे, हस हस पौन हिलादी ए ,
जिस दम कुदरत धरती उत्ते पल्ले नवे विछादी ए ,
फुला दे जद मुख्खा उत्ते ओस आँसू टपकादी ए ,
अग्ग मुहब्बत दी दिल जिस दम बुलबुल दा गरमादी ए ,
तेरी याद दिला दे जानी क्यो उस वेले आदी ए ?[1]

श्री अख़्तर हुसेन रायपुरी के भाई श्री मुज़फ़्फ़र हुसेन 'शमीम' ने, जो अपनी कविताओं मे सरल हिंदी शब्द भर कर उन्हें संगीतमय बना देते है, एक गीत लिखा है। वह ऐसे ही भावों से परिपूर्ण है।

जब पिछले पहर को कोयल उठ कर प्रीत के गीत सुनाती है ,
जब शब के महल से सुबह की दुल्हन आखे मलते आती है ,
जब सर्द हवा हर पगडंडी पर लहराती बल खाती है ,

---

[1] जिस समय बयार हँस हँस कर पत्तों के पखों को हिलाती हैं, जिस समय प्रकृति धरती पर नए पल्लव बिछा देती है, जब फूलों के मुखों पर ओस अपने आँसू टपकाती है, और जब बुलबुल के हृदय में प्रेम की आग धधक उठती है; ऐ हृदयों के प्यारे उस समय मुझे तेरी स्मृति क्यों नूतन बन बन आती है ?

जब बात सबा से करने मे एक-एक कली शरमाती है,
जब पहली किरण सूरज की उठ कर सैरे चमन को जाती है,
आकाश से ले पाताल तलक इक मस्ती सी छा जाती है,
तब क्या जाने कमबख़्त सबा चुपके से क्या कह जाती है!
फिर दर्द-सा दिल में होता है, फिर याद तुम्हारी आती है!

पंजाब के तरुण उर्दू कवि रणवीर सिंह 'अमर' ने भी अपनी एक कविता में बिल्कुल एक ऐसा ही चित्र खींचा है। लिखते हैं:—

जब नीले-नीले अंबर पर घनघोर घटा छा जाती है,
औ' सावन की मख़्मूर[1] हवा जब रिंदों[2] को बहकाती है,
ख़ामोश अँधेरी रातों में, जब बिजली दिल दहलाती है,
औ' काली-काली बदली जब नयनों से नीर बहाती है,
उस वक़्त मेरे प्रीतम मुझ पर मदहोशी-सी छा जाती है,
इक दर्द-सा दिल मे उठता है और याद तुम्हारी आती है।

श्री फ़िदा पटियालवी का गीत ('तब याद सताती है तेरी') ऐसे ही भावों से ओतप्रोत है।

प्रेम के गीत

प्रेम के बिना दुनिया में कुछ नहीं। यही स्वर्ग है; नरक भी यही है। कहीं यह अपनी प्रशंसनीय सूरत में मौजूद है और कहीं अपने निंदनीय रूप मे।

एक आत्मा एक बार एक फ़रिश्ते से दो-चार हुई और उस से पूछने लगी—'स्वर्ग का सब से निकटवर्ती मार्ग कौन-सा है, ज्ञान का या प्रेम का?' फ़रिश्ते ने आश्चर्य से आत्मा को ताकते हुए कहा, 'क्या ये दो पृथक् मार्ग हैं?'

विख्यात कवि हज़रत 'आज़र' जालंधरी ने भी लिखा है:—

---

[1] मस्त। [2] मतवालों।

जो दिल कि मुहब्बत का गुनहगार नहीं,
जो दिल कि मुहब्बत का सज़ावार नहीं,
पत्थर है उसे दिल न कहो ऐ 'आज़र,'
जिस दिल को मुहब्बत से सरोकार नहीं।

फिर आप जानते हैं कवि और सब कुछ होते होंगे, पत्थर-दिल नहीं होते और वह भी पंजाब के कवि—जहां प्रेम का शाश्वत दरिया 'हीर-रॉझा,' 'सस्सी-पुन्नू', 'सोहनी-महींवाल', जैसे प्रेमियों के अमर अफ़सानों की सूरत में बहता है; जहां रिंद और सूफ़ी एक ही समय इस चश्मे से स्फूर्ति प्राप्त करते हैं! अपनी प्रेमिका की संग-दिली को देख कर पंजाब का सच्चा प्रेमी पुकार उठता है:—

हीरे नी सुन मेरीये हीरे आसा वाग राझन मर वहना।[1]

और पंजाब के देहात की प्रेमिका साफ़ शब्दों में कह देती है:—

रॉझा जोगी ते मै जोगियानी, उस दी खातिर भरसा पानी।

तो फिर यह कैसे संभव था कि पंजाब मे कविता का कोई युग आता और उस में प्रेम के गीत न लिखे जाते? इस युग के प्र`क कवि ने प्रेम के गीत लिखे हैं। मै इन में से केवल दो यहां देना चाहता हूं। एक उर्दू के प्रसिद्ध कवि और लेखक डाक्टर महम्मद दीन 'तासीर', प्रिंसिपल, इस्लामिया कालेज, अमृतसर का और दूसरा फ़ार्मन क्रिश्चियन कालेज के किसी मुसलमान छात्र सिराजुद्दीन 'ज़फ़र' का। पहला गीत इस प्रकार है:—

तुम भी प्रीत करो तो जानो, हम दुखियों की फरियादों को।
दिल से टीस उठे तो दिल से, तुम भूलो सब बेदादों[2] को!
प्रीत करो तो जानो!
प्रीत करो अपने जैसे से, सुदर सूरत पत्थर दिल से,

---

[1]ऐ मेरी हीर जैसी प्रेमिका, सुन मैं तो तेरे कारण रॉझे की भाँति मर जाऊँगा—पंजाब का हर प्रेमी राँझा है, और हर प्रेमिका हीर। [2]अत्याचार

दर दर सर टकराओ जैसे, दीवानी मौजे साहिल से !
प्रीत करो तो जानो !
प्रीत के शोले[1] ऐसे लपकें, जल-बुझ जाएं सब गुन-औगुन !
ना कोई अपना ना कोई दूजा, ना कोई वैरी ना कोई साजन !
प्रीत करो तो जानो !

'ज़फ़र' का गीत है:—

रोग लगा बैठा — कर के तुझ से प्रीत !
मेरी ठंडी साँसे आग,
मेरी आहें दीपक राग,
मेरे नग़मे दुख के गीत,
रोग लगा बैठा —— कर के तुझ से प्रीत !
मेरी आँखे वर्षा रैन,
मेरा हर आँसू बेचैन,
रोते रहना मेरी रीत !
रोग लगा बैठा —— कर के तुझ से प्रीत !

प्रकृति के गीत

मैं वसंत के संबंध में लिखे गए गीतों का पहले उल्लेख कर चुका हूं। वे भी एक तरह प्रकृति से ही संबंध रखते हैं। परंतु सर्दी-गर्मी, बाग़-बाटिकाओं, पहाड़ों और वनों के संबंध मे भी इस दौर में गीत लिखे गए हैं।

मौलाना मकबूल अहमद ने सर्दी को लेकर एक गीत लिखा है। मौलाना ने सर्दी के साथ ही एक देहाती कुटुंब का जो वर्णन किया है वह सुंदर तो है ही पर साथ ही यथार्थ भी कितना है, इस का पाठक स्वयं अनुमान कर सकेंगे। लिखते हैं:—

आया है जाड़े का मौसम, सन सन चले हवा पिछवाई।

---

[1] ज्वालाए।

शाम हुई सूरज है पीला, धूप में हलकी ज़रदी छाई।
गिरे कबूतर, कौवे लौटे, कॉव-कॉव कर धूम मचाई।
आया है जाड़े का मौसम, सन सन चले हवा पिछवाई॥
मातादीन, बिहारी, बीरा, हैं ये तीनों भाई-भाई।
नम्बरदार के खेत मे मिल के, करते हैं तीनों नरवाई।
आया है जाड़े का मौसम, सन सन चले हवा पिछवाई॥
घास का गट्ठा सिर पर रक्खे, नदी पार से तीनों भाई।
आए और बहन ने जल्दी, कड़वा[1] डाल चिलम सुलगाई।
आया है जाड़े का मौसम, सन सन चले हवा पिछवाई॥
आग ताप के बैठे तीनों, जब तन में कुछ गर्मी आई।
ढोल उठा कर बिरहे छेड़े, कबित पढ़े, गाई चौपाई।
आया है जाड़े का मौसम, सन सन चले हवा पिछवाई॥

और फिर सर्दियों की रात का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

पख पखेरू कोई न डोले, सायॅ-सायॅ दे कान सुनाई।
हवा बजाए सीटी बन मे, काली रात अँधेरी छाई।

खाते-पीते कुनबे का ज़िक्र करने के बाद फाक़ामस्तों की बाबत लिखते हैं:—

ऐसी रात मे ऐ परमेश्वर रास आई कब कडी कमाई।
मेहनत करने वाले ने जब, पूरे पेट न रोटी खाई॥

भारत के सुप्रसिद्ध उर्दू कवि मौलाना 'सीमाब' अकबराबादी के सुपुत्र श्री एजाज़ सिद्दीकी ने तुहिन-कण और तारों पर एक सुंदर गीत लिखा है—

ऐ सुदर ऐ अचपल तारो, ऐ रब के ज्ञानी सय्यारो[2],
सॉझ भई और लगे चमकने, काले बदरा बीच दमकने,
जग को सीधी बात बताते, ईश्वर का उपदेश सुनाते,

---

[1]तमाखू। [2]घूमने वाला सितारा।

दूर भई जग की अँधियारी, सोवन लागी दुनिया सारी।
ओस पड़ी मोती बरसाए, फूल औ' पात के मुँह धुलवाए,
दूब पै अपना रंग जमाया, सब्ज़े को पुखराज बनाया,
भर दी ओस से डाली-डाली, सगरी रात करी रखवाली,
भोर भई तो मोंद पड़े तुम! पापी जग से रूठ गए तुम!

लोरियां

हर देश में और देश की हर भाषा में लोरियां है। लिखने में यह बहुत कम आती हैं, पर हर देश, हर नगर और हर गाँव में स्त्रियां अपनी सीधी सरल ज़बान में लोरियां गाती हैं। कवि भी कभी-कभी लोरियां लिखते हैं और उन की लिखी हुई लोरियों में सरलता के साथ-साथ कविता भी होती है।

'यशोधरा' में श्री मैथिलीशरण जी गुप्त ने एक बहुत सुंदर लोरी लिखी है। लोरी का यह निम्नलिखित पद दुःखिनी यशोधरा के हृदय में प्रति-पल जलने वाली अग्नि का द्योतक है:—

रहे मंद ही दीपक माला,
तुझे कौन भय कष्ट कसाला?
जाग रही है मेरी ज्वाला,
सो मेरे आश्वासन सो!

उर्दू कविता के इस रंग में भी लोरियां लिखी गई हैं। पंडित सोहन लाल 'साहिर,' बी० ए० ने भी एक लोरी लिखी है। लोरी देनेवाली मां यहां भी यशोधरा जैसी परिस्थिति में है, और भाव इस में गुप्त जी की लोरी जैसे ही हैं। लड़के का पिता उस की मां को छोड़ गया है। मां बच्चे को सुलाती और अपने दु:ख की कहानी कहती है। एक बंद देखिए—

सो जा मेरे राजदुलारे, सो जा मेरी आँख के तारे,
तेरी मा ने ग़म का गहना, बच्चे तेरी ख़ातिर पहना!
मैं न रहूँगी तब तू रहना, जब वह आएं तब यह कहना—

रो-रो के अम्मा बेचारी, तक-तक कर थक-थक कर हारी,
गिन-गिन कर रातों के तारे ! सो जा मेरे राजदुलारे !

एक मुसलमान मां की लोरी है—

सो जा मेरे प्यारे, सो जा !
मेरे राजदुलारे, सो जा !

नींद की परियो आओ आओ, मीठी-मीठी लोरिया गाओ ;
मेरी जान है नन्हा प्यारा, मेरा मान है नन्हा प्यारा,
ज्यों-ज्यों तू परवान[१] चढ़ेगा, जग मे मेरा नाम बढेगा,

सो जा मेरे प्यारे सो जा !
मेरे राजदुलारे सो जा !

हिम्मत अज़मत[२] चाकर तेरी, हशमत[३] शौकत चाकर तेरी,
तख़्त भी तेरा ताज भी तेरा, बख़्त भी तेरा बाज[४] भी तेरा,
कैसे-कैसे काम करेगा, पैदा जग मे नाम करेगा,

सो जा मेरे प्यारे सो जा !
मेरे राजदुलारे सो जा !

धूम से तेरा ब्याह रचाऊ, गोरी चिट्टी बेगम लाऊं,
धन औ' दौलत तुझ पर वारू, राज को तेरे सदक़े[५] वारू,
गोद खिलाऊं तेरे बच्चे, सो जा सो जा मेरे बच्चे,

सो जा मेरे प्यारे सो जा !
मेरे राजदुलारे सो जा !

एक दूसरी लोरी सुनिए। देहात की मुसलमान मां लोरी दे रही है—

चमगादड ने धूम मचाई, धुमसा छाया राम दोहाई,

---

[१]जवान होगा। [२]प्रतिष्ठा। [३]शान-शौकत। [४]कर जो छोटे राजा बड़े राजाओं को देते हैं। [५]निछावर।

आई रात अँधेरी छाई, हरयाली[1] ने लोरी-गाई,
अगला झूले बगला झूले,
सावन मास करेला फूले[2]।

प्यारी नींद का प्यारा आना, भारी पलकों से पहचाना,
लो हम गाए प्रेम का गाना, अल्लाह आमीं[3], तुम सो जाना—
अगला झूले बगला झूले,
सावन मास करेला फूले।

हामिद, सरवर, नैयर सोया, मोहन अपने घर पर सोया।
जो था बाहर भीतर सोया, सोजा, सो जा, सब घर सोया!
अगला झूले, बगला झूले,
सावन मास करेला फूले।

बच्चे को नींद से जगाने के लिए भी लोरियां गाई जाती हैं। पंजाब की मां अपने 'कान्ह' को जगाने के लिए पल भर में यशोदा बन जाती है और बच्चे को प्यार से जगाती हुई कहती है: —

बासी रोटी सजरा मक्खन, नाल देनिया दहीं,
जागिये गोपाललाल, जागदा क्यों नहीं[4]?

गीतों के इस रंग में भी बच्चे को जगाते समय गाई जाने वाली लोरी के दो बद देता हूं:—

जागो मेरे प्यारे जागो!
दिल में बसने वालो जागो, मनमोहन मतवाले जागो,
घर भर के उजियाले जागो, गुल्शने-दिल के लाले जागो,

---

[1]लोरी देने वाली का नाम। [2]एक देहाती लोरी का पहला बंद जिस का लोरी से कोई संबंध नहीं होता। [3]आमीन का संक्षिप्त रूप। [4]बासी रोटी और ताजा मक्खन तेरे लिए तैयार है, मैं तुझे साथ में दही भी दे रही हूं, ऐ मेरे गोपाल, जाग! तू जागता क्यों नहीं?

मादकता के प्याले जागो,
जागो मेरे प्यारे जागो!
तुतली बोली बोल सुनाओ, उठो, दौड़ो, गोद मे आओ,
लस्सी पीओ माखन खाओ, गुड़िया लेकर उसे नचाओ,
घर भर मे इक रास रचाओ,
जागो मेरे प्यारे जागो!

मज़ाक और व्यंग्य के गीत

मैं ने गीतों के विभिन्न रूप केवल यह दर्शाने के लिए दिए हैं कि उर्दू काव्य के इस रग ने भी व्यापक सूरत प्राप्त की है। इस युग में काव्य के हर पहलू पर गीत लिखे गए हैं। इन में व्यथा है, विरह है, प्रेम है, अग्नि है, प्रकृति-सौंदर्य है, रहस्यवाद या छायावाद है, और भी प्रायः सब तरह के रस हैं। एक रस है जिस के संबंध में मैं अभी तक कुछ नहीं कह पाया, और वह है हास्यरस। परंतु यदि इस युग की कविताओं की छानबीन की जाए तो आप को हास्यरस की कविताएं भी मिलेंगी। यह बात और है कि कहीं हम ज़ोर से हँस दें कहीं मुसकरा कर रह जाएं और कहीं हमारी हँसी दिल की चारदीवारी तक ही परिमित रह जाय। 'वक़ार' साहिब के 'मेरे फूट गए हैं भाग' नामी गीत को ही लीजिए। देखिए पंजाब के अनपढ कुटुंब के द्वंद्वमय गृह-जीवन के चित्र के साथ ही गीत मे व्यंग्य की कितनी अधिक पुट है। सास बहू की नालायकियों का रोना रोती है, उसे गालियां देती है और साथ वावेला भी किए जाती है:—

चरखे तार न चूल्हे आग, मेरे फूट गए हैं भाग!
बहू अभागिन जब से आई,
रहती है हर रोज़ लडाई,
पीने खाने मे चतुराई,
काम को कहती है खटराग! मेरे फूट गए हैं भाग!
इधर-उधर की बातें कर ले,

स्वाँग हज़ारों दिन में भर ले,
नाम जो चाहो, लाखों धर ले,
मुँहफट, बोले जैसे काग! मेरे फूट गए हैं भाग!
चटक-मटक से मन से न्यारी,
गुन जो देखो औगुनहारी,
कुल-खोनी यह चंचल नारी,
इस को डस ले काला नाग! मेरे फूट गए हैं भाग!'

मि० 'मुज़फ्फर' अहमानी ने शिक्षित बेकारों की दशा का कैसा व्यंग्यात्मक चित्र खींचा है! लिखते हैं:—

भूक लगी है भूक! मुजफ्फर, भूक लगी है भूक!
बी० ए० कर के बेकारी है,
जीने तक से लाचारी है,
नादारी ही नादारी है,
हूक उठती है हूक! मुजफ्फर, भूक लगी है भूक!
नादारी में प्रीत लगाई,
प्रीत लगा कर मुहँ की खाई,
बिन पैसे का बाप न भाई,
चूक गया मैं चूक! मुजफ्फर, भूक लगी है भूक!

'आज़र' जालंधरी ने लिखा है—

पैसे के हैं दुनिया में तलबगार बहुत,
बन जाते हैं पैसे से यहा यार बहुत,
पैसा हो अगर पास तो फिर ऐ 'आजर',
ग़मख्वार बहुत, मूनसो दिलदार बहुत।

इसी पैसे के विषय में पंडित इंद्रजीत शर्मा ने एक गीत लिखा है—

पैसा है सरताज जगत में, पैसा है सरताज!
पैसे ही की सरदारी है, पैसे ही का राज।

पैसा है तो मान है प्यारे, पैसा है तो लाज।
पैसा है सरताज जगत मे, पैसा है सरताज।
जब तक पैसा रहे गाँठ मे, कोई न बिगड़े काज।
पैसा है तो सेठ कहावे, बिन पैसे मुहताज।
पैसा है सरताज जगत मे, पैसा है सरताज!

'ईंट को पत्थर' शीर्षक कविता में 'आतिश' हरियानवी लिखते हैं—

भेड ने बरसो ऊन कटाई, क्यों खाएँ पर तरस कसाई।
शेर की मूँछ से बाल जो तोड़े, किस ने इतनी हिम्मत पाई?
क्यो करता है उस को 'जी, जी', जिस ने तुझ पर ईंट उठाई?
जिस ने तुझ पर ईंट उठाई, उस को पत्थर मार।

अंतिम शब्द

अंत में दो एक बाते इन गीतों और पुस्तक मे दिए गए संकलन के बारे मे कह कर इस लंबी भूमिका के लिए मैं पाठकों से क्षमा चाहूँगा।

पहली बात तो यह है कि शायद उच्च कोटि की हिंदी कविता का रसास्वादन करनेवाले पाठकों को इन में हिंदी गीतों की सी उडान तथा उन के गूढ भाव न दिखाई दें और वे इन को देख कर आधुनिक उर्दू कविता के संबंध मे ग़लत राय कायम कर लें। उन पाठकों से मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि इन गीतों को समालोचना की कसौटी पर कसते समय यह बात भूल नहीं जानी चाहिए कि गीत उर्दू के शायरों के लिखे हुए हैं, जिन में से अकसर हिंदी लिपि तक से अपरिचित हैं, जिन के पास सुंदर तथा ऊँचे-तुले हिंदी शब्दों का इतना आधिक्य नही जितना हिंदी कवियों के पास है, और जिन्हें शब्दों की उपयुक्तता का भी इतना ज्ञान नही। उन की कठिनाइयों को हिंदी का वह कवि भली-भाँति समझ सकेगा जो उर्दू लिपि तक से अपरचित हो और फिर भी उर्दू नज्मे तथा गज़ले अथवा उर्दू मसनवियां व रुबाइयां लिखने का प्रयास करे। फिर भी जैसा मैं ने पहले कहा था हिंदी और उर्दू के मिश्रण से पैदा होनेवाले इन गीतों

में बहुत कुछ है—व्यथा-वेदना, आशा-निराशा, हर्ष-उल्लास, उमंग-तरंग, विषाद-अवसाद के साथ-साथ इन में हृदय है और उस की कसक तथा उस के कोमलतम उद्गार भी हैं। यदि सरलता और भाव-प्रधानता उत्तम काव्य की ख़ूबियां हैं, तो यह गीत अवश्य ही काव्य के उत्तम उदाहरण हैं, और साहित्य में इन का अपना स्थान रहेगा, और मैं यह कह दूं कि जन-साधारण को क्लिष्ट और दुरूह शब्दों से पुर, गूढ़ भावोंवाली कविताओं के मुकाबले मे ये गीत अधिक अपने समीप जान पड़ेंगे और जनता इन्हें अधिक प्यार करेगी और अपनाएगी।

दूसरी बात मैं इन गीतों मे प्रयुक्त हिंदी शब्दों तथा उन के उच्चा-रणों के बारे में कहना चाहता हूं और वह, जैसा मैं पहले भी कह चुका हूं, यह है कि इन गीतों मे हिंदी शब्द कुछ तब्दीलियों के साथ प्रयोग किए गए हैं। इस के तीन कारण हैं। सब से बड़ा कारण इस परिवर्तन का यह है कि हिंदी के बहुत से शब्द उर्दू लिपि में शुद्ध लिखे नहीं ही जा सकते और चूँकि यह गीत उर्दू लिपि मे लिखे गए हैं, उर्दू कवियों द्वारा लिखे गए हैं और उर्दू मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रों में छपे हैं, इस लिए जैसे ये शब्द उर्दू लिपि मे आ सकते थे वैसे ही कवियों ने इन का प्रयोग किया है। उदाहरण के तौर पर 'शक्ति', 'शांति' आदि शब्दों को उर्दू में लिखते समय 'शक्ती' तथा तथा 'शांती' ही लिखा जायगा और इस लिए महाकवि इकबाल तथा दूसरे कवियों ने इन्हीं बदले हुए उच्चारणों से इन का प्रयोग किया है। जैसे:—

शक्ती भी शांती भी भक्तों के गीत मे है।

दूसरा कारण इस तब्दीली का पंजाबी भाषा है। पंजाबी भाषा वास्तव में संस्कृत से ही निकली हुई है, परंतु शताब्दियों के हेरफेर से इस मे बहुत अंतर आ गया है। उर्दू के इन गीतों में प्रयोग होनेवाले शब्दों में, बहुत से कवियों ने, वही उच्चारण हिंदी का उच्चारण समझ कर प्रयुक्त किया है। उदाहरण के तौर पर 'तत्व' को पंजाबी भाषा मे 'तत' और

'सत्य' को 'सत' कहा जाता है। कवि इकबाल ने पंजाबी होने के कारण इन संस्कृत शब्दों का वही उच्चारण लिया है जो पंजाब में प्रचलित है। उदाहरणतया :—

जान जाए हाथ से जाए न सत,
है यही इक बात हर मज़हब का तत।

मैं ने इस संग्रह मे जो गीत दिए हैं उन मे आप को ऐसे हिंदी शब्द भी मिलेंगे जो पंजाबी भाषा में बदलने के बाद उर्दू में लिए गए हैं।

तीसरा कारण यह है कि आधुनिक उर्दू काव्य पर हिंदी का जो प्रभाव पड़ा है, वह हिंदी की आधुनिक कविताओं का ही नहीं वरन् ब्रजभाषा से लेकर खड़ी बोली तक में लिखी जानेवाली सब कविताओं का है। इस लिए इन गीतों मे आप को ब्रजभाषा के शब्दों का भी बाहुल्य मिलेगा। यह विषय अपने मे ही काफ़ी लंबा है और मैं इसे भाषा-संबंधी छान-बीन करनेवालों के लिए छोड़ कर संग्रह मे दिए गए गीतों के संबंध में कुछ कहूँगा।

उर्दू काव्य के इस युग में इतने गीत लिखे गए हैं कि उन से कई संग्रह तैयार हो सकते है। इस छोटे से निबंध में सब गीत देना न तो ठीक है न संभव ही, इस लिए जहां तक मुझ से हो सका है मैं ने हर 'स्कूल' के कवियों के गीत देने का प्रयास किया है। फिर भी हो सकता है कुछ रह गए हों। साथ ही संग्रह मे मैं ने वे नज़्में व गज़लें भी दे दी हैं जो हिंदी के बहुत समीप हैं। उद्देश्य मेरा केवल हिंदी-भाषियों को उर्दू के इस युग की कविताओं से परिचित कराना है और साथ ही मैं इस अभियोग का उत्तर देना चाहता हूं जो पंजाब पर लगाया जाता है कि पंजाब हिंदी के लिए मरुभूमि है। इन गीतों मे मै ने कुछ कवियों को छोड़ कर अधिकतर गीत पंजाब के उर्दू कवियों के ही दिए हैं और उन में भी उर्दू के मुसलमान कवियों को अधिक स्थान दिया है। उर्दू कविता की वर्तमान धारा को देख कर कौन कह सकता है कि पंजाब हिंदी के लिए मरु-

भूमि है, और यहां हिंदी से छुआछूत का बर्ताव किया जाता है ?

इन गीतों का संग्रह करने में मुझे तीन वर्ष से अधिक लग गए और यथासंभव मैं ने इसे १६३८ तक अप टू-डेट बनाने का प्रयास किया है, पर फिर भी हो सकता है कि कुछ सुदर गीत मेरी दृष्टि से न गुज़रे हों। इस के लिए मुझे अपनी मुसीबतों और परेशानियों से शिकायत है, जिन के कारण मैं कुछ अर्से के लिए पत्र-पत्रिकाओं का भली-भाँति अध्ययन नहीं कर सका। क़ानून के अध्ययन और आर्थिक कठिनाइयों के अतिरिक्त मेरी पत्नी की लंबी बीमारी और मृत्यु इस काम मे बडी बाधा बनी रही। मेरी न्यूनताओं और त्रुटियों के अतिरिक्त इस बात का विचार करके कि उर्दू में इन गीतों की कोई छपी हुई पुस्तक नहीं, और संकलन के लिए मुझे अधिकतर पत्र-पत्रिकाओं का ही आश्रय लेना पड़ा है, पाठक यदि इस संग्रह मे कोई ख़ामी पाएं तो मुझे क्षमा कर दें।

अंत में यह कृतघ्नता होगी, यदि मै उन कवियों को धन्यवाद न दूं जिन्हों ने मुझे अपनी कविताएं इस संग्रह में छापने की आज्ञा देने की कृपा की है। इस काम मे सहायता देने के लिए जिन पत्र पत्रिकाओं के संपादकों ने मुझे सहायता दी उन का भी मै बहुत आभारी हूं।

उपेंद्रनाथ अश्क

१८४, अनारकली, लाहौर

'हफ़ीज़' जालंधरी

'शाहनामा-ए-इस्लाम' 'नग़्माज़ार' और 'सोज़ोसाज़' के रचयिता, युग-प्रवर्तक कवि श्री 'हफ़ीज़' जालंधरी के संबंध में, यहां मैं इस से अधिक कुछ न कहूँगा कि 'हफ़ीज़' आधुनिक युग के उन दो-तीन कवियों में से एक हैं जिन्हों ने उर्दू कविता के रुख़ को पलट दिया है, जो उर्दू मे एक नया रंग लेकर आए हैं, और जिन के इस रंग को जन-साधारण ने अपने दिलों में स्थान दिया है। दूसरी ख़ूबियों के अतिरिक्त 'हफ़ीज़' के गीतों में नए छंद, मादक संगीत और स्थानीय रंग, ये तीन गुण उल्लेखनीय हैं। इन्हीं ख़ूबियों के कारण, 'हफ़ीज़' अरब और फारस के कवि न हो कर अपने देश के—अपने भारत के—कवि हैं।

परमात्मा के हज़ूर में

तूही सब का पालन हार !

तू ने यह ससार बनाया, इतना सारा खेल रचाया।
मोती हीरे सोना रूपा, तेरी दौलत तेरी माया।
दिन के रुख़[1] पर तेरा परतव[2], रात के सिर पर तेरा साया।
फूलों से धरती को ढाँपा, तारों से आकाश सजाया।
आग हवा मिट्टी औ' पानी, सब मे जाँदारों[3] को पाया।
तू ही पालनहार है सब का, सब तेरे बालक हैं ख़ुदाया !

तू सब से रखता है प्यार !
तू ही सब का पालनहार !

---

[1]मुख। [2]प्रतिबिंब। [3]चेतन, जिन में जान है।

हर इक ने यह बात है मानी, कोई नहीं है तेरा सानी[1]।
दुनिया फ़ानी[2] है तू बाक़ी[3], तू बाक़ी है दुनिया फ़ानी।
तेरे नाम से हो जाती है, पैदा मुश्किल में आसानी।
दान भी तेरा, देन भी तेरा, तू ही दाता तू ही दानी।
तेरे भरोसे पर जीते हैं, क्या ज्ञानी औ' क्या अज्ञानी।
क्या मुफ़लिस[4] औ' क्या ज़रदार[5]!
तू ही सब का पालनहार!

बसंत

(बसंती तराना से)

लो फिर बसंत आई, फूलों पै रंग लाई।
चलो बे-दरंग[6],
लबे आबे-गंग[7],
बजे जलतरंग,
मन पर उमंग छाई, फूलों पै रंग लाई!
लो फिर बसंत आई।

आफ़त[8] गई ख़िज़ाँ[9] की, क़िस्मत फिरी जहाँ की।
चले मैगुसार[10],
सुए लालाज़ार[11],
मये परदादार[12],
शीशे के दर से झाँकी, क़िस्मत फिरी जहाँ की।
आफ़त गई ख़िज़ाँ की।

---

[1]तेरे जैसा दूसरा। [2]नश्वर। [3]अमर। [4]निर्धन। [5]धनी। [6]बे-रोकटोक, बे-खटके। [7]गंगा के पानी के किनारे। [8]आपत्ति, मुसीबत। [9]पतझड़। [10]मय (मदिरा) पीनेवाले। [11]बाग़ की ओर। [12]शीशे के परदे में छुपी हुई मदिरा।

फूली हुई है सरसों, भूली हुई हैं सरसों।
नहीं कुछ भी याद,
यों ही बमुराद[1],
यों ही शाद-शाद,[2]
गोया रहेगी बरसों, भूली हुई है सरसों।
फूली हुई है सरसों।

लड़कों की जंग देखो, डोर औ' पतंग देखो।
कोई मार खाए,
कोई खिलखिलाए,
कोई मुस्कराए,
तिफली[3] के रंग देखो, डोर औ' पतंग देखो।
लड़कों की जंग देखो।

है इश्क़[4] भी जनूं[5] भी, मस्ती भी जोशे-खूं[6] भी!
कहीं दिल में दर्द,
कहीं आह सर्द,
कहीं रंग ज़र्द,
है यूं भी और यूं भी! मस्ती भी जोशे-खूं भी,
है इश्क और जनूं भी।

इक नाज़नी[7] ने पहने, फूलों के ज़र्द गहने।
है मगर उदास,
नहीं पी के पास,

---

[1]सफल मनोरथ। [2]उल्लसित। [3]बचपन। [4]प्रेम, अनुराग। [5]उन्माद।
[6]रक्त का जोश। [7]तरुणी।

गमो रजो-यास,
दिल को पड़े हैं सहने, इक नाजनीं ने पहने
फूलों के जर्द गहने[१]।

रखवाला लड़का

('तारों भरी रात' से)

रखवाला लड़का, खेतों का दूल्हा, बंसी बजा कर, गाने का रसिया,
मेड़ों के ऊपर, फिरता है तन्हा[२], हाथों मे बंसी, पैरों से नगा,
अलबेले पन मे, असली फबन में,
गोकुल के बन में, जैसे कन्हैया!
बंसी की लय में गुम हैं फिजाएं, फिरती हैं मदहोश[३] हर सू हवाएं!
जादू है क्या है? या माजजा[४] है!
कोहो-बयाबा,[५] खेत और मैदा, बाहोश[६] बेहोश, सब ख़ुद फरामोश!
क्यों ओ गलेबाज[७]! तेरा यह अंदाज,
यह साज़[८] यह साज[९], तुझ को पता है।
जादू है क्या है? या मोजज़ा है!

---

[१]हफीज की बहार ईरान की बहार नहीं हिंदुस्तान की बहार है, जिसे भारत में वसंत कहते हैं। हफीज के यहा बसत मे सरसों फूलती है, खेतों और वाटिकाओं में हिंदुस्तानी बहार आती है, लडके डोर और पतग के लिए आपस में लडते हैं—कोई मार खाता है, कोई हँसता और कोई खिलखिलाता है। ख़ून में जोश आता है, प्रेम और उन्माद में मस्ती पैदा होती है। दूसरी ओर घर में एक सती, पतिव्रता तरुणी है, जिस ने उत्सव की खातिर शकुन मनाने के लिए फूलों के पीले गहने तो पहन लिए हैं, परतु चूकि प्रियतम परदेस में हैं, इस लिए उदास है। यह है हफीज का स्थानीय रग जो उसे भारत का कवि बनाता है। [२]अकेला। [३]मदमत्त। [४]अलौकिक। [५]पहाड और मरुस्थल। [६]होश वाले। [७]मादक कठवाले। [८]दर्द। [९]साज के अर्थ बाजे के होते हैं, रखवाले का साज उस की बंसरी ही है।

जाग सोज़े इश्क़ जाग

जाग सोज़े-इश्क़[१] जाग, जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

जाग काम देवता, फितना-हाए नौ[२] जगा।
बुझ गया है दिल मेरा, फिर कोई लगन लगा।
सर्द हो गई है आग। जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

पड गई दिलों में फूट, क्या बजोग[३] पड गया ?
पिरथ्वी पर चार कूँट एक सोग पड़ गया।
सर निगू है शेषनाग। जाग सोज़े-इश्क जाग !

तू ने आँख बद की, कायनात सो गई।
हुस्ने ख़ुद-पसद[४] की, दिन मे रात हो गई।
जर्द पड गया सुहाग। जाग सोज़े-इश्क जाग !

तू जो चश्म वा करे[५], हर उमग जाग उठे।
आहो-नाला[६] जाग उठे, राग रग जाग उठे।
जोग से मिले बिहाग। जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

फिर उसी उठान से, तीर उठे कमा[७] उठे,
सब्र[८] की ज़बान से, शोरे-अलअमा उठे!
जाग उठे दिलों के भाग। जाग सोज़े-इश्क जाग !

जाग ऐ नज़र-फरोज़[९], जाग ऐ नज़र-नवाज़[१०],

---

[१]प्रेम की जलन। [२]नए फितने-फसाद। [३]वियोग का पजाबी उच्चारण। [४]आत्म-गर्व। [५]आँख खोले। [६]निःश्वास और क्रदन। [७]कमान। [८]सतोष। [९]नयनों को अच्छे लगने वाले। [१०]आँखों को ठंडक पहुँचाने वाले।

जाग ऐ ज़माना-सोज़[१], जाग ऐ ज़माना-साज़[२] !
जाग नींद को त्याग ! जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

मन है पराए बस में

पूरब मे जागा है सबेरा, दूर हुआ दुनिया का अँधेरा,
लेकिन घर तारीक[३] है मेरा ।
पच्छम मे जागी हैं घटाएं, फिरती हैं सरमस्त हवाएं,
जाग उठो मैखाने[४] वालो, पीने और पिलाने वालो,
जहर मिलाओ रस में !
मन है पराए बस मे !

बाग़ मे बुलबुल बोल रही है, नरगिस[५] आँखे खोल रही है,
शबनम[६] मोती रोल रही है ।
आम पै कोकिल कूक उठी है, सीने में इक हूक उठी है,
बन जाऊं न कहीं सौदाई[७] ! जानवरों की राम-दुहाई,
चुभती है नस-नस मे ।
मन है पराए बस मे !

बीत गया दिन रात भी आई, तारों ने महफल भी सजाई,
उस ने मगर सूरत न दिखाई ।
वहम[८] कई टाले हैं मैं ने, तारे गिन डाले हैं मैं ने,
वादे का तो किस को यक़ीं[९] है, आँख में लेकिन नीद नहीं है,
नींद ने खालीं क़समें ।
मन है पराए बस में ।

---

[१]दुनिया को जलाने वाले । [२]जमाने को देखे हुए चालाक । [३]अँधेरा । [४]मदिरालय । [५]पुष्प विशेष । [६]ओस । [७]पागल । [८]शंका । [९]विश्वास ।

लोगो छोड़ो दुनियादारी, जान गया उलफ़त[1] में तुम्हारी,
तह कर दो यह नसीहत[2] सारी।
मुझ को तुम से काम ही क्या है? मेरा नंगो-नाम[3] ही क्या है?
इस दुनिया की प्रीत यही है, रस्म यही है रीत यही है,
टूट गई सब रस्में!
मन है पराए बस में!

कौन बताए उलफ़त क्या है? दिल क्या, दिल की हक़ीक़त[4] क्या है?
मर मिटने में लज़्ज़त[5] क्या है?
बेदर्द इस को क्या पहचाने? जिस पर बीती हो वह जाने!
देख ऐ ज्ञानी, दुनिया है फ़ानी[6]! हाय मुहब्बत, हाय जवानी!
आग लगी है नस नस में।
मन है पराए बस में!

दोस्तो उस का नाम न पूछो, कुछ भी नहीं है, काम न पूछो,
उस के सिवा पैग़ाम[7] न पूछो—
मेरा भी तुम नाम न लेना, मिल जाए तो यों कह देना—
इक दीवाना[8] चुप रहता है, कहता है तो यह कहता है,
'मन है पराए बस में!
मन है पराए बस में!'

एक अभिलाषा

('पुरानी बसंत' से)

रंग दे, रंग दे क़दीम[9] रंग!
रंग दे क़दीम रंग, बेदरेग़[10], बेदरंग[11],

---

[1]प्रेम। [2]शिक्षा, उपदेश। [3]मान-प्रतिष्ठा। [4]वास्तविकता। [5]आनंद। [6]नश्वर। [7]संदेश। [8]पागल। [9]पुराना। [10]निस्संकोच। [11]निश्चित।

जिस की ज़ौ[1] से मात हो, रंगबाज़िए फ़िरंग[2] ।
इश्क़ के लिबास को, रंग शोख़ो-शंग दे !
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !
एक ही उमंग दे, एक ही तरंग दे,
दीन धर्म मिट न जाय, पासे नामो-नंग[3] दे !
दामने दराज़[4] दे, या क़बाए तंग[5] दे,
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !
उम्र घट गई तो क्या, डोर कट गई तो क्या ?
यह हवाए तुंदो[6] तेज़, रुख़ पलट गई तो क्या ?
आ गई बसंत रुत, और इक पतंग दे !
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !
सुलह हो कि जंग हो, साथियों का संग हो ।
सब हमें पसंद है, ख़ून हो कि रंग हो ।
ख़ून हो कि रंग हो, एक रंग रंग दे !
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

प्रेम-प्रदर्शन

मेरे दिल का बाग़, प्यारी, मेरे दिल का बाग़ ।

---

[1]चमक । [2]विदेश की रंगबाज़ी । [3]नाम और इज़्ज़त का विचार । [4]खुला दामन । [5]तंग चोला । [6]मंद ।

मै हूं दिल के बाग़ का माली, लाया हूं फूलों की डाली।
नाज़ुक नाज़ुक फूल हैं जैसे, उजले औ' बेदाग़[1],
ऐसे ही बेदाग़ है प्यारी, मेरे दिल का बाग़।
प्यारी, मेरे दिल का बाग़!

उलफ़त[2] का इहसास[3], प्यारी, उलफ़त का इहसास—
उलफत है फूलों का गहना, ख़ुशबूओं में रहना-सहना!
मद्धम, हलकी, भीनी-भीनी, इन फूलों की बास!
मीठा-मीठा दर्द हो जैसे, उलफ़त का इहसास।
प्यारी, उलफ़त का इहसास!

उलफत का इज़हार[4], प्यारी, उलफ़त का इज़हार—
मेरी ठंडी-ठंडी आहें, तेरी यह हैरान निगाहें.
इन फूलों की हर डाली है, इक गुलशन बेख़ार[5]!
इन फूलों की रंगत जैसे, उलफ़त का इज़हार!
प्यारी, उलफ़त का इज़हार!

अंधी जवानी

घटाएं छाई हैं घनघोर, घटाएं छाई हैं घनघोर!

घटाएं काली-काली, ख़ूब बरसने वाली,
मतवाली, पुरशोर! घटाएं छाई हैं घनघोर।
गुलशन की गुलपोश अदाएं, आमों की ख़ामोश फ़िज़ाएं,
कोयल की मदहोश सदाएं, बन में बोल रहे हैं मोर!
घटाएं छाई हैं घनघोर!

जवानी ले आई बरसात, जवानी ले आई बरसात!

---

[1]बिना दाग के (उज्ज्वल)। [2]प्रेम। [3]अनुभूति। [4]प्रदर्शन। [5]अकंटक।

जवानी, हाय, जवानी ! सरशोरी[1] नादानी[2],
मस्तानी, बदज़ात ! जवानी ले आई बरसात !
बैठा हूं अब मर्ग[3] किनारे, करता हूं हूरों के नज़ारे,
आह, निगाहें, आह, इशारे ! छाई निगह[4] पर काली रात !
जवानी ले आई बरसात !

मुहब्बत आहों का तूफ़ान ; मुहब्बत आहों का तूफ़ान !
मुहब्बत प्यारी-प्यारी, मीठी सी बीमारी,
बेचारी, अनजान ! मुहब्बत आहों का तूफ़ान,
इक कश्ती मल्लाह से ख़ाली, मैं ने उठा तूफ़ान में डाली,
इस कश्ती का अल्लाह वाली, पार लगाएगा रहमान !
मुहब्बत आहों का तूफ़ान !

---

[1]उद्दंडता। [2]मूर्खता। [3]मृत्यु। [4]दृष्टि।

'साग़र' निज़ामी

यू० पी० के इस जादूगर का नाम किस ने नहीं सुना? अपने कल-कंठ से निकले हुए मादक संगीत का आवरण अपने सरल गीतों और सुंदर नज़्मों को पहना कर श्रोताओं को उस ने बीसियों बार मुग्ध किया है। मुशायरों में उस के तराने गूँजते हैं, रेडियो पर उस के नग़मे सुनाई देते हैं। 'साग़र' की भाषा सीधी-सादी हिंदुस्तानी है, और भावों में हिंदी की पुट है। अलंकार उस की उँगलियों पर खेलते हैं और जब वह अपनी जादू-भरी आवाज़ में गाता है तो फ़िज़ा का कण-कण झूम कर रह जाता है।

तुम मुझ से क्यों रूठे?

मेरे मन में प्रेम जो फूटा, तुम मुझ से क्यों रूठे?
चदरमा[1] आकाश से फूटा, धरती से गुल-बूटे,
ताक-झाँक की धुन में सूरज चमका, तारे टूटे,
रात मिलन के कारन दिन से साँझ की नगरी छूटे,
तुम मुझ से क्यों रूठे?

प्रीत की छाती से नद्दी फूटी, शोर मचाती,
मौजों का सारग बजाती, मीठे नगमें गाती,
मीठे-मीठे नग़मे गाती, मोती खूब लुटाती,
जिस ने देखे, उस ने पाए, जिस ने पाए, लूटे।
तुम मुझ से क्यों रूठे?

सीपी की गोदी में मोती, घुट-घुट कर रह जाए,

---

[1]चंद्रमा।

चमक-दमक में से उस की सीपी काँपे औ' थर्राए,
बरखा की इक बूंद का बोसा[1] मोती को गरमाए,
मोती सीपी के पट खोले औ' घबरा कर फूटे।
तुम मुझ से क्यों रूठे?

टहनी में कुछ कलियां फूटीं, कलियों में सौ रंग,
रंगों से इक ख़ुशबू बरसी औ' ख़ुशबू से उमंग,
कँवल-कँवल भँवरों ने छेड़ा ऋतु-राज का चंग[2],
शबनम के सौ प्याले इक चुम्मे के दहन[3] में टूटे।
तुम मुझ से क्यों रूठे?

पुजारन

ऐ मंदिर का राज़[4] पुजारन, ऐ फ़ितरत[5] का साज़[6] पुजारन!
प्रेम-नगर की रहने वाली, हर की बतियां कहने वाली,
सीधी-साधी भोली-भाली, बात निराली गात निराली,
गर्दन में तुलसी की माला, दिल में इक ख़ामोश शिवाला,
ओंठों पर पैमाने[7] रक़्सा[8], आँखों में मैख़ाने रक़्सा।
ऐ देवी का रूप पुजारन!
तेरा रूप अनूप पुजारन!
भीनी-भीनी बू[9] मांगों में, मांगों मद में तू-सारी में,
आँखों में जमुना की मौजें, बालों में गंगा की लहरें,
नूर तेरे रुख़्सारे हसीं[10] पर, रंगीं टीका पाक जबीं[11] पर,

---

[1]चुंबन। [2]बाजा विशेष। [3]मुख। [4]रहस्य। [5]प्रकृति। [6]बाजा। [7]मदिरा का प्याला। [8]नृत्य करता हुआ। [9]सुगंधि। [10]सुंदर कपोल। [11]पवित्र मस्तक।

जैसे फलक[1] पर सुब्ह का तारा, रौशन रौशन प्यारा प्यारा,
शर्मीली मासूम[2] निगाहें, गोरी-गोरी नाजुक बाहें।
ऐ देवी का रूप पुजारन!
तेरा रूप अनूप पुजारन!

फूलों की इक हाथ में थाली, मोहन[3], मदमाती, मतवाली,
नीची नजरें तिरछी चितवन, मस्त पुजारन हरि की जोगन,
चाल है मस्तानी मतवाली, और कमर फूलों की डाली,
दिल तेरा नेकी की मंजिल, लाखों बुतख़ानों का हासिल[4],
हस्ती तुझ मे झूम रही है, मस्ती आँखें चूम रही है।
ऐ देवी का रूप पुजारन!
तेरा रूप अनूप पुजारन!

नूर के तडके[5] घाट पै जाकर, गगा का सम्मान बढा कर,
फिर लेकर ख़ुशबूएं सारी, चदन, जल, औ' दूब सुपारी,
सुब्ह के जलवों को तड़पा कर, नज्जारों[6] से आँख बचा कर,
ऐ मंदिर में आनेवाली, प्रेम के फूल चढाने वाली,
हस्ती भी है गुल्शन तुझ से, सूरज भी है रौशन तुझ से।
ऐ देवी का रूप पुजारन!
तेरा रूप अनूप पुजारन!

लौट चली तू करके पूजा, देख लिया ईश्वर का जल्वा,
ठहर-ठहर ऐ प्रेम-पुजारन, मैं भी कर लू तेरे दर्शन!
देख इधर घूँघट को हटा कर, अपने पुजारी पर किरपा[7] कर।
सब की पूजा ज़ुहदो-ताऊत[8], मेरी पूजा तेरी उलफ़त!
हरि का घर है तेरा पैकर[9], तू ख़ुद है इक सुदर मंदिर।

---

[1]आकाश। [2]अकलुष। [3]सुदर। [4]सार। [5]प्रातःकाल। [6]दृश्यों। [7]कृपा। [8]नेकी। तपस्या। [9]मुख।

ऐ देवी का रूप पुजारन !
तेरा रूप अनूप पुजारन !
आँख मे मेरी है इक आँसू, जैसे हो नद्दी पै जुगनू,
माला में इस को शामिल कर, यह मोती है तेरे क़ाबिल[1]।
ध्यान से अपने प्राण बचा कर, पाँव में तेरे आँख मिला कर,
प्रेम का अपने नीर बहा दू, सब कुछ तुझ पै भेट चढ़ा दू।
पापी दिल मेरा सुख पाए, मेरी पूजा क्यों रह जाए?
ऐ देवी का रूप पुजारन !
तेरा रूप अनूप पुजारन !
आ तेरी सूरत को पूजू, मैं जीवित मूरत को पूजूं !
तू देवी मैं तेरा पुजारी, नाम तेरा हर साँस से जारी।
लाग की आग ने तन को भूना, फिर मदिर है दिल का सूना।
मन में तेरा रूप बसा लू, तुझ का मन का चैन बना लूं !
छिप जा मेरे दिल के अदर, हो जाए आबाद यह मदिर !
ऐ देवी का रूप पुजारन !
तेरा रूप अनूप पुजारन !
तुझ को दिल के गीत सुनाऊ, फिर चरनों में सीस नवाऊ !
तीन लोक, आकाश झुका दूं, धरती की शक्ती लचका दू !
तारे, चाँद औ' भूरे बादल, बाग़, नदी, दरिया औ' जगल,
पर्बत, रूख औ' मसजिद मदिर, साक़ी पैमाना औ' साग़र,
दुनिया हो तेरे क़दमों पर, क़दमों के नीचे मेरा सर !
ऐ देवी का रूप पुजारन !
तेरा रूप अनूप पुजारन !
एक पुजारन एक पुजारी, प्रीत की रीते कर दे जारी,

---

[1]योग्य ।

देश में प्रीत और प्यार को भर दे, प्रेम से कुल ससार को भर दे,
लोभ मोह के बुत को तोड़े, पाप, क्रोध का नाम न छोड़े,
प्रेम का रस दौड़े रग-रग में, हो इक प्रेम की पूजा जग में,
दोनों इस धुन में मर जाए, तीरथ एक अजीब[1] बनाए।
ऐ देवी का रूप पुजारन!
तेरा रूप अनूप पुजारन!

यह फूल भी उठा ले

जल्वे तेरे अनोखे, ग़मज़े[2] तेरे निराले,
चितवन है सीधी-सादी, तेवर हैं भोले-भाले,
कुहनी तक आस्तीनें, आँचल कमर में डाले,
रुख़सार[3] गोरे-गोरे, यह बाल काले-काले,
ओ फूल चुनने वाली!
इक हाथ टोकरी पर, इक हाथ है कमर पर,
ढलका हुआ दुपट्टा, ताजे-ग़ुरूर[4] सर पर,
है इक नज़र क़दम पर, औ' इक क़दम नज़र पर,
क्यों यह ख़राम[5] तेरा, पामाल कर[6] न डाले?
ओ फूल चुनने वाली!
तू फूल चुन रही है, औ' फूल झड़ रहे हैं,
बल तेरी त्योरियों में, रह-रह के पड़ रहे हैं,
क्या तेरी टोकरी में तारे से जड़ रहे हैं?
हसरत[७] से बाग़ वाले फिरते हैं दिल सम्हाले!
ओ फूल चुनने वाली!
फूलों में मैं ने अपना दिल भी मिला दिया है,

---

[1]विचित्र। [2]अदाएं। [3]कपोल। [4]गर्व का मुकुट। [5]चाल। [6]पददलित।

फूलों में मिल मिला कर वह फूल बन गया है।
आएगा काम तेरे, यह तेरे काम का है।
ओ फूल चुनने वाली, यह फूल भी उठाले।
ओ फूल चुनने वाली !

भिखारन

देख के दिल भर आया मेरा, आ मैं भर दूं कासा[1] तेरा।
लूट ले जितना लूटा जाए, माँग ले जो कुछ माँगा जाए,
दिल ले ले, ईमान भी ले ले, जी चाहे तो जान भी ले ले।
वह भी तेरा दिल भी तेरा, सामाने-महफ़िल[2] भी तेरा,
साग़र तेरा साकी तेरा, तू मेरी, और बाकी तेरा,
आह भिखारन, वाह भिखारन !
आह न भर लिल्लाह भिखारन !
आ मै तेरे बाल सँवारूं, नज्जारों से गाल सँवारूं,
रूह बना कर तन मे रक्खूं, आँखों की चितवन मे रक्खूं,
बन जा, बन जा, दिल की रानी, इस दुनिया मे कर सुल्तानी !
मैं तेरा जोगी बन जाऊं, दर पर सायल बन कर आऊं,
तुझ से माँगू भीख सकूं[3] की, हो जाए तकमील जनूं[4] की !
आह भिखारन, वाह भिखारन !
आह न कर लिल्लाह भिखारन !

भिखारी की सदा

बात न पूछे बाबा कोई !
बात न पूछे कोई बाबा दर दर दी आवाज़,

---

[1]प्याला। [2]सभा का सामान। [3]शांति। [4]उन्माद की पूर्णता।

क्यों बजता है अब भी पापी यह जीवन का साज़ ?
तूफ़ाँ सर पर रात अँधेरी हरदम इक मँझधार !
मेरा प्याला नैया है और क़िस्मत खेवनहार !
बात न पूछे बाबा कोई !

यह गढ़ तारों के हमसाये[1], यह ऊँचे अस्थान,
या माँगे पर भी मिलता है, कब भिक्षु को दान ?
जिस को देखो दाता है औ' सब दाता हैं चोर,
इस नगरी में सब कोई बाबा पक्का लाल कठोर,
बात न पूछे बाबा कोई !

चाँद सितारे लानत भेजें, सूरज दे धत्कार,
बैठे-बैठे ध्यान में मुझ को धक्के दे संसार।
माया बिन जीवन है जग में जीवन का अपमान।
माया ही जंजाल है बाबा, माया ही निर्वान !
बात न पूछे बाबा कोई।

[1] पड़ोसी।

'अख़तर' शेरानी

'अख़तर' पंजाब का वह जवान शायर है जिस ने उर्दू में 'रूमानी शायरी' ('रोमांटिक पोएट्री') का सूत्रपात किया है। उस की कई कविताओं में आप अपने आप को चाँद सितारों की घाटियों मे पाएँगे— जहां फूलों की सुगंधि से बयार उन्मत्त है, जहां संसार का कोलाहल चुप हो गया है, और जहां स्निग्ध ज्योत्स्ना की चादर ओढे 'रीहाना' 'मरजाना' या 'सलमा' कवि की थकी हुई रूह को शांति प्रदान करने आती है। 'अख़तर' ने ठीक अर्थों में चाहे गीत न लिखे हों पर उस की अधिकांश नज़्मे गीतों की-सी मिठास रखती हैं, और पंजाब के नौजवान उन्हें गा गा कर झूमा करते हैं।

बाँसुरी की धुन

बरसात का यह मौसम, यह नीलगू[1] घटाए,
यह बाग़ोबन का आलम, यह गुलफिशा फिज़ाए[2],
यह रस भरी हवाए!
यह रगो बू के तूफा, यह विरज के नजारे,
यह जन्नती ख़याबा[3], जमना के यह किनारे,
यह सीन प्यारे-प्यारे!
यह कोयलों की कूकू, यह मोर की सदाए[4],
यह नाज़नीने आहू[5], औ' यह गरीब गाए,
यह नश्शागू फिज़ाए!
सब्जा[6] निखर रहा है, वादी[7] महक रही है,

---

[1]नीली। [2]फूल बरसाने वाला वातावरण। [3]स्वर्गीय क्यारियां [4]स्वर। [5]मृगछौनी सी तरुणी। [6]हरियाली। [7]घाटी।

नश्शा बिखर रहा है, बुलबुल चहक रही है,
फ़ितरत[1] बहक रही है !
ठहरो मगर यह आवाज़, देखो कहां से आई ?
यह निकहते-फ़ुसूँसाज़[2], किस गुलिस्तां से आई ?
किस आसमा से आई ?
इस बाँसुरी की लय में, अल्लाह क्या असर[3] है ?
इस उड़ने वाली मय में, क्या सेहर कारगर है[4] ?
जो है वह बेख़बर है !
यह कौन इस समय में, बंसी बजा रहा है ?
इस दर्जा मस्त लय में, उलफ़त लुटा रहा है ?
नग़मे बहा रहा है।
देखो तो पास चल कर, शायद है कोई जोगी,
या गाँव से निकल कर, आया है कोई भोगी।
ससार का बरोगी[5] !
शायद कोई रिषी है, सन्यास की लगन में !
शायद कोई मुनी है, मसरूफ़[6] कीर्तन में !
तौहीद[7] के भजन में !
हा आओ पास चल कर, पूछे कि नाम क्या है।
तलवों से आँखें मल कर, पूछें की काम क्या है।
इस का पयाम[8] क्या है ?
ठहरो ज़रा, निगाहें पहचानता हैं इस को,
फ़ितरत की जलवागाहें[9], सब जानती हैं इस को,

---

[1]प्रकृति। [2]मन्त्रमुग्ध कर देनेवाली सुगंधि। [3]प्रभाव। [4]कौन सा भारी जादू किया है। [5]वैरागी। [6]निमग्न। [7]परमात्मा के भजन में। [8]सन्देश। [9]जहाँ प्रकृति अपने पूर्ण प्रकाश में रहती है।

औ' मानती हैं इस को !
हा, हा यह बंसीवाला, चूकी नजर हमारी,
यह बिरज का ग्वाला, है नंद का मुरारी।
औ' आरज़ू[१] हमारी !
इक जोशे सरमदी[२] में, बंसी बजा रहा है,
दुनियाए बे खुदी[३] में, फ़ितने उठा रहा है,
महशर[४] जगा रहा है !
बंसी में से परेशां, नग़में मचल रहे हैं।
या सैकड़ों गुलिस्तां, करवट बदल रहे हैं।
औ' फूल उगल रहे हैं !
यह नग़मे सुन के फ़ितरत, खोई सी जा रही है,
मौसीक़िये मुहब्बत[५] के ज़ख़्म खा रही है,
औ' मुसकरा रही है।

एक देहाती गीत सुन कर

सुनो यह कैसी आवाज़ आ रही है ? कोई गाँवों की लड़की गा रही है।
सहर[६] के धुँधले-धुँधले मज़रों[७] को, शराबे नग़मा[८] से नहला रही है।
उठी है शायद आटा पीसने को, कि चक्की की सदा[९] भी आ रही है।
ग़मों से चूर अपने नन्हे दिल को, तराना[१०] छेड़ कर बहला रही है।
फ़िज़ा[११] पर, बस्तियों पर, जंगलों पर, धुआँधार एक बदली छा रही है।
छमाछम मेह की बूँदे पड़ रही हैं, कि सावन की परी कुछ गा रही है।
यह बादल हैं कि हैं सावन के सपने, हवा जिन को उड़ा कर ला रही है।
यह बिजली है कि इक मरमर की नागिन, धुएं के झील पर लहरा रही है।

---

[१]आकांक्षा। [२]मस्ती के जोश में। [३]निमग्नता के संसार में। [४]प्रलय। [५]प्रेम-संगीत। [६]प्रातःकाल। [७]दृश्यों। [८]संगीत की सुरा। [९]आवाज। [१०]संगीत। [११]प्रकृति।

यह बूँदें हैं कि बिजली आसमा से, सितारे तोड़ कर बरसा रही है।
यह बादल की गरज, बिजली का कड़का, ख़ुदाई सारी लरजी[1] जा रही है।
मगर वह ग़मजदा[2] मासूम[3] लडकी, बराबर गीत गाए जा रही है।
कुछ ऐसा नातवा[4] नगमा है गोया, कोई नन्ही कली मुरझा रही है।
घरों पर, खेतियों पर, क्यारियों पर, उदासी ही उदासी छा रही है।
यह घर सुसराल होगा शायद इस का, जभी मा बाप की याद आ रही है।
जभी मसरूफ़[5] है आहोफ़ुग़ा[6] में, जभी गमगीन लय में गा रही है।

"यह बरखा रुत भी बीती जा रही है!
हवा जो गाँव को महका रही है, मेरे मैके से शायद आ रही है!
घटा की ऊदी-ऊदी चुनरियों से, मेरी सखियों की बू-बास आ रही है।
मुझे लेने न आए अच्छे बावल, तुम्हारी याद आफत ढा रही है।
मेरी अम्मा को हा इस की ख़बर क्या, कि चपा इस जगह घबरा रही है।
न ली भैया ने भी सुध-बुध हमारी, जहा से चाह उठती जा रही है।
भला क्यों कर थमें आँसू कि जी पर, उदासी की बदरिया छा रही है।
गया पीगें बढ़ाने का ज़माना, वह अमरय्यों पै कोयिल गा रही है।"
योंही वह अपनी ग़मगीं रागनी से, दरो-दीवार को तड़पा रही है।
सियाही उड़ती जाती है उफक[7] से, अरूसे-सुब्ह[8] बढती आ रही है।
शिवाले में गजर[9] भी जाग उट्ठा, ठनाठन-ठन की आवाज़ आ रही है।
कोई चिड़िया निकल कर घोंसले से, घने जगल मे मंगल गा रही है।
कोई बकरी कहीं करती है में-में, कोई बछिया कहीं चिल्ला रही है।
मगर इन सब से वे परवा वह लड़की, बराबर गीत गाए जा रही है।
इसे सुन-सुन के कब तक सर धुनोगे? बस 'अख़तर' सोने दो, नींद आ रही है।

---

[1]काँपी। [2]दुखी। [3]सरल हृदय। [4]दुर्बल। [5]सलग्न। [6]शोकोद्गार। [7]प्राची। [8]सुबह की दुलहन। [9]घंटा।

परदेसी की प्रीत

परदेसी की प्रीत है झूठी, झूठी परदेसी की प्रीत !
हारे हुए की जीत है झूठी, दुनिया की यह रीत है झूठी,
परदेसी की प्रीत है झूठी, झूठी परदेसी की प्रीत !

परदेसी से दिल का लगाना, बहते पानी में है नहाना !
कोई नहीं नदिया का ठिकाना, रमते जोगी किस के मीत ?
परदेसी की प्रीत है झूठी, झूठी परदेसी की प्रीत !

उड़ती चिड़िया गाती जाए, मीठा गीत मिठास बहाए,
यूं परदेसी मन को लुभाए, उड़ गई चिड़िया उड़ गया गीत !
परदेसी की प्रीत है झूठी, झूठी परदेसी की प्रीत !

मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है !

('कलियां' से)

न फूलों की तमन्ना[1] है, न गुलदस्तों की हसरत है,
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है !

अभी उलटा नहीं बादे-बहारी[2] ने नक़ाब[3] इन का,
अभी महफ़ूज[4] है इक ख़िलवते रगीं[5] में ख़्वाब इन का,
अभी सरमस्तियों में रात दिन सोने की आदत है।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है !

अभी टूटा नहीं सूरज की किरनों से हिजाब[6] इन का,
अभी रुसवा[7] नहीं है गुलफ़रोशों[8] में शबाब[9] इन का,

---

[1]आकांक्षा। [2]वसंत का समीरण। [3]घूँघट। [4]सुरक्षित। [5]रंगीन एकांत। [6]लज्जा। [7]बदनाम। [8]फूल बेचनेवालों। [9]जवानी।

अभी छाई हुई दोशीजगी[1] की सादा रंगत है।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है!

बहारिस्तान के मंदिर की इन को देवियां कहिए,
जो गुल को कृष्ण कहिए, इन को उस की गोपियां कहिए,
कोई जाने मलाहत[2] है कोई जाने सबाहत[3] है।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है!

कोई छूले अगर इन को, तो यह कुम्हला के रह जाए,
हया[4] में इस क़दर डूबे कि बस मुरझा के रह जाए,
अभी अल्हड़पने के दिन हैं, शरमाने की आदत है।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है!

मेरा बस हो तो 'अख़्तर' मैं इन्हीं का रंग हो जाऊं!
हमेशा के लिए इन चपई परदों में सो जाऊं!
मुझे इन की रसीली गोद में मरने की हसरत है।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है!

ऐ इश्क़ हमें बर्बाद न कर

ऐ इश्क न छेड़ आ आ के हमें, हम भूले हुओं को याद न कर,
पहले ही बहुत नाशाद[5] हैं हम, तू और हमें नाशाद न कर,
किस्मत का सितम[6] ही कम नहीं कुछ, यह ताज़ा सितम ईजाद[7] न कर,
यों ज़ुल्म न कर बेदाद[8] न कर, ऐ इश्क़ हमें बरबाद न कर!

---

[1]कौमार्य। [2]हलका रंग। [3]लाल और श्वेत रंग। [4]शर्म। [5]दुखी। [6]अत्याचार। [7] आविष्कार। [8] ज़ुल्म।

जिस दिन से बँधा है ध्यान तेरा, घबराए हुए से रहते हैं,
हर वक़्त तसव्वुर[1] कर-कर के, शरमाए हुए से रहते हैं,
कुम्हलाए हुए फूलों की तरह, कुम्हलाए हुए से रहते हैं,
पामाल[2] न कर, बर्बाद न कर, ऐ इश्क़ हमे बर्बाद न कर!

जिस दिन से मिले हैं, दोनों का, सब चैन गया आराम गया,
चेहरों से बहारे-सुब्ह गई, आँखों से फ़रोग़े शाम[3] गया,
हाथों से ख़ुशी का जाम छुटा, ओठों से हँसी का नाम गया,
ग़मगीन बना, नाशाद न कर, ऐ इश्क़ हमे बर्बाद न कर!

रातों को उठ-उठ रोते हैं, रो-रो के दुआएं करते हैं,
आँखों मे तसव्वुर, दिल में ख़लश, सर धुनते हैं, आहें भरते हैं,
ऐ इश्क़ यह कैसा रोग लगा, जीते हैं, न ज़ालिम मरते हैं,
यह ज़ुल्म तू ऐ जल्लाद न कर, ऐ इश्क़ हमे बर्बाद न कर!

दो दिन मे ही इहदे तिफ़ली[4] के, मासूम[5] ज़माने भूल गए,
आँखों से व' ख़ुशिया मिट-सी गई, लब[6] को वे तराने भूल गए,
उन पाक[7] बहिश्ती ख़्वाबों[8] के, दिलचस्प फ़िसाने भूल गए,
इन ख़्वाबों से यू आज़ाद न कर, ऐ इश्क़ हमे बरबाद न कर!

उस जाने हया[9] का बस नहीं कुछ, बेबस है पराए बस मे है,
बेदर्द दिलों को क्या है ख़बर, जो प्यार यहा आपस मे है,
है बेबसी ज़हर और प्यार है रस, यह ज़हर छिपा इस रस मे है,
कहती है हया फ़रयाद न कर, ऐ इश्क़ हमे बर्बाद न कर!

---

[1]कल्पना [2]परदलित। [3]सध्या की रौनक। [4]बचपन का ज़माना। [5]सरल। [6]ओंठ। [7]पवित्र। [8]स्वर्गीय स्वप्न। [9]देश के मित्र।

निर्वासित

('ओ देस से आनेवाले बता' से)

ओ देस से आनेवाले बता, किस हाल में है याराने वतन?
आवाराए-गुरबत[1] को भी सुना, किस रंग में है कनआने[2] वतन?
वे बाग़े वतन फ़िरदौसे वतन, वे सरवे[3] वतन रीहाने[4] वतन?
ओ देस से आनेवाले बता!

क्या अब भी वहा के बाग़ों मे, मस्ताना हवाएं आती हैं?
क्या अब भी वहा के परबत पर, घनघोर घटाए छाती हैं?
क्या अब भी वहा की बरखाए, वैसे ही दिलों को भाती हैं?
ओ देस से आनेवाले बता!

क्या अब भी वतन मे वैसे ही, सरमस्त नज़ारें होते हैं?
क्या अब भी सुहानी रातों को, आकाश पै तारे होते हैं?
जो खेल हम खेला करते थे, क्या अब भी वे सारे होते हैं?
ओ देस से आनेवाले बता!

क्या शाम पड़े सडकों पै वही, दिलचस्प अँधेरा होता है?
औ' गलियों की धुँधली शमओं पर, सायों का बसेरा होता है?
बाग़ों की घनेरी शाख़ों में, जिस तरह सबेरा होता है!
ओ देस से आनेवाले बता!

क्या अब भी वहा वैसी ही जवा, और मदभरी रातें होती हैं?
क्या रात भर अब भी गीतों की, औ' प्यार की बातें होती हैं?
वे हुस्न के जादू चलते हैं, वे इश्क़ की घातें होती हैं?
ओ देस से आनेवाले बता!

क्या अब भी वहा के पनघट पर, पनहारिया पानी भरती हैं?

---

[1] निर्वास में भटकने वाले। [2-4] वृक्ष विशेष।

अँगड़ाई का नक्शा बन-बन कर, सब माथे पै गागर धरती हैं ?
औ' अपने घरों को जाते हुए, हँसती हुई चुहलें करती हैं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

बरसात के मौसम अब भी वहा, वैसे ही सुहाने होते हैं ?
क्या अब भी वहा के बाग़ों में, झूले औ' गाने होते हैं ?
औ' दूर कहीं कुछ देखते ही, नौ-उम्र दीवाने होते हैं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी पहाड़ी चोटियों पर, बरसात के बादल छाते हैं ?
क्या अब भी हवाए साहिल[1] के, वे रसभरे झोंके आते हैं ?
क्या रसिया[2] की ऊँची टेकरी पर, लोग अब भी रसिया[3] गाते हैं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी पहाड़ी घाटियों मे, घनघोर घटाए गूँजती हैं ?
साहिल के घनेरे पेड़ों में, वर्षा की हवाए गूँजती हैं ?
झींगुर के तराने जागते हैं, मोरों की सदाए गूंजती हैं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

क्या शहर के गिर्द अब भी हैं रवा[4], दरयाए हसीं[5] लहराए हुए ?
ज्यों गोद में अपनी मन को लिए, नागन हो कोई थर्राए हुए ?
या नूर की हँसली हूर[6] की गरदन मे हो अया[7] बल खाए हुए ?
ओ देस से आनेवाले बता !

क्या शाम को अब भी जाते हैं, अहबाब[8] किनारे दरिया पर ?
वे पेड घनेरे होते हैं, शादाब[9] किनारे दरिया पर ?
औ' प्यार से आकर झाँकता है, महताब[10] किनारे दरिया पर ?
ओ देस से आनेवाले बता !

---

[1]समुद्रतट की वायु। [2]स्थान विशेष। [3]एक गीत। [4]बहता हुआ। [5]सुंदर नदी। [6]सुंदरी। [7]स्पष्ट। [8]मित्र। [9]लहरानेवाले। [10]चाँद।

क्या आम के ऊँचे पेड़ों पर, अब भी वह पपीहे बोलते हैं ?
शाख़ों के हरेरी[1] परदों में, नगमों के ख़ज़ाने खोलते हैं ?
सावन के रसीले गीतों से, तालाब मे अमरस[2] घोलते हैं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी गजरदम[3] चरवाहे, रेवड़ को चराने जाते हैं ?
औ' शाम के धुँधले सायों के हमराह[4] घरों को आते हैं ?
औ' अपनी रसीली बाँसरियों में, इश्क के नग़मे गाते हैं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

क्या 'भाँची' पै अब भी सावन में, वर्षा की बहारें छाती हैं ?
मासूम घरों से भोर भए, चक्की की सदाएं आती हैं ?
औ' याद में अपने मैके की, बिछुड़ी हुई सखिया गाती हैं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

शादाबो शगुफ्ता[5] फूलों से, मामूर[6] हैं गुलज़ार[7] अब कि नहीं ?
बाज़ार में मालन लाती है, फूलों के गुँधे हार अब कि नहीं ?
औ' शौक़ से टूटे पड़ते हैं, नौख़ेज[8] खरीदार अब कि नहीं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

क्या हम को वतन के बाग़ और मस्ताना फिज़ाएं भूल गईं ?
वर्षा की बहारें भूल गईं, सावन की घटाएं भूल गईं ?
दरया के किनारे भूल गए, जंगल की हवाएं भूल गईं ?
ओ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी किसी के सीने में, बाक़ी है हमारी चाह बता ?
क्या याद हमें भी करता है, यारों में कोई आह बता ?
ओ देस से आनेवाले बता, लिल्लाह बता लिल्लाह बता !
ओ देस से आनेवाले बता !

---

[1]हरे। [2]अमृत। [3]सवेरे। [4]साथ। [5]ताजा और खिले हुए। [6]भरे हुए। [7]बाग। [8]युवक।

अमरचंद 'क़ैस'

क़ैस साहब ने वास्तव में गीत लिखे हैं। इस रंग मे उन की कविताएं किसी न किसी राग अथवा रागिनी के आधार पर लिखी गई है और जोग, बिहाग, दरबारी कानड़ा, केदारा आदि किसी न किसी में गाई जा सकती हैं। संगीतमय होने के अतिरिक्त उन की कविता 'भाषा की कविता' है। शब्दों के चुनाव मे विशेष चातुर्य से काम लिया गया है और प्रायः यमक आदि अलंकारों ने कविता मे चमत्कार पैदा कर दिया है।

गंगा से

तू नदियों की रानी, गगे! तू नदियों की रानी।

तेरे पानी के आगे है, अमृत पानी-पानी[1], गगे!
तू नदियों की रानी।

प्यारे-प्यारे गाने तेरे, मीठी-मीठी बानी, गगे!
तू नदियों की रानी।

झूम-झूम कर बहती है तू, तेरी चाल सुहानी, गगे!
तू नदियों की रानी।

---

[1]पानी-पानी होना के अर्थ हैं—लजा जाना। सीधे-सादे अर्थ में कवि कहत है कि 'ऐ गगा तेरा पानी इतना हितकर है कि उस के आगे अमृत भी शर्मा कर रह जाता है।' पानी का अर्थ आब (चमक) भी होता है। पहले पद में पानी का अर्थ चमक लेने से भाव और भी सुदर हो जाता है और फिर इस पानी के साथ पानी-पानी आ जाने से कितनी ख़ूबी पैदा हो गई है—यही भाषा की कविता है। क़ैस की कविता में भाषा की सुंदरता पग-पग पर मिलेगी, शब्दों का चुनाव ऐसा होगा कि अनायास दाद देने को जी चाहेगा।

मेरा जीवन

तू जीवन है मेरा, प्रियतम ! तू जीवन है मेरा।

तुझ से चारों कूँट उजाला, तुझ बिन घोर अँधेरा।
प्रियतम ! तू जीवन है मेरा।

तुझ बिन दिन है, रैन भयानक, तुझ से साँझ, सवेरा।
प्रियतम ! तू जीवन है मेरा।

ज़हर हलाहल, तेरी दूरी, अमृत दर्शन तेरा।
प्रियतम ! तू जीवन है मेरा।

क्या उस दम साजन आएगा ?

जब कली-कली गिर जाएगी, औ' फूल-फूल मुरझाएगा,
जब रूख-रूख सूना होगा, बूटा-बूटा कुम्हलाएगा,
जब पत्ता-पत्ता सूखेगा, भँवरा-भँवरा उड़ जाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?

जब ठंडी-ठडी वायू, आहें भर-भर कर सो जाएँगी,
जब नीली-नीली, काली-काली बदली गुम हो जाएगी,
जब रूखा-रूखा फीका-फीका समा जगत पर छाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?

जब दुखिया पापी नैन मेरे, थक-थक जाएँगे रो-रो कर,
जब इक-इक दुख, इक-इक सकट छा जाएगा मेरे मन पर,
जब तड़प-तड़प औ' कलप-कलप कर दम बाहर हो जाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?

उन बिन

किस बिध बीतेगी, उन बिन काली रात ?

बिजली पल-पल छिन-छिन तड़पे, बादल कड़-कड़, कड़-कड़ कड़के,
पानी रिम-झिम रिम-झिम बरसे, आई यौवन पर बरसात !

मै भरती हूं ठंडी आहें, मै तकती हूं उन की राहें।
वह, औ' मुझ पापिन को चाहे ? यह तो है अनहोनी बात !

क्या जाने क्या गुजरे मुझ पर ? जी घबराता है रह-रह कर !
ऐसा सूना है उन बिन घर, जैसे कोई रुख बिन पात !

पपीहा

बरछी तेरी पुकार, पपीहे, बरछी तेरी पुकार !

तेरी लय मे तीर भरे हैं, तेरे गाने नश्तर-से हैं,
तेरी कूक, कटार, पपीहे, बरछी तेरी पुकार !

बादल आए पी नहीं आए, बिजली-सी मन पर लहराए,
पी-पी बारबार, पपीहे, बरछी तेरी पुकार !

रात अँधेरी पानी बरसे, धक-धक-धक धड़के जी डर से,
सूना है घर-बार, पपीहे, बरछी तेरी पुकार !

आ मिल गाएं गीत !

नीली-नीली बदली छाई, ठंडी-ठंडी वायू आई।
हलकी-हलकी बूँदे बरसें, नैन तेरे दर्शन को तरसें।
आ' मिल गाए गीत ! साजन, प्रीत हमारी रीत !

मद-मद कलिया मुसकाए, झूम-झूमें वेलें लहराए !
तुझ बिन रह-रह जी घबराए, तू आए तो मन कल पाए।
यह अपनी हो शीत ! साजन, प्रीत हमारी रीत !

आ मिल-मिल कर झूला झूलें, जग के सारे सकट भूलें,
सैर करें हम प्रेम-नगर की, आ जा, बरखा की यह रुत भी,
जाय न यों ही बीत ! साजन, प्रीत हमारी रीत !

दर्शन-प्यासी

प्रियतम मुख दिखला !
मुझ से तू क्यों रूठ गया है, मेरा दोष बता ?
प्रियतम मुख दिखला !
मेरी जा[1] नयनों मे आई, और न अब तडपा।
प्रियतम मुख दिखला।
मैं हू तेरी, तेरी हू मै, तू मेरा हो जा।
प्रियतम मुख दिखला !

याद

सुदर-सुदर, कोमल-कोमल, प्यारे-प्यारे फूल खिले।
पीले-पीले, लाल-लाल औ' न्यारे-न्यारे फूल खिले।
नन्ही-नन्ही कलिया रह-रह, मद-मद मुसकाती हैं।
ठडी-ठडी हलकी-हलकी वायू से लहराती हैं।

मन को हर-हर लेनेवाला, सब्ज-सब्ज, सब्जा लहका।
क्यारी-क्यारी बाग़-बाग़, है सब वायू-मडल महका।

---

[1]जान।

नर्म-नर्म, शाख़े मस्ती में झूम-झूम लहराती हैं।
हरी-हरी बेलें पेड़ों से लिपटी-लिपटी जाती हैं।

उजले-उजले पंछी, ख़ुश-ख़ुश गाते-गाते उड़ते हैं।
उडते-उड़ते गाते हैं औ' गाते-गाते मुड़ते हैं।
कलिया ख़ुश हो-होकर, हँस-हँस कर कुंजों में गाती हैं।
झूला झूल-झूल कर मीठी-मीठी तान उड़ाती हैं।

पर इक बेमुख पर जा दे-दे कर मैं जीवन खोती हू!
उस की याद में रह-रह कर मैं आँसू हार पिरोती हूं!

अज़मत अल्लाह खां

श्री अख़तर हुसैन रायपुरी लिखते हैं—"स्वर्गीय अज़मत अल्लाह ने जब कविता शुरू की उस समय वे जवानी की चौखट पर खड़े थे, दूसरे नौजवानों की तरह उन के लिए भी दुनिया बाग़ों और बहारों के सिवा कुछ न थी। उन के दिल मे भी रूप की प्यास थी। उन की कविता भी जवानी के रस में डूबी हुई है। लेकिन उस में एक दर्द है मीठा-मीठा, उस में एक कसक है आनंद देने वाली! उसे पढने के बाद ऐसा मालूम होता है जैसे कोई नशा उतर गया है जैसे किसी ख़ूबसूरत चीज़ के पास से हम उठ कर चले आए है।"

उन के छंदों और उन की कविता में करुण-रस के संबंध में मैं पहले लिख चुका हूं। यहां केवल इतना लिखना चाहता हूं कि अज़मत अल्लाह दिल्ली के निवासी थे, वहां से डिग्री ली और हैदराबाद के शिक्षा-विभाग में इन्सपेक्टर नियुक्त हुए। आप के जीवन का उद्देश्य उर्दू-हिंदी को एक ही लड़ी मे पिरोना था। किंतु मृत्यु ने इस होनहार युवक को हम से छीन लिया। अभी आपने २६ बहारें भी न देखी थीं कि १९२८ में आप का देहांत हो गया।

तुम्हें याद हो कि न याद हो

ये पड़ोसी हम, पै यह हाल था कि घरों में खिड़की बनाई थी।
ये अज़ीज़[1] हम, यह ख़याल था कोई ग़ैर[2] न हम में पराई थी।
तुम्हें याद हो कि न याद हो?

---

[1]प्रिय। [2]वस्तु।

वह जो खेलते थे हँसी-हँसी, हमें खेल की सभी बात थी,
न बुरी-बुरी, न भली-भली, यही धुन थी दिन, यही रात थी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?
वह लड़ाइया भी कभी-कभी, कभी रूठना, कभी मन गए,
अभी कन्निया तो मिलाप अभी, अभी चुटकिया, अभी कहकहे,
तुम्हे याद हो कि न याद हो ?
वह हमारी आँख-मचोलिया, वह छिपों को ढूँढ निकालना,
यू ही नाचना, यू ही तालिया, यू ही हाथ पैर उछालना,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?
वह तुम्हारी गुड़िया की शादिया, वह मेरा बरात का इतज़ाम[१],
मेरा बाजा टीन का, सीटिया, बड़ा शोरो-ग़ुल, बड़ी धूम-धाम,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?
मेरा बन के क़ाज़ी वह बैठना, कि बयान इस का फ़ज़ूल है,
मेरा पूछना वह कड़क के—'क्या मिया गुड्डे गुड़िया क़बूल है ?'
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?
तुम्हें उन्स[२] था तो मुझी से था, था लड़कपना पै यह हाल था,
मेरी बात ने तुम्हें ख़ुश किया, मेरा अपना दिल भी निहाल था,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?
यों ही खेल-खेल के जब कभी, कोई दूल्हा बनता दुल्हन कोई,
मेरी तुम हमेशा बन्नी[३] बनी, बहुत इस पै उड़ती थी जो हँसी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?
हमें क्या ख़बर थी बसत की, गए दिन भी औ' वह पड़ोस भी,
था पढ़ाई से न निचित[४] जी, पड़ी यादे-तिफ़ली[५] पै ओस-सी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

---

[१]प्रबंध। [२]प्रेम। [३]नव-वधू। [४]निश्चिंत। [५]बचपन की स्मृति।

मुझे दी पढ़ाई ने फिर निजात[1], लगी आने व्याह की अक्ल भी,
मुझे याद आई पराई बात, वह तुम्हारी भोली-सी शक्ल भी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?
हुआ याद से मुझे जोश भी, पै यह याद ख़्वाब की नक़्ल थी,
न था इन दिनों कोई होश भी, गए दिन दिनों की शक्ल भी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

बरसात

(मुक्त छंद में)

आए बादल काले-काले,
झूमते हाथी मतवाले,
उड़ते, फिरते, तुलते, झुकते,
एक अँधेरी देकर छाए,
डेरे चार तरफ़ डाले।
पवन के घोड़े सहमे ठिठके,
जिस ने दिल पर बोझ-सा रक्खा,
गर्मी से दिल घबराया,
एक ख़मोशी, सन्नाटा-सा।
वह आकाश के बिगड़े तेवर,
त्योरी पर बल-सा आया,
बरसेगा औ' बरसाएगा।
बिजली चमकी अँगारा-सी,
आग की नागन लहराई,
लहरिया काढ़ा, बेल बनाई,

[1] मुक्ति।

भाप के दरिया मे क़ुदरत[1] ने,
नूर[2] की मछली तैराई,
इधर-उधर तड़पी तड़पाई।
बादल बिखरे, नीला अम्बर,
डूबते सूरज ने झाँका।
किरण सुनहरी, तिरछी-तिरछी,
बिखर हवा मे, खुलती-खेलती,
मेघ का सारा रग लिया,
आकाश पै इक आग लगाई।
नीला अम्बर, तनहा सूरज,
रग मे डूबे हुए बादल,
खुली फुनगों में हलकी धूप।
धोई नहाई भूमी सुंदर,
सर पै सुनहरा-सा आँचल,
क़ुदरत का एक सुहाना रूप!

दिल न यहां लगाइए

दाम[3] में या न आइए, दिल न यहा लगाइए,
जान मिली है इस लिए दुख में उसे गॅवाइए!
उम्र हवा है कुछ नही, साँस मे सब उड़ाइए,
दाम में या न आइए, दिल न यहा लगाइए!

इस का इलाज कुछ नहीं, दिल मे अगर वफ़ा[4] न हो,
फूल में जैसे रग हो, बास का कुछ पता न हो!

---

[1]प्रकृति। [2]ज्योति। [3]जाल। [4]आसक्ति।

दुःख उठाइए मगर, आह न लब पै लाइए,
दाम में या न आइए, दिल न यहां लगाइए!

गोरख-धंधा

एक ख़लश-सी, एक चुभन-सी जिस में मज़ा भी आता है,
जान की तह में बैठा है कुछ बेचैनी या खटका है।
चुटकियां बैठा लेता कोई, एक खटकता-सा कांटा,
एक ख़लश-सी एक चुभन-सी जिस में मज़ा भी आता है।

सॉस के झोंकों से यह शगूफा[1] जान का जब तक खिलता है,
सुख-दुख का है गोरख-धंधा दिल का लंगर हिलता है।
कोई छिप कर दिल में इस वीणा के तार बजाता है,
एक ख़लश-सी, एक चुभन-सी जिस में मज़ा भी आता है।

वह 'आज' हूं जिस का 'कल' नहीं है

कोई शै बुरी भली नहीं है, कोई बात या अटल नहीं है,
यह है जिंदगी अजब पहेली, कोई इस का या तो हल नहीं है।
वह हूं फूल, जिस का फल नहीं है! वह हूं 'आज', जिस का 'कल' नहीं है!
अभी कुछ न हुई थी सयानी, कि उठा बड़ों का सिर से साया,
तो ज़माने ने यह पलटा खाया, कि किसी को फिर न अपना पाया।
न ख़बर ज़रा भी ली किसी ने, पड़े अपनी जान ही के लाले,
मेरे सामने खड़े थे फाक़े[2], पड़ी क्या ग़रज किसी को, पाले।
यह कड़े दिलों की तोताचश्मी[3], मेरे दिल में तीर-सी है बैठी,
गई मन के फूल की तरावत[4], उड़ी ओस की तरह से नेकी।

---

[1]बिनखिली कली। [2]उपवास। [3]आँखें फेर लेना। [4]ताजगी।

न रहा किसी पै कुछ भरोसा, न रहा कोई मेरा सहारा,
न रही किसी की मैं ही प्यारी, न रहा कोई मेरा ही प्यारा!
वह हूं फूल, जिस का फल नहीं है। वह हूं 'आज', जिस का 'कल' नहीं है!
जिसे देखो अपने दाँव में है, चला दाँव और वह पछाड़ा,
कि यह जिंदगी है एक कश्ती, यह जहां है इक बड़ा अखाड़ा।
वह हूं फूल जिस का फल नहीं है! वह हूं 'आज' जिस का 'कल' नहीं है!

मेरा वतन

मेरी जान हो कि मेरा बदन, तेरी जल्वागाह[1] है ऐ वतन[2],
तेरी ख़ाक उन का ख़मीर[3] है!

मेरे ख़ून में है झलक तेरी, मेरी नब्ज[4] में है चमक तेरी,
मेरा साँस तेरा सफ़ीर है!

जिन्हें प्रीत है उन्हें जीत है, यही जग में जीत की रीत है,
तेरे दिल जिगर भी हैं बेवफ़ा[5]!

हमें ग़ैरियत[6] यह मिटानी है, हमे जीत आप यह पानी है,
कि हो भाई-भाई से आशना!

मेरी जान हो कि मेरा बदन, तेरी जल्वागाह है ऐ वतन,
तेरी ख़ाक उन का ख़मीर है।

---

[1]जल्वे का स्थान, अर्थात् मेरी जान और मेरे शरीर में ऐ देश तेरा ही रूप प्रकट है। [2]देश। [3]तेरी ख़ाक से वे पैदा हुए हैं। [4]नाडी। [5]कृतघ्न, प्रेम-रहित। [6]दुराव।

डाक्टर मुहम्मद दीन 'तासीर'

एम० ए० ओ० कालेज अमृतसर के प्रिंसिपल डाक्टर मुहम्मद दीन 'तासीर' का नाम उर्दू के साहित्यिकों मे बडे अदब से लिया जाता है। सीधी-सादी और सरल भाषा के साथ भावों की उडान दिखाने मे आप को कमाल हासिल है। भाषा को आप व्याकरण और प्रथा की बेडियों में बाँधने को बजाय ध्वनि और संगीत की ज़ंजीरों मे बाँधना अधिक पसंद करते हैं, और इस के लिए हिंदी तो दूर यदि ठेठ पंजाबी भाषा का मुहावरा प्रयोग में लाना पडे तो नहीं झिझकते। रस, मिठास, और संगीत में आप की कविताएं डूबी होती हैं।

कब आओगे प्रीतम प्यारे ?

कब आओगे प्रीतम प्यारे !

कब आओगे प्रीतम प्यारे ! कब आओगे प्रेम-द्वारे !
रह गए पाओं चलते-चलते, थक गईं आँखें रस्ता तकते,
कब आओगे प्रीतम प्यारे !

एक किनारे महल तुम्हारा, एक तरफ़ हम पीत के मारे,
बीच में नदिया, तुद[1] हवाएं, कैसे आए, कैसे जाए !
कब आओगे प्रीतम प्यारे !

फूल खिले हैं बाग़ में हरसू[2], दुनिया में फैली है ख़ुशबू,
ऊँची-ऊँची हैं दीवारें, कब तक सिर दीवार से मारे !
कब आओगे प्रीतम प्यारे !

---

[1]तेज। [2]हर ओर।

खाना, पीना, सोना कैसा ? हँसना कैसा, रोना कैसा ?
चार तरफ छाई है उदासी, घर में रह कर हैं बनबासी !
कब आओगे प्रीतम प्यारे ?

देवदासी

बाल सँवारे माँग निकाले, दुहरा तेहरा अचल डाले,
नाक पै बिंदी कान में बाले, जग-मग जग-मग करनेवाले।

माथे पै चदन का टीका, आँख में अजन फीका-फीका।
शबगू[1] काली-काली आँखें, मदमाती, मतवाली आँखें,
जोबन की रखवाली आँखें।
आँख झुकाए लट छिटकाए, जाने किस की लगन लगाए ?
बिरह उदासी, दर्शन-प्यासी, देवादासी[2] नदी किनारे,
प्रेम द्वारे, तन मन हारे,
यों ही अपने आप खड़ी है ! बुत बन कर चुपचाप खड़ी है !

मान भी जाओ !

मान भी जाओ, जाने भी दो, छोड़ो भी अब पिछली बातें।
ऐसे दिन आते हैं कब-कब, कब आती हैं ऐसी रातें ?
मान भी जाओ, जाने भी दो !
देख लो वह पूरब की जानिब, नूर ने दामन फैलाया है।
शब की खिलअत[3] दूर हुई है, सूरज वापस लौट आया है।
मान भी जाओ जाने भी दो !
जल-जल कर मर जानेवाले, परवानों का ढेर लगा है।

---

[1]रात की तरह काली। [2]देवदासी। [3]वह पोशाक जो सम्राट् की ओर से पुरस्कार में दी जाती है—यहाँ केवल वस्त्र से अभिप्राय है। दीप-शिखा।

लेकिन यह भी देखा तुमने, शमअ का क्या अंजाम हुआ है!
मान भी जाओ, जाने भी दो!
मान भी जाओ, तुम को क़सम है, मेरे सर की, अपने सर की।
तुम को क़सम है, मेरे दुश्मन, अपने उस मग़रूर नज़र की।
मान भी जाओ जाने भी दो।
उस की क़सम है, जिस की ख़ातिर, यों तुम मुझ को भूल गए हो!
भूल गए हो सारे वादे, क़ौलो क़सम को भूल गए हो!
मान भी जाओ, जाने भी दो!
अच्छा तुम सच्चे, मैं झूठा, अच्छा तुम जीते, मैं हारा।
क्या दुश्मन और किस का दुश्मन, झूठा था यह सारा क़िस्सा।
मान भी जाओ, जाने भी दो।

कब तक उस को याद करोगे?

मेरी वफ़ाएं याद करोगे, रोओगे फ़रयाद करोगे।
मुझ को तो बर्बाद किया है, और किसे बर्बाद करोगे।
हम भी हँसेंगे तुम पर एक दिन, तुम भी कभी फ़रयाद करोगे।
महफ़िल की महफ़िल है ग़मगीं, किस-किस का दिल शाद[1] करोगे?
दुश्मन तक को भूल गए हो, मुझ को तुम क्या याद करोगे?
ख़त्म हुई दुश्नाम तराज़ी[2], या कुछ और इरशाद[3] करोगे?
जाकर भी नाशाद किया था, आकर भी नाशाद करोगे।
छोड़ो भी 'तासीर' की बातें, कब तक उस को याद करोगे?

एकांत की आकांक्षा

मुझ को तन्हा[4] रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो!

---

[1]प्रसन्न। [2]गाली निकालना। [3]कहना (फ़रमाना)। [4]एकाकी।

.खुश रहता हूं अच्छा हूं मैं, दुख सहता हूं सहने दो !
मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
मेरे दिल की आग बुझा दी, आहें भरनेवालों ने।
मेरी ढढक खो दी है, इन उलफत करने वालों ने।
मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
मुझ का मुझ से छीन लिया है, मेरे अपने प्यारों ने।
टुकड़े-टुकड़े कर डाला है, प्रेमभरी तलवारों ने।
मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
ढांप लिया है मेरा तन-मन, नाजुक नाजुक[1] पर्दों में।
छोड दो मुझ को, दम घुटता है मेरा तुम हमदर्दों में।
मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
.कैद किया है तुम ने मुझ को उलफत के बुतखाने में।
महव[2] हुआ जाता हूं मैं अब आप अपने अफसाने में।
मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
चार तरफ से घेर लिया, मैं तुम मे खोया जाता हूं।
अब मैं अपनी आंखों से भी ओझल होता जाता हूं।
मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
मेरी इक तस्वीर ख़याली[3] तुम ने आप बना ली है।
मुझ को तुम से प्यार नहीं है, अपनी मूरत प्यारी है।
मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !

---

[1]कोमल-कोमल। [2]मग्न। [3]काल्पनिक।

मक़बूल हुसैन अहमदपुरी

श्री मक़बूल हुसेन भक्ति-रस के कवि हैं। उन के हृदय में निरंतर एक स्निग्ध प्रेम, एक अपार भक्ति की नदी हिलोरें लेती रहती है। उर्दू के इस युग में यदि हम उन्हें 'भक्ति काल का कवि' कह दें तो बेजा नहीं। वही मिठास, वही श्रद्धा, तअस्सुब से बहुत दूर मिलाप की वही भावना—उन के गीत भक्ति-रस का एक निरंतर बहने वाला सोता है। इस के साथ ही प्रकृति का चित्र चित्रण करने में और देहात की सादा भावनाओं को ज़बान देने में भी श्री मक़बूल की क़लम ने गीतों के मोती बखेरे हैं। हिंदी के आप जितने समीप हैं उतने कम दूसरे उर्दू कवि हैं। आप की भाषा पर खड़ी बोली की अपेक्षा ब्रजभाषा और स्थानीय भाषा का अधिक प्रभाव है।

पहले-पहल

पहले-पहल जब आँखों आँखों, तुम ने अपना दरस दिया था,
कैसे कोई बतावे स्वामी, मन को तुम ने मोह लिया था।
नई मुसीबत डाली तुम ने, हँस कर आँख छिपाली तुम ने।
कोई जिए या मरे तुम्हें क्या ! अपनी बात बनाली तुम ने !

पहले-पहल जब बात-बात में, जादू अपना तुम ने किया था,
कैसे कहूं तुम से मैं स्वामी, अपनी सुध-बुध भूल चुका था।
नोखी[1] दसा बनाई तुम ने, अपनी धज सिखलाई तुम ने।

---

[1]अनोखी। [2]नौका।

यह जी मिटे जले या झुरसे, अब तो आग लगाई तुम ने।

पहले-पहल जब इन आँखों से, मेह का धारा फूट बहा था,
प्रेम का सागर मेरे स्वामी, खूब भरा था खूब भरा था।
सुख की नदी बहाई तुम ने, जीवन नाव चलाई तुम ने।
यह अहसान भला क्यों भूलूं! कश्ती पार लगाई तुम ने!

पहले-पहल जब तुम ने स्वामी, सर पर मेरे हाथ रखा था,
सुन लो, सुन लो भाग हमारा, सोते-सोते जाग उठा था।
अपने पाँव गिराया तुम ने, मुक्त किया, अपनाया तुम ने।
अब क्या चाहूं सब कुछ पाया, ईश्वर रूप दिखाया तुम ने[1]।

पूरम पार भरी है गंगा

पूरम पार भरी है गगा, खेवनहारे हौले-हौले!

मेघ प्रेम का छाया मन मे प्रियतम बोल, पपीहा बोले।
वर्षा रुत औ' रात अँधेरी, नाव प्रेम की खाय झकोले।

सँभल-सँभल रे प्रेम के जोगी, मन की गाँठ न कोई खोले।
देख देख अनमोल समय है, अपने मन ही मन मे रोले।

नींद प्रेम की सब से प्यारी, दुख सह ले, फिर जी भर सोले।
रीत यही है इस नगरी का, पहले मन की माया खोले।

---

[1]अब तक हिंदी के जिस रूप ने उर्दू पर प्रभाव डाला है वह अधिकतर ब्रज-भाषा है। आधुनिकतम हिंदी कविता को समझनेवाले हिंदी में बहुत कम मिलते हैं, फिर उर्दू की बात तो दूसरी है। मकबूल साहब ने आवश्यकता अनुसार हिंदी से मिलते-जुलते ब्रजभाषा की तर्ज के शब्द बना भी लिए हैं।

पपीहा और प्रेमी

जी बेकल, सीने में धड़कन, उलझे सिर के केस,
पता नहीं शीशे में दिल के लगी किधर से ठेस ?
सुन रे पपीहे, प्रेम के पागल, प्रेमी का सदेस !

आप हीं आप यह जी घबरावे, कहीं न आना-जाना,
अपने को भी भूल गए हम, जब से उन्हें पहचाना।
हा रे पपीहे, प्रेम के पागल, गा दे प्रेम का गाना !

फूल खिले फव्वारे छूटे, रंग-बिरंगी क्यारी,
फिरती है आँखों मे जैसे किसी की सूरत प्यारी।
सँभल पपीहे, प्रेम के पागल, अब है तेरी बारी !

जब से दिल की दुनिया सूनी, सूना सारा देस,
ख़बर नहीं क्यों दिल ने आख़िर लिया बैराग का भेस ?
सुन रे पपीहे, प्रेम के पागल, प्रेमी का सदेस !

मोहनी

देख मनोहर मुख मतवाला, भूला सब जादू बंगाला।
झुके नैन औ' लंबी पलकें, नेह की किरनें पलकों झलकें,
कान बचन को वाके तरसे, बातों बातों अमृत बरसे !
दाए हाथ में थाल दया की, बाए हाथ मे धर्म की पोथी,
अगला पाँव बढ़े सेवा को, पिछला पाँव उठे पूजा को—
बिन सोए कोई सपना देखे, सीने से उर खींच के फेंके।
जग की शोभा उस का जीवन, औ' यह जीवन उस के कारन,
पाथर तज कोई वाको पूजे, नहीं नहीं ब्रह्मा को पूजे !
ब्रह्मा की सुदरता है वह, नहीं मोहनी, ब्रह्मा है वह।

कवि

रात अँधेरी शाम, साँवली, कव्वा देखो दूर से आता,
पख जोड़ कर इमली ऊपर भरे गले से है चिल्लाता,
क्या जाने तब कौन मगन हो इस मेरे दिल में है गाता!

रात चाँदनी, शाम सुनहरी, चाँद आए औ' सूरज जाए,
नदी किनारे घाट के ऊपर, दूर बाँसुरी कोई बजाए,
क्या जाने तब रूठे मन को मिन्नत करके कौन मनाए!

रात अँधेरी औ' सन्नाटा, सन-सन चले हवा दक्खिन की,
पिछले पहर जब झील किनारे इक दम छेड़े राग तलहरी,
क्या जाने तब मेरे दिल में रह-रह लेवे कौन फरहरी!

रात चाँदनी और सवेरा, पानी दरिया का मुसकाता,
कोमल कलिया खोल के आँखे देखे ऊषा का रथ आता,
क्या जाने तब मेरे दिल में कौन मगन होकर है गाता!

पथिक से

मन की आँखें खोल, मुसाफिर, मन की आँखे खोल!
मन में बसे हैं दोनों आलम[1], देख न यह आलम हों बरहम[2],
यहा कभी है ऐश कभी ग़म, हँसता रह औ' रो भी कम-कम.
ऐश औ' ग़म की उठा तराजू, अक्ल की पूँजी तोल!
मुसाफ़िर, मन की आँखें खोल!

दिन गुज़रा औ' निकले तारे, बजी बाँसुरी नदी किनारे,
फूट बहे अश्कों[3] के धारे, दहक उठे दिल के अगारे,

[1]जगत। [2]उलट न जाए। [3]आँसुओं।

सॅभल-सॅभल औ' दिल को बचा ले, मन न हो डाँवाडोल !
मुसाफ़िर, मन की आँखें खोल !
चीख़ रहे हैं लोग जहा के, खुल गए रस्ते यहा-वहा के,
गए वे दिन अब आहो-फ़ुग़ाके[1], उठ गए पर्दे कोनों-मका के[2].
तू भी दिखा जीने के लच्छन, अब तो मुँह से बोल !
मुसाफ़िर, मन की आँखे खोल !

नसीहत

सुख की सुंदर सेज पै तुम ने, सीखा मस्त पड़े रह जाना,
खाना, सोना, हँसना, गाना, चैन मनाना, जी बहलाना,
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना !

बुरा समय आराम में भूले, सुस्ती में सीखा घबराना,
ग़ैरत[3] खोई, लाज गॅवाई, रास न आया पलक लगाना,
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना !

कब तक आख़िर लगा रहेगा, यो अपनी औक़ात[4] गवाना ?
दिन भर फिरना शाम को आना, खाना, पीना औ' सो जाना !
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना !

जहां ज़रा सी ज़िद पर जाकर, हो यो घर में आग लगाना,
ऐसे देस में ऐ 'मक़बूल', भला जीते जी है मर जाना !
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना !

कोयल

सुंदर समय सुहाने दिन, आए वही पुराने दिन,

---

[1]निःश्वास और नाले। [2]संसार। [3]लज्जा। [4]हस्ती।

बोली कोयल 'कू-हू-कू' !
'कू-हू,' 'कू-हू' की मुरली, बन बस्ती में बाज रही।
कोयल, कोयल, सुन तो सही, ऐसी क्यों बेचैन हुई ?
दिल में क्यों यह हूक उठी, किस के कारण कूक उठी ?
कौन समाया है मन मे ? ढूँढ रही किस को बन में ?
क्यों तू ने यह सोग किया ? किस की ख़ातिर जोग लिया ?
'कू-हू' 'कू-हू,' 'कू-हू-कू',
ऐ पागल, बोली कोयल, जीवन क्या जो आए कल ?
तू सब कुछ, फिर भी नादान, जा अपना जीवन पहचान !
'कू-हू, कू-हू, कु-हू कू' !

'वक़ार' ग्रंथावली

वकार साहब के गीत इतने लोकप्रिय हुए हैं कि उन के बहुत से गीतों को कोलंबिया रिकार्ड कंपनी ने अपने रिकार्डों मे भर दिया है । फ़ारसी में ग़ज़लें कहने, उर्दू में नज़्में लिखने और सरल भाषा में मर्मस्पर्शी गीत लिखने मे श्री हफ़ीज़ जालंधरी की भाँति वकार साहब को भी विशेष निपुणता प्राप्त है । दुर्भाग्य यही है कि उन्हे एक दैनिक पत्र में काम करना पड़ता है और अपनी आश्चर्यजनक प्रतिभा को हंगामी नज्मे और वर्ष में ३६५ अग्रलेख लिखने में लगाना पडता है । जितनी जल्दी वकार ग़ज़ल या नज़्म लिखते हैं । वह प्रायः लोगों को आश्चर्य में डाल दिया करती है । आप के गीतों में करुण और वीर रस दोनों का सम्मिश्रण है ।

जीवन

यह जीवन एक कहानी है, कुछ कहता जा कुछ सुनता जा !
इस का अत औ' आद नहीं है, पूरी किसी को याद नहीं है।
आँसू औ' मुसकान कहानी, कहते हैं सब अपनी बानी।
एक कहानी पाप औ' पुन, हँस कर कह या रो कर सुन !
यह जीवन एक कहानी है, कुछ कहता जा कुछ सुनता जा !

कूक पपीहे, कूक !

कूक पपीहे, कूक !
बादल गरजे रैन अँधेरी, सूनी-सूनी दुनिया मेरी,
जीना मेरा हो गया दूभर, आँख लगे ना भूक !
कूक पपीहे, कूक !

तू बनबासी खुल कर रोए, मेरा रोना मुझे डुबोए !
तेरी तरह से नेह लगाया, चूक गई मैं चूक !
कूक पपीहे, कूक !
मैं भी अकेली, तू भी अकेला, मोह का सागर, दुख का रेला;
तेरे गले में पी का फदा, मेरे मन मे हूक ।
कूक पपीहे, कूक !

पिया बिन नागन काली रात !

पिया बिन नागन काली रात !
सेजे सूनी, रात अँधेरी, बालम है परदेस,
डर के मारे जिया निकसत है, कैसे हो परभात[1] ?
सखिया झूमें, मगल गाए, और तलें पकवान,
मैं मन मारे बैठ रही हू, धरे हात पर हात ।
रैन अँधेरी, रूख भयानक, साए साए होत,
टहने उन के भूत बने हैं, नाग के फन हैं पात !
पिया बिन नागन काली रात !

उस पार

आओ चलें उस पार, साजन, आओ चले उस पार !
जीवन-सागर लहरें मारे, वायू[2] चचल, दूर किनारे,
मची है हाहाकार, साजन, आओ चले उस पार !
नाव के अपनी बनें खेवैया, दुख के भँवर से खेले नैया,
काट चलें मँझधार, साजन, आओ चले उस पार !

---

[1]प्रभात । [2]वायु ।

साँस का चप्पू कर दे धीमा, है समीप सागर की सीमा,
जहा है सुख का द्वार, साजन, आओ चलें उस पार !

कौन बँधाए धीर ?

सखी, अब कौन बँधाए धीर ?

याद पिया की है कलपाती, नहीं रात भर निंदिया आती,
हाय वे अँखिया मदमाती, वह मुखड़ा गंभीर !

फूटी किस्मत पलटा पासा, उन का हुआ परदेस में बासा,
टूट चली मेरे मन की आसा, नैनन बरसे नीर !

सावन आया पड़ गए झूले, टपका नीम, करेले फूले,
आवे याद जो मुझ को भूले, लगे कलेजे तीर ?

छम-छम-छम-छम बादल बरसे, अँखिया रोए औ' जी तरसे,
आग विरह की बरसे घर से, जल में जले शरीर !

सखी अब कौन बँधाए धीर ?

आज की रात

प्रीतम, रह जा आज की रात !

आज की रात जियरा धड़के, आज की रात आँख भी फड़के,
जोड़ रही हूं हात, प्रीतम, रह जा आज की रात !

बिजली कड़के बादल बरसे, आज की रात निकल नहीं घर से,
देख भरी बरसात, प्रीतम, रह जा आज की रात !

आज की रात जिया घबराए, आज की रात गई कब आए ?
सुन जा मन की बात, प्रीतम, रह जा आज की रात !

जवानी के गीत

देर से गाना गानेवाले, दुनिया को भरमाने वाले!
दिल में चुटकी कब तक लेगा, दादे हसरत[1] कब तक देगा!
तेरा जादू टूट चुका है, आँख से आँसू फूट चुका है!
छोड़ दे अब यह 'आए-बाए'! आ मिल गीत जवानी के गाए!

हार चुके हैं रोनेवाले, रो-रो कर जी खोनेवाले,
बीत चुकी है रात दुखों की, कौन सुने अब बात दुखों की?
हुआ सबेरा, दुनिया जागी, सुख का राग अलाप ऐ रागी!
दुख इस दुनिया से मिट जाए! आ मिल गीत जवानी के गाए!

दुनिया औ' अक़बा[2] के धंधे, कुफ़्[3] और ईमान[4] के फंदे,
आ, औ' उन को तोड़ के रख दें, ग़म का मुक़द्दर[5] फोड़ के रख दें!
हूरो-सनम[6] की ज़ात न पूछें, दैरो हरम[7] की बात न पूछें,
शोख़ जवानी को अपनाए! आ मिल गीत जवानी के गाएं!

मेहनत औ' सरमाये[8] का झगड़ा, अपने और पराये का झगड़ा,
यह आक़ाई[9] और ग़ुलामी[10], इसानी तदबीर की ख़ामी[11],
गर्दिशे-दौरा[12] को बदलें, आ तक़दीरे-जहां[13] को बदलें!
दुनिया को आज़ाद कराए! आ मिल गीत जवानी के गाए!

मदमाती मख़मूर[14] जवानी, चचल औ' मसरूर[15] जवानी,

---

[1]आकांक्षा की प्रशंसा। [2]परलोक। [3]अधर्म। [4]धर्म। [5]भाग्य। [6]स्वर्ग में बसने वाले सुंदर युवक और युवतियां। [7]मंदिर और मसजिद। [8]पूँजी। [9]स्वामित्व। [10]दासता। [11]त्रुटि। [12]संसार-चक्र। [13]संसार का भाग्य। [14]मस्त। [15]प्रसन्न।

सदमों[1] को ठुकराने वाली, ग़म को आग लगाने वाली,
बेख़ौफ़ औ' बेबाक[2] जवानी, हर इक दाग़ से पाक जवानी,
हक़[3] है जिस के दाए बाए, आ मिल गीत जवानी के गाएं!

शक्ती से भरपूर जवानी, बल के नशे में चूर जवानी,
गोलों की बौछार में झूमें, तलवारों की धार को चूमें,
मौत से हँस कर लड़ने वाली, मौत के सिर पर चढ़नेवाली,
बरसाए अमृत वर्षाएं! आ मिल गीत जवानी के गाए!

मस्त औ' तुदो तेज़[4] जवानी, गर्म और आतश-ख़ेज़[5] जवानी,
आँधी औ' तूफ़ान जवानी, रण-चंडी का मान जवानी,
चाल में जिस की बिजली कड़के, ख़ौफ़ से जिस के दुनिया धड़के,
आ इस को हैजान[6] में लाए! आ मिल गीत जवानी के गाएं!

तख़्त औ' ताज को जो ठुकरा दे, बख़्त[7] औ' बाज[8] को जो ठुकरा दे,
मन को ख़ुदी की लाग लगा दे, दुनिया में इक आग लगा दे,
तोड़ दे हर जजाल के फंदे, फूँक दे सारे गोरख-धंधे,
उस के सुर से गला मिलाएं! आ मिल गीत जवानी के गाएं!

बच्चे की मौत पर

तू बिछड़ कर जायगा मा से कहां? ऐ नौनिहाल!
कौन पालेगा तुझे और कौन रक्खेगा ख़याल?
मीठी-मीठी लोरिया देगा तुझे रातों में कौन?
हा लगाएगा तुझे मेरी तरह बातों में कौन?
गोद में मचलेगा किस की किस से रूठेगा वहां?

---

[1]दुःखों। [2]निडर, उद्दंड। [3]न्याय। [4]उग्र, प्रचंड। [5]आग बरसानेवाली। [6]जोश। [7]भाग्य। [8]भाग्य-प्रदत्त धन।

सोएगा सीने में किस के, ऐ मेरे दिल, मेरी जा?
तुझ को जन्नत की फिज़ाएं मेरे बिन क्या भाएंगी?
रोएगा, जब मा की मीठी लोरिया याद आएंगी!
हूरो-गुलमा[1] मे वहा माना कि अन्नाएं भी हैं।
जा रहा है जिस जगह तू, क्या वहा माए भी हैं?
कोख-उजड़ी अपनी हम-चश्मो[2] मे कहलाऊँगी मैं?
आह! अब किस मुँह से मेरी जान, घर जाऊँगी मै?
आ कि तुझ बिन बेक़रारो, मुजतिरो-नाला हूं[3] मै,
आ, मेरा नन्हा है तू, आ आ कि तेरी मा हू मैं!

---

[1]स्वर्ग में रहनेवाले कम उम्र के युवक और युवतियाँ। [2]बराबर वालियों।
[3]बेचैन, उद्विग्न और दुखी।

पंडित इंद्रजीत शर्मा

पंडित इंद्रजीत शर्मा माछरा, ज़िला मेरठ के रहनेवाले हैं। आप बहुत दिनों से लिखते हैं। उर्दू ग़ज़लों और नज़्मों मे आपने काफी नाम पाया है। 'नैरंगे-फ्तिरत' के नाम मे आप की कविताओं का संग्रह भी छप चुका है। गीतों के इस युग से आप भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहे. और आप की लेखनी ने अनायास ही आप से ये नग़मे लिखवा लिए हैं।

वे तो रूठ गए

वे तो रूठ गए मैं मनाती रही !

कुछ बात न पूछ सकी मन की, पिया चले गए मुझे छोड़ गए।
सब प्रीत की रीत बिसार गए, सब प्रेम के बघन तोड़ गए।
मैं प्रेम ही प्रेम जताती रही, वे तो रूठ गए मैं मनाती रही !
क्या मोह भला है साधू का, क्या ममता है सन्यासी की।
कुछ तरस न खाया दासी पर, कुछ बात न पूछी दासी की।
योंही नयनों से नीर बहाती रही, वे तो रूठ गए मैं मनाती रही !

नैया है मँझधार

बेड़ा, कौन लगाए पार ?

नदिया के चौपाट खुले हैं, धरती अम्बर रूठ रहे हैं,
पापी मनों में पाप बसे हैं, नैया है मँझधार !

कोसों है अब दूर किनारा, लहरें मार रही हैं धारा,
बेबस नैया खेवनहारा, काम न दे पतवार !

सारी दुनिया है मदमाती, कोई नहीं है संगी-साथी,
मतलब के सब गोती-नाती, मतलब का संसार!

कुछ भी किसी को ध्यान नहीं है, समझ नहीं है, ज्ञान नहीं है,
मुर्दा दिलों में जान नहीं है, यही है सोच-विचार।
बेड़ा कौन लगाए पार?

भिक्षा प्रेम की

भिक्षा प्रेम की, प्रीतम, मैं तो आई लेने भिक्षा प्रेम की!

प्रीतम दासी की सुध लीजो, कब से खड़ी हूं किरपा कीजो,
वारी जाऊ, दीजो दीजो—भिक्षा प्रेम की।
प्रीतम, मैं तो आई लेने भिक्षा प्रेम की!

मेरे स्वामी मेरे प्यारे, नाथ मेरे जीवन के सहारे,
मॉगने आई तेरे द्वारे—भिक्षा प्रेम की!
प्रीतम, मै तो लेने आई भिक्षा प्रेम की।

दूर से चल कर आई भिखारन, कर दो मुक्त मेरा यह बधन,
देदो लेकर मेरा जीवन—भिक्षा प्रेम की।
प्रीतम, मै तो लेने आई भिक्षा प्रेम की!

तोते

उड़ जा देस-बिदेस, तोते, उड़ जा देस-बिदेस!

मैं जाऊ तुझ पर बलिहारी, बिरह का रोग लगा है भारी,
रूठ गए मुझ से गिरधारी, चले गए परदेस!

तारे गिन-गिन रात बिताऊ, दिन में पल भर चैन न पाऊं,
आॅसू पीती हूं, ग़म खाऊं, ले जा यह सदेस!

मिल जाए तो उन से कहना, दूभर हो गया तुम बिन रहना ,
तज दिया मैं ने सारा गहना, जोगन का है भेस !

भूल आई री

भूल आई री ! भूल आई, भूल आई, भूल आई री !
अपना यह मन सखी भूल आई री ।
नयनों की चोट में, पलकों की ओट में ,
प्यारे की जीत में, मस्ती के गीत में ,
बंसी की तान में, एक ही उड़ान में ,
भूल आई री ! भूल आई, भूल आई, भूल आई री !
अपना यह मन सखी भूल आई री !

जोगी का गीत

बाबा, भर दे मेरा प्याला !

परदेसी हूं दुख का मारा, फिरता हूं मैं मारा-मारा ,
जग में कोई नहीं सहारा, खोल गिरह का ताला !
जोगी हूं मैं दान का प्यासा, निर्बुद्धी हूं ज्ञान का प्यासा ,
चंचल मन है ध्यान का प्यासा कर दे अब मतवाला !
तेरे कारन जोग लिया है, ऐश छोड़ कर सोग लिया है,
एक निराला रोग लिया है, पड़ा जिगर में छाला !
बाबा, भर दे मेरा प्याला !

सावन बीता जाए

सावन बीता जाए, सजनी, प्रीतम घर नहीं आए ,
कैसे काटूं रात बिरह की नागन बन-बन खाए !

ठंढी-ठंढी पुरवा सनके, बादल घिर-घिर छाए,
नन्ही नन्ही बूँदे टपकें, औ' बिजली लहराए!
याद पिया की मेरे दिल को रह-रह कर तड़पाए,
सावन बीता जाए, सजनी, प्रीतम घर नहीं आए!

मोर, पपीहा, झींगर, सारस, मिल कर शोर मचाए,
नाचे कूदे करे कलोलें, फूलें नहीं समाए,
नाच रंग औ' खेल कूद की बात न मन को भाए,
सावन बीता जाए सजनी, प्रितम घर नहीं आए!

कुंज-कुंज मे पड़े हैं झूले, मिल कर सखिया झूले,
पींग बढाए, तान उड़ाए, अपने मन में फूले;
हँसी-ख़ुशी की बात यह मेरे मन को और जलाए,
सावन बीता जाए सजनी प्रीतम घर नहीं आए।

अहसान 'दानिश'

'अहसान' उर्दू के प्रगतिशील युवक कवि है—मीठी सुरीली ऊँची आवाज़ से गानेवाले। उन की कविताओं के चार संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'दर्दे-ज़िंदगी' उन में प्रसिद्ध है। आप की अधिकांश नज़्में ग़रीब मज़दूरों, दुखी किसानों पर लिखी होती है। आप ने गीत बहुत नहीं लिखे, पर जो लिखे हैं सुंदर लिखे हैं।

जग की झूठी प्रीत

जग की झूठी प्रीत !

फ़ानी है यह दुनिया फ़ानी, उठती मौजें, बहता पानी,
छोड़ भी इस की रामकहानी, यह है किस की मीत ?

मोह के दिन हैं दुख की रातें, ज़र[1] के फंदे, पाप की घातें,
प्रेम के रस से ख़ाली बातें, हार यहां की जीत !

जग की झूठी प्रीत !

झूठे जग की झूठी प्रीत

झूठे जग की झूठी प्रीत !

करयुग बीता कलयुग आया, हर ज़र्रे[2] ने पलटी काया,
हिरदे-हिरदे[3] पाप समाया, उलटी नगरी, उलटी रीत !

दुनिया सावन रैन का सपना, मोह नगर में चैन का सपना,
रूप अनूप है नैन का सपना, किस की हार औ' किस की जीत ?

---

[1]धन। [2]कण। [3]हृदय-हृदय।

धोका है ससार में धोका, नर में धोका, नार में धोका,
प्रेम में धोका, प्यार में धोका, फीकी ताने नीरस गीत!
झूठे जग की झूठी प्रीत!

मज़दूर का बच्चा

यह प्यारा-प्यारा बच्चा, आँखों का तारा बच्चा!
यह दिल को लुभाने वाला, रो-रो के हँसाने वाला,
फितरत का दुलारा बच्चा! यह प्यारा-प्यारा बच्चा!
आपा[1] की नजर की रौनक़, अम्मा के घर की रौनक़,
दुखिया का सहारा बच्चा! यह प्यारा-प्यारा बच्चा!
हूरों का तरन्नम[2] कहिए, ग़ुलमा का तबस्सुम[3] कहिए,
जन्नत का नज़ारा बच्चा! यह प्यारा-प्यारा बच्चा!
लब पतले आँखे काली, रुख़सार[4] पै हलकी लाली,
जग रूप से न्यारा बच्चा! यह प्यारा-प्यारा बच्चा!
मज़दूर का बेटा लेकिन, मज़दूर बनेगा इक दिन,
अफलास[5] का मारा बच्चा! यह प्यारा-प्यारा बच्चा!
दुनिया का सितम[6] देखेगा, 'ना होत' का ग़म देखेगा,
यह प्यारा-प्यारा बच्चा, यह आँख का तारा बच्चा!

---

[1]पिता। [2]सगीत-लहरी। [3]मुसकान। [4]कपोल। [5]ग़रीबी। [6]अन्याय॥

रणवीरसिंह 'अमर'

पंजाब के एक नौजवान शायर ने 'राधा के गीत' नाम से एक पुस्तक लिखी है। राधा कौन है और कृष्ण कौन—यह उस ने नहीं लिखा। हो सकता है कुछ लोग इन गीतों में उस प्रेम-कहानी को पाएं जो आज से कोई पाँच हज़ार वर्ष पहले मथुरा-वृंदावन के मस्त इलाक़े में जमना के इस पार या उस पार लिखी गई थी, पर कवि की राधा' तो वह आराधना है, जो हर प्रेम करनेवाले के दिल में पैदा होती है और 'कृष्ण' वह है जिस पर इस प्यार और भक्ति के फूल चढाए जाते हैं। जब तक मानव जीवित है तब तक कवि की राधा भी जीवित है और कवि का कृष्ण भी। राधा के इन्हीं गीतों को लिखनेवाले का नाम 'अमर' है। और यहां वे कुछ गीत दिए जाते है।

मन पागल

मन पागल यों बेचैन न हो ! इतना व्याकुल दिन-रैन न हो !
जैसे ख़ुद ही आ जाते हैं, फूलों पर अपने आप भ्रमर—
जब टेर तेरी सुन पाएंगे, वह आएंगे, वह आएंगे !
नयनों से नीर बहाएंगे ! फिर मंद-मंद मुस्काएंगे !
मन पागल यूं बेचैन न हो, इतना व्याकुल दिन-रैन न हो !
जब टेर तरी सुन पाएंगे, वह आएंगे वह आएंग !

मन की बस्ती वीरान नहीं

मन की बस्ती वीरान नहीं।
जैसे भँवरा, उजड़े बन में,

फूलों की याद मे गाता है,
बन को आबाद बनाता है;
वैसे ही सखि, मेरे मन में,
पिय को मिलने की आशा है।

मन की बस्ती वीरान नहीं, मन का मदिर सुनसान नहीं।

प्रीतम गो आप नहीं रहते,
प्रीतम की याद तो रहती है;
बस्ती आबाद तो रहती है।

मन की बस्ती वीरान नही, मन का मदिर सुनसान नहीं

आ भी जा

मन-मदिर तुम बिन सूना है!

ज्यों पुष्पलता बिन फूलों के, तट जमना का बिन भूलों के,
मुरली मनहर गोपाल सखा, चित-चोर गवाले आ भी जा!

मन का मदिर आबाद करो!

ज्यों सीप को करता है मोती, औ' दीप को करती है ज्योती।
मुरली मनहर गोपाल सखा, चित-चोर गवाले आ भी जा!

तुम बिन

तड़प रही दिन-रैन तुम बिन!

बिन पानी के मछली जैसे; जैसे भँवरे बिन कलियों के;
छिन नहीं पावे चैन!

बिन फूलों के बुलबुल जैसे; औ' परवाने बिन दीपक के;
रहते हैं बेचैन!

तुम बिन तड़प रही दिन-रैन!

मैं नीर भरन नहीं जाऊं

मै नीर भरन नहीं जाऊं
पनघट पर !
पनघट के राजन, कृष्ण कन्हैया, सॉवरे साजन,
वसी की तान उडाते हैं, सखियों का मन भरमाते हैं।
उन सखियों के उस झुरमट को, वसीवाले उस नटखट को,
जब जमना-तट पर देखा है, तब मुश्किल से घर देखा है।
बैर है मुझ से सास ननद को,
बात-बात पर गारी देंगी, गारी बारी-बारी देंगी।
उन की गारी कैसे खाऊं ?
नीर भरन नही जाऊं
पनघट पर !
मै नीर भरन नही जाऊं !

प्राणों के आधार

प्राणों के आधार ! तुम्हीं हो . प्राणों के आधार !
मन-मदिर के वासी प्रीतम, मन-मदिर का मान है तुम से।
तुम पर सदके दासी प्रीतम, जीने का सामान है तुम से।
चॉद हो तुम औ' मैं हूं चकोरी, मन मदिर की ज्योती तुम हो !
तुम काहन मैं बॉस की पोरी, सीप हूं मै औ' मोती तुम हो !
मन-मदिर में रहनेवाले, मन-मंदिर को छोड़ न जाना !
ऐ मेरे साजन मतवाले, दुखिया का दिल तोड़ न जाना !
प्राणों के आधार ! तुम्ही हो, प्राणों के आधार !

'हफ़ीज़' होशयारपुरी

'हफ़ीज़' होशयारपुरी युवक हैं. जवानी के साथ-साथ शायरी की चौखट पर भी खडे है। पर इतने अर्से में ही उन्हों ने जिस प्रतिभा का सबूत दिया है वह एक उज्ज्वल भविष्य की आशा बँधाती है। दो-ढाई वर्ष पहले गवर्नमेंट कालेज लाहौर से एम० ए० की डिग्री लेकर हाल ही में आप आल इंडिया रेडियो में काम करने लगे है। गीत उन्हों ने बहुत नहीं लिखे, पर जो लिखे है महसूस करके लिखे हैं। कविताओं की भाँति उन के गीतों में भी एक बेसाख़्तगी, एक अनायासपन है।

अतीत की याद

नाव चाँद, आकाश था सागर, तारे खेवनहार थे प्यारे,
मेरी रामकहानी सुनकर जाग उठे थे नींद के माते,
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते!

दर्शन जल की ख़ातिर जाते, दर्शन प्यासे प्रेम दुवारे,
झूठी दुनिया को तज देते अपनी दुनिया आप बसाते।
काश वह राते फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते!

प्रीत के आगे प्रीतम प्यारे, झूठ हैं रिश्ते-नाते सारे',
मैं अपनाता मन यह तुम्हारा, मेरे मन को तुम अपनाते।
काश वह राते फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते!

पलकों पर यूं नीर चमकते, जैसे अंबर पर हों तारे,
रो-रो रात बिताते साजन, अपनी अपनी दसा सुनाते।
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते।

काली रात

कैसे काटूँगी उन बिन काली रात ?

याद आए वह पल-पल, छिन-छिन , नींद उचाट हुई है उस बिन ,
थक गईं आँखें तारे गिन-गिन, होत नहीं परभात !
कैसे काटूँगी उन बिन काली रात ?

कब आएगा साजन प्यारा ? साजन मेरा राजदुलारा ,
इन सूनी आँखों का तारा , कोई बताओ यह बात !
कैसे काटूँगी उन बिन काली रात ?

हम पर दया करो भगवान !

हम पर दया करो भगवान !

मेरा जीवन तुम से उजागर , मैं प्यासी तुम अमृत-सागर ,
आओ, भर दो मन की गागर , जान में आ जाएगी जान ।
हम पर दया करो भगवान !

नौका जब मँझधार में आए , रह-रह कर तूफ़ान डराए ,
कौन फिर उस को पार लगाए ? अब तो एक तुम्हारा ध्यान !
हम पर दया करो भगवान !

दिल लेकर मुँह मोड़ न जाना , मेरी आशा तोड़ न जाना ,
मन-मंदिर को छोड़ न जाना , यह नगरी तुम बिन सुनसान ।
हम पर दया करो भगवान !

आग लगे

आग लगे इस मन में आग !

लो फिर रात बिरह की आई , जान मेरी तन में घबराई ,

चारों ओर उदासी छाई, अपनी क़िस्मत अपने भाग।
आग लगे इस मन में आग!

काली औ' बरसती रैन, उस बिन नींद को तरसें नैन,
जिस के साथ गया सुख-चैन, उस की याद कहे—'अब जाग'!
आग लगे इस मन में आग!

जिस दिन से वह पास नहीं है, कोई ख़ुशी भी रास नहीं है,
जीने तक की आस नहीं है, जान को है अब तन से लाग।
आग लगे इस मन में आग!

कौन जिए और किस के सहारे? मीठे-मीठे बोल सिधारे,
गीत कहा वह प्यारे-प्यारे? अब वह तान, न अब वह राग!
आग लगे इस मन मे आग!

दरस दिखा कर जो छिप जाए, कौन ऐसे से प्रीत लगाए?
क्यों अपनी कोई दसा सुनाए? छोड़ मुहब्बत का खटराग!
आग लगे इस मन में आग!

प्रेमनगर में

झूठी दुनिया से मुँह मोड़े, धन औ' लोभ की बातें छोड़ें,
प्रीत की रीत से नाता जोड़ें, मिल कर सारे गीत यह गाएं,
प्रेमनगर में घर बनवाए।
क्या हैं जगवालों के धंदे? सब देखे मतलब के बंदे,
हाथों में हैं पाप के फंदे, मन में पी की लगन लगाए!
प्रेमनगर में घर बनवाए!
प्रेमनगर इक स्वर्ग है प्यारे, पी हैं जिस के राजदुलारे,
जाग उठेंगे भाग हमारे, जाकर हम उस में बस जाए!
प्रेमनगर में घर बनवाए!

बुरी बला है प्रीत

साजन, बुरी बला है प्रीत!

बिरह के दुख हँस-हँस कर सहना, मुँह से कोई बात न कहना,
कम-कम मिलना चुप-चुप रहना, यह है प्रीत की रीत।

साजन, बुरी बला है प्रीत!

ना कहीं आना ना कहीं जाना, सब से जी का भेद छिपाना,
तनहाई में बैठ के गाना, जोग की धुन में गीत।

साजन, बुरी बला है प्रीत!

आँख में आँसू, बद ज़बानें, व्याकुल जिउरे दुखिया जानें,
किस की सुनें औ' किस की मानें? कौन किसी का मीत?

साजन, बुरी बला है प्रीत!

प्रीत के दुख को जी से चाहें, जैसे हो यह रीत निबाहें,
प्रीत है ठंडी ठंडी आहें, प्रीत की आग है शीत।

साजन, बुरी बला है प्रीत!

मीरा जी

इस नए रंग की कविता के मैदान में यद्यपि श्री मीरा जी दो-तीन वर्षों ही से अवतीर्ण हुए हैं, पर इस अर्से में आप पूरी तरह उर्दू संसार पर छा गए हैं। अब तक इस नए रंग में हर तरह की शायरी की जाती थी, पर मुक्त छंद में लिखी जानेवाली रहस्य-रोमेंस तथा वेदनामयी कविताओं का अभाव था। मीरा जी ने उसे पूरा किया है और इन्साफ़ तो यह है, कि बड़ी सफलता से पूरा किया है।

मीरा जी का वास्तविक नाम बहुतों को ज्ञात नहीं। उर्दू संसार में आप इसी नाम से प्रसिद्ध हैं और नज़्मों तथा गीतों के अतिरिक्त पुराने देशीय तथा विदेशीय कवियों पर लेख लिखने और उन की कविताओं का हिंदुस्तानी कविता में अनुवाद करने में आप ने .खूब नाम पाया है।

कोई दो-एक वर्ष से आप उर्दू के प्रसिद्ध मासिक 'अदबी दुनिया' के संपादन-विभाग में आ गए हैं।

चल-चलाव

बस देखा औ' फिर भूल गए।
जब हुस्न निगाहों में आया,
मन-सागर में तूफ़ान उठा।
तूफान को चचल देख डरी, आकाश की गंगा दूध-भरी!
औ', चाँद छिपा, तारे सोए, तूफ़ान मिटा, हर बात नई,
दिल भूल गया पहली पूजा, मन-मंदिर की मूरत टूटी!
दिन लाया बातें अनजानी, फिर दिन भी नया औ' रात नई,
प्रेयसि भी नई, प्रेमी भी नया, औ' सेज नई हर बात नई!

इक पल को आई निगाहों में, झिलमिल झिलमिल करती, पहली
सुंदरता औ' फिर भूल गए।
मत जानों हमें तुम हरजाई[1] !
हरजाई क्यों ? कैसे ? कैसे ?
क्या दाद[2] जो इक लम्हे[3] की हो वह दाद नहीं कहलाएगी ?

जो बात हो दिल की, आँखों की,
तुम उस को हवस[4] क्यों कहते हो ?
जितनी भी जहा हो जल्वागरी,[5] उस से दिल को गर्माने दो !

हर शै[6] फ़ानी,[7] हर शै फ़ानी !
हर जज़्बा[8] फ़ना[9] हो जाएगा,
जब तक है ज़मीं,[10]
जब तक है जमा;[11]
यह हुस्नो नुमाइश जारी है।

इस एक झलक को छिछलती नज़र से देख के जी भर लेने दो !
हम इस दुनिया के मुसाफ़िर हैं,
औ' क़ाफ़िला[12] है हर आन रवा[13] !
हर बस्ती, हर जगल, सहरा[14], औ' रूप मनोहर पर्वत का,
इक लम्हा मन को लुभाएगा, इक लम्हा नज़र में आएगा,

हर मंज़र[15], हर इंसा[16] की दया, औ' मीठा जादू औरत का
इक पल को हमारे बस मे है, पल बीता सब मिट जाएगा।

---

[1]हरेक से प्रेम करनेवाला। [2]प्रशसा। [3]क्षण। [4]वासना। [5]दर्शन। [6]वस्तु। [7]नश्वर। [8]भावना। [9]नष्ट। [10]धरती। [11]जमाना। [12]यात्रा। [13]जारी। [14]मरुस्थल। [15]दृश्य। [16]मनुष्य।

इस एक झलक को छिछलती नजर से देख के जी भर लेने दो।
तुम इस को हवस क्यों कहते हो ?
क्या दाद जो इक लम्हे की है वह दाद नहीं कहलाएगी ?

है चाँद फ़लक[1] पर इक लम्हा
औ' एक लम्हा यह सितारे हैं !
औ' उम्र का हिस्सा भी, सोचो, इक लम्हा है !

एक तस्वीर

सोलह सिंगारों से सज कर इक गोरी सेज पर बैठी है।
पीतम आए नहीं, आएँगे, चुपके रस्ता तकती है।

लाख लगा कर पाँव सजाए जगमग जगमग करते हैं,
प्रेमी का दिल, गर्म उबलते, वहशी खूं से भरते हैं।
नयनों मे काजल के डोरे अग-अग बरमाते हैं,
नन्हे, काले-काले बादल जग पर छाए जाते हैं।
माथे पर सेंदुर की बिंदी या आकाश पै तारा है,
देख के आजाएगा जो भूला भटका आवारा है।
नर्म, रसीले, साफ़, फिसलते, गाल पै तिल का भँवरा है,
रोम-रोम उस मदमाती का जेसे सँवरा-सँवरा है।
कानों में दो बुदे, जैसे नन्हे-मुन्ने भूले हैं,
चन्चल, अचपल सुदरता के सुख में सब कुछ भूले हैं।
चूड़ा बेल बना लिपटा है, बाहें मानों डाली हैं,
बेल औ' डाली की रूहें यों मस्त हैं, मद मतवाली हैं।
लेकिन पीतम आए नहीं, आएँगे, आ जाएँगे,

---

[1] आकाश।

इंद्रनगर की ख़ुशियों वाली बस्ती में ले जाएँगे।
पाँवों की पाज़ेबें[1] फिर प्रेमी का राग सुनाएँगी !
मीठे लम्हों की बातों के गीतों से बहलाएँगी !

उजाला

आशा आई सारे मन के दुख मुझ को इक पल में भूले,
मनमंदिर में, सुख-संगत ने ऐसी उमंगें आन जगाईं,
जैसे कोई सावन रुत में फुलवारी में भूला भूले !

कोमल लहरें मेरे मन में एक अनोखी शोभा लाईं,
जैसे ऊँचे-नीचे सागर में दो कूजें[2] उड़ती जाएं,
मधु रुत का ज्यों समा सुहाना मन को चंचल नाच नचाए !

हैरानी है, मेरे मन में ऐसी बातें कहा से आईं ?
मन सोया था, सोए हुए को कौन पुकारे ? कौन जगाए ?
जैसे कोई नवजीवन का हरकारा[3] संदेसा लाए !
जिस के मन में आशा आए, बस वही समझे, वही बताए !

रात की अनजान प्रेयसी

मैं धुँधली नींद में लिपटा था, सौ पर्दों से वह जाग उठी,
हलके-हलके बहती आई औ' छाई मीठी ख़ुशबू-सी !
बारीक दुपट्टा सिर पै लिए, औ' अचल को क़ाबू में किए,
चंचल नयनों को ओट दिए, शरमीला घूँघट थामे थी !

---

[1]पायलें। [2]पक्षी विशेष। [3]दूत।

निर्दोष बदन, इक चद्रकिरण, उठता जोबन, बस मन-मोहन,
मैं कौन हूं, क्या हूं, क्या जाने ! मन बस में किया औ' भूल गई !
जब आँख खुली औ' होश आया, तब सोच लगी, उलझन-सी हुई,
फिर गूँज सी कानों में आई, यह सुदरि थी सपनों की परी !

जंगल में वीरान मंदिर

कुछ चाँद की परिया मंदिर मे कल रात बुलाई जाएँगी,
सारी दीवारें कलियों औ' फूलों से सजाई जाएँगी।
कुछ कोमल, नर्म हरे पत्तों के फर्श बिछाए जाएँगे।
जब ऐसी अनोखी, मन-मोहिनी, सखि, तैयारी सब होलेगी,
तब वक़्त की देवी, चाँद के सर्गी[1] दरवाज़ों को खोलेगी।
फिर धीरे-धीरे उड़ती, बहती, चाँद की परिया आएँगी।
औ' मदिर की सब दीवारे मगल के गीत सुनाएँगी।
मैं मदिर के इक कोने मे छिप कर चुपका बैठा हूँगा,
औ' ऐसे मोहन मज़र को अपनी आँखों से देखूँगा।
मैं चाँद की परियों के गीतों का जादू दिल में भर लूँगा,
औ' नाच के फूलों से अपनी आँखों को रौशन कर लूँगा।
पहले तो मेरे दिल पर गहरी मस्ती-सी छा जाएगी,
फिर वक़्त की देवी मुझ को मेरे सपनो से चौंकाएगी।
औ' चाँद की नाचती-गाती परिया डर के ठिठक सी जाएँगी,
औ' मुझ को देख के सहमी, सहमी अपने पर फैलाएँगी।
सब फूल परेशा हो जाएँगे औ' कलिया मुरझाएँगी।
औ' चाँद की परिया तज कर मुझ को मदिर से उड़ जाएँगी।

---

[1] सख़्त।

संयोग

दिन ख़त्म हुआ, दिन बीत चुका।
धीरे-धीरे हर नज़्मे-फलक इस ऊँचे-नीचे मडल से
चोरी-चोरी यों देखता है,
जैसे जगल में कुटिया के इक सीधे-साधे द्वारे पर
कोई तनहा, चुपचाप खड़ा, छिप कर घर से बाहर देखे !
जंगल की हर इक टहनी ने सब्ज़ी छोड़ी, शर्मा के छिपी तारीकी में।
औ' बादल के घूँघट की ओट से ही तकते-तकते चदा का रूप बढ़ा !
यह चदा—कृष्ण, सितारे हैं—झुरमुट वृदा की सखियों का !
यह ज़ुहरा नीले मडल की राधा बन कर क्या आई है ?
क्या राधा की सुदरता चाँद बिहारी के मन भाएगी ?
जगल की घनी गुफाओं में जुगनू, जगमग करते, जलते बुझते चगारे हैं !
औ' झींगुर ताल किनारे से गीतों के तीर चलाते हैं,
नग़मों में बहते जाते हैं।

लो' रात की दुल्हन जो शर्माती थी, अब आ ही गई।
हर हस्ती पर अब नींद की गहरी मस्ती छाई—ख़ामोशी !
कोयल बोली !—
औ' रात की इस तारीकी में ही दिल को दिल से मिलाए हैं
प्रेयसी-प्रेमी—
हाँ, हम दोनों !

मार्ग

मुझे चाहे न चाहे दिल तेरा, तू मुझ को चाह बढाने दे,
इक पागल प्रेमी को अपनी चाहत के नग़मे गाने दे !
तू रानी प्रेम-कहानी की, चुपचाप कहानी सुनती जा,

यह प्रेम की वाणी सुनती जा, प्रेमी को गीत सुनाने दे!
गर भूले से तू इस जज़्बे का, गीत जवाबी गा बैठी,
यह जादू सब मिट जाएगा, इस को जोबन पर आने दे!
हा, जीत में नश्शा कोई नहीं, नश्शा है जीत से दूरी मे
यह राह रसीली चलता हूं, इस राह पर चलता जाने दे!

मैख़ाने की चंचल

"कभी आप हँसो, कभी नैन हँसे कभी नैन के बीच हँसे बजरा,
कभी सारा सुंदर अग हँसे, कभी अग रुके, हँस दे गजरा।
यह सुदरता है या कविता, मीठी-मीठी मस्ती लाए,
इस रूप के हँसते सागर में डगमग डोले मन का बजरा।
क्या नाज अनोखे और नए सीखे इदर की परियों से,
औ' ढग मनोहर औ' ज़हरी सूझे सागर की परियों से।
यह मोहिनी मद मतवाली है, यह मयख़ाने की चचल है,
यह रूप लुटाती है सब मे पर आधे मुँह पर अचल है।
पहले सपने मे आती है, पाज़ेबों की झकारों में,
फिर चैन चुरा कर तन-मन का, छिप जाती है सय्यारो[1] मे।

---

[1] सितारों।

विविध

कुछ ऐसे श्रेष्ठ कवि भी उर्दू में हैं जिन्हों ने चाहे गीत अधिक न लिखे हों फिर भी उन की कविता में अनायास ही यह धारा बह निकली है और उन की कुछ कविताएं गीतों के बहुत समीप आ गई हैं। फिर ऐसे भी कवि हैं जिन्हों ने एक-दो सुंदर गीत अवश्य लिखे हैं और उन की सुंदरता के कारण उन्हें देने का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रीय गान

भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है,
हर रुत, हर इक मौसम इस का, कैसा प्यारा-प्यारा है!
कैसा सुहाना, कैसा सुंदर, प्यारा देश हमारा है!
दुख में, सुख में, हर हालत में, भारत दिल का सहारा है।
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है।

सारे जग के पहाड़ों में बे-मिस्ल[1] पहाड़ हिमाला है,
यह परबत सब से ऊँचा है, यह परबत सब से निराला है,
भारत की रक्षा करता है यह, भारत का रखवाला है,
लाखों चश्मे बहते इस में, लाखों नदियोंवाला है,
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है।

गंगाजी की प्यारी लहरें गीत सुनाती जाती हैं,
सदियों की तहज़ीब[2] हमारी याद दिलाती जाती हैं,

---

[1]अद्वितीय। [2]सभ्यता।

भारत के गुलज़ारों[१] को सरसब्ज़[२] बनाती जाती हैं,
खेतों को हरियाली देती, फूल खिलाती जाती हैं,
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है।

हरे-भरे हैं खेत हमारे, दुनिया को अन[३] देते हैं,
चाँदी-सोने की कानों से हम जग को धन देते हैं,
प्रेम के प्यारे फूल की ख़ुशबू गुलशन-गुलशन[४] देते हैं,
अमनों-अमा[५] की नेमत[६] सब को भरभर दामन देते हैं,
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है।

कृष्ण की बंसी ने फूँकी है रूह हमारी जानों में,
गौतम की आवाज़ बसी है, महलों में, मैदानों में,
चिश्ती ने जो दी थी मय, वह अब तक है पैमानों मे,
नानक की तालीम अभी तक गूँज रही है कानों में,
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है।

मज़हब हो कुछ, हिंदी हैं हम, सारे भाई-भाई हैं,
हिंदू हैं या मुस्लिम हैं, या सिख हैं या ईसाई हैं,
प्रेम ने सब को एक किया है प्रेम के सब शैदाई[७] हैं,
भारत नाम के आशिक़ हैं हम भारत के सौदाई[८] हैं,
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है।

हामिद अल्लाह 'अफ़सर'

सीता और तोता

हुई क्या वह बहार ऐ आर्यावरत,[९]

---

[१]बागों। [२]उर्वर। [३]अन्न। [४]बाग। [५]शांति। [६]विभूति। [७]प्रेमी। [८]पागल।
[९]आर्यावर्त।

चमन की ज़िंदगी थे जिस के अनफ़ास[1] !
वह रंगारंग फुलवाड़ी कहां है,
दिमागों में है अब तक जिस की बू-बास !
वह आज़ादी किधर है जिस से कट कर,
न आई कोई भी तुझ को हवा रास !
क़फ़स[2] में बंद होती थी जो तूती[3]
तो सीता को दिया जाता था बनबास !
यह ताना भी सुना तू ने कि तुझ को,
कभी भी था न आज़ादी का इहसास[4] !
मौ० ज़फ़र अली खां

आओ सहेली झूला झूलें

पुरवा सनकी बादल छाए, भूरे काले घिर कर आए,
अमृत जल भर-भर के लाए, बरखा रुत की इस बरखा में। आओ सहेली०
उट्ठी हैं पुरशोर घटाएं, काली-काली चोर - घटाएं,
सावन की घनघोर घटाएं, सावन की घनघोर घटाएं ! आओ सहेली०
बरखा रुत की शान निराली, पत्ते-पत्ते पर हरियाली,
डाली-डाली है मतवाली, इस रुत की मख़मूर[5] फ़िजा में। आओ सहेली०
झूलें और पकवान बनाएं, आमों का नौरोज़ मनाएं,
खाते जाएं गाते जाएं, झड़ी लगी है इस बरखा में। आओ सहेली०
मौ० 'ताजवर'

---

[1]रहनेवाले। [2]पिंजड़ा। [3]पक्षी, तोता। [4]अनुभूति। [5]मस्त।

ऐ ख़ूबसूरती

ऐ ख़ूबसूरती ! क्या बात है तेरी ?
यह मख़मली पहाड़, यह मोहना उजाड़,
फूलों की रेल-पेल, चिड़ियो की कूद-खेल,
यह धूप, यह हवा, यह खुल्द[1] की फिजा[2],
सब शान है तेरी, ऐ ख़ूबसूरती !
नन्ही फुहार ने, मीठी-सी मार ने,
दिल को जगा दिया, कैसा मज़ा दिया ?
इस छेड़-छाड़ में, बूँदों की आड़ में,
तू थी छुपी हुई, ऐ ख़ूबसूरती !
जल्वा मुझे दिखा, दिल मे मेरे समा,
हर चीज़ मे झलक, गहराइयों तलक,
दुनिया बना इक और, जिस का नया हो तौर[3],
ऐ मेरी नित नई, ऐ ख़ूबसूरती !

मौ० बशीर अहमद

हँस देंगे और गाएँगे !

दूर किसी इक गाओं में, ठडी-ठंडी छाओं मे,
गाना अपना गाऍगे ! गाऍगे हम गाऍगे !
नन्हे-नन्हे फूलों में, हलके-हलके झूलों में,
क्या-क्या लुत्फ़ उठाऍगे ? झूलेंगे और गाऍगे ?
फिर इक प्यारी सूरत को, फिर इक मोहनी मूरत को,
मन का गीत सुनाऍगे ! नाचेगे और गाऍगे !

---

[1]स्वर्ग। [2]वातावरण, बहार। [3]रूप।

दुनिया आनी-जानी है, हम ने भी पर ठानी है—
जो खोया है पाएँगे। पाएँगे और गाएँगे!
औरों का हम देख के रंग, आज रग और कल के ढंग,
गुस्से में जब आएँगे, हँस देगे और गाएँगे,
जन्नत को हम क्या जानें? दोज़ख़ को हम क्या मानें?
दुख में भी हम गाएँगे! जीकर यों दिखलाएँगे!

मौ० बशीर अहमद

पपीहे से

रागिनी 'पीहू' की सिखलाई है किस ने तुझ को?
तरज़ यह आगई किस तरह पपीहे तुझ को?
रैन बरखा की यह तारीक[1] यह हू का आलम[2],
किस की याद आ गई इस वक्त न जाने तुझ को?
देख कर इस की चमक जोश पै क्यों आता है?
दम-बदम करती है क्या बर्क़[3] इशारे तुझ को?
बोल उठता है जो यूं सर्द हवा पाते ही—
मुयदा[4] क्या देते हैं पुरवा के यह झोंके तुझ को?
किस को रह-रह के सुनाता है रसीली तानें?
किस के इस वक्त नज़र आते हैं जलवे तुझ को?
हाय क्या हिज्र मे डूबी हुई लय है तेरी?
मेरे सीने से कोई आके लगा दे तुझ को!
दिल मेरा क्यों न भर आए तेरी पी-पी सुन कर,
मुब्तला[5] मैं भी हूं गर इश्क़ है प्यारे तुझ को,

---

[1]अँधेरी। [2]निस्तब्धता। [3]बिजली। [4]सुसमाचार। [5]फँसा हुआ।

एक बेदार[1] हूं मैं, जाग रहा है इक तू,
लोटते मुझ को गुज़रती, है तड़पते तुझ को,
फिर भी है फ़र्क़[2] बहुत हाल में हम दोनों के,
कि मुझे ज़ब्त[3] अता[4] हो गया, नाला तुझ को !
महु-फ़रियाद[5] फ़क़त रात को तू होता है,
मेरे दिल पै है वह बिपता कि सदा रोता है !

सआदत हुसैन 'मुजीब'

फिर क्या तेरा मेरा रे

तेरे दर की धूल में जाने क्या पाया है भिखारी ने ?
दुनिया छूटी पर नहीं छूटा तेरी गली का फेरा रे !
प्रीत बुरी है, या अच्छी है, जो कुछ भी है मेरी है,
अब तो प्यारे आन बसाया मन में प्रेम ने डेरा रे !
मेरे दिल की दुनिया प्यारे तेरे दिल की दुनिया है,
तू मेरा है, मैं तेरा हूं, फिर क्या तेरा मेरा रे ?
प्रेम के बंधन में फँसने से कितने बधन टूटे हैं ?
यह मैं जानू, या वह जाने, जिस को प्रेम ने घेरा रे !
जब तुम सपने में भी न आओ, प्यारे फिर क्यों नींद आए ?
बिरह का दीपक जब नहीं बुझता, फिर कैसे हो सवेरा रे ?

'रविश' सद्दीकी

सरमायादारी

दौलत ने कैसी शोरिश[6] उठाई ? क्या बादशाही औ' क्या गदाई[7] !
भूखों की रोटी हथिया के बदा, करता है बदों पर क्यों ख़ुदाई ?

---

[1]जाग्रत। [2]अंतर। [3]संयम। [4]प्रदान। [5]उपालभ-रत। [6]विद्रोह। [7]फकीरी।

शाही गदाई, मीरी फ़कीरी, जब उठ गए यह पर्दे रयाई[1]—
यह भी है इंसा, वह भी है इंसा, वह इस का भाई, यह उस का भाई!

मौ॰ हामिद अली खां

वाली बीवी की फ़रियाद

१

बीवी

पड़ते ही सो जाती हूं।
भारी सर तकिये पर रख कर,
निंदिया-पुर में खो जाती हूं।
मेरा ख़ुसर[1] ग़ुस्से[2] में भर कर,
फिरता है अंदर और बाहर,

ताल

धब धब धब, गाली पर गाली।
सो नहीं सकती मैं बेचारी!

ख़ुसर

उठ री उठ ओ काहल लड़की,
फूहड़, मरियल, नींद की माती,
उठ री उठ, सुस्ती की कान!

२

बीबी

पढ़ते ही सो जाती हूं।
भारी सर तकिये पर रख कर,

---

[1]झूठे। [2]श्वशुर।

निंदिया-पुर में खो जाती हूं।

सास मेरी तैहे में जल कर,
फिरती है अंदर और बाहर,

ताल

धब धब धब, गाली पर गाली।
सो नहीं सकती मैं बेचारी!

सास

उठ री उठ ओ काहल लड़की,
उठ री सटल्लो नींद की माती,
फूहड़, सुस्त, मुई, हैवान!

३

बीबी

पड़ते ही सो जाती हूं।
भारी सिर तकिये पर रख कर,
निंदिया पुर मे खो जाती हूं।

हौले-हौले बालम मेरा,
चुपके-चुपके हमदम मेरा,
आते-जाते अंदर बाहर,
कहता है मुझे सोते पाकर—

पति

"सो ले, सो ले, मेरी प्यारी!
सो ले, सो ले, ओ बेचारी!
यह दीन औ' दुनिया का धंदा?
यह सिन और शादी का फंदा?
मेरी बन्नो! मेरी जान!

मौ० हामिद अली ख़ां

एक गीत

बाग़ों में पड़े झूले,
तुम भूल गए हम को, हम तुम को नहीं भूले !

सावन का महीना है,
साजन से जुदा होकर, जीना कोई जीना है !

यह रक़्स सितारों का,
अफ़साना कभी सुन लो, तक़दीर के मारों का।

आख़िर यही होना था,
यों ही तुम्हें हँसना था, यों ही हमें रोना था।

रावी का किनारा है,
हर मौज के ओठों पर, अफ़साना तुम्हारा है।

अब और न तड़पाओ,
या हम को बुला भेजो, या आप चले आओ !

मौ० चिराग़हसन 'हसरत'

दुखी कवि

सेहन में नरगस के इक सूखे हुए पौदे के पास,
एक तितली, धूप में जिस का चमकता था लिबास,
उड़ते-उड़ते एक लम्हे[1] के लिए आकर रुकी,
और फिर कुछ सोच कर सहरा[2] की जानिब[3] उड़ गई !

---

[1]क्षण। [2]मरुस्थल। [3]तरफ़।

यों ही आती है मेरे उजड़े हुए दिल तक ख़ुशी।
मेरे ग़म से ख़ौफ़ खाती, काँपती, डरती हुई।

राजा महदी अली ख़ाँ

सुन ले मेरा गीत

सुन ले मेरा गीत ! प्यारी, सुन ले मेरा गीत !
प्रेम यह मुझ को रास न आया, तेरी क़सम बेहद पछताया,
करके तुझ से प्रीत।

ख़ाक हुए हम रोते-रोते, प्रेम में व्याकुल होते-होते,
प्रीत की है यह रीत।

प्रेम में रोना ही होता है, जीवन खोना ही होता है,
हार हो या हो जीत !

'शहज़ाद' लखनवी

प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना

प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना, सावन की भरी बरसातों में,
आजाए इश्क़ जवानी पर, वह रस हो प्रेम की बातों में,
दर्द उठे मीठा-मीठा सा, दिल कसके काली रातों में,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !
जिस गीत की मीठी तानों से, इक प्रेम की गंगा फूट पड़े,
आँखों से लहू हो जाय रवाँ,[1] अश्कों[2] का दरिया फूट पड़े,

---

[1]जारी। [2]आँसुओं।

उजड़ी हुई दिल की महफ़िल[1] में इक नूर की दुनिया फूट पड़े,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !
कुहसारों[2] पर बादल छाए, इशरत[3] पै ज़माना मायल[4] हो,
फिर खाए चोट मुहब्बत की, फिर दुनिया का दिल घायल हो,
हर भोला-भाला शरमीला उलफ़त के दर का सायल[5] हो,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना।
हो सोज़[6] वही और साज़[7] वही, वह प्रीत के दिन फिर आजाएं,
बरखा हो, प्यार की बातें हों, इस रीत के दिन फिर आजाएं,
फिर दुखियारों की हार न हो औ' जीत के दिन फिर आजाएं,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !

सिराजुद्दीन 'ज़फ़र'

सावन

वह पर्वत पर है इक बदली का साया, अँधेरा जंगलों में सनसनाया,
पपीहा 'पीहू' 'पीहू' गुनगुनाया, हवा ने झाड़ियों में गीत गाया,
वे बगलों ने भी अपने पर सँवारे !
वे मक्खन के खिलौने प्यारे-प्यारे !
वे वादी[8] में अबाबीलों की डारे, वे बल खाती हुईं पानी की धारे,
वे भोले-भोले बच्चों की क़तारें, वे झूलों पर मल्हारों की पुकारें,
वह इक नन्ही फिसल कर रो रही है।
चुनरिया बेदिली से धो रही है।
धनक[9] ने यक-ब-यक चिल्ला चढ़ाया, पलट दी आन में आलम[10] की काया,

---

[1]सभा। [2]पहाड़ों। [3]आराम। [4]झुके। [5]याचक। [6]दर्द। [7]वाद्ययंत्र। [8]घाटी। [9]इंद्रधनुष। [10]संसार।

फटी बदली औ' सूरज मुस्कराया, छुआ चाँदी को औ' सोना बनाया,
हवा ने धीमे-धीमे गीत गाए।
पहाड़ों के पड़े झीलों में साये।

वह इक चरवाहे ने मुरली बजाई, वह नज़्ज़ारों को अँगड़ाई-सी आई,
यह ख़ुनकी[1] और यह आतश-नवाई[2], नया चोला बदलती है ख़ुदाई,
ठिठर कर बकरियां थर्रा रही हैं।
जुगाली ही है, मन बहला रही हैं।

यह सब्ज़ा औ' यह नालों की रवानी, बफर कर, झाग बन जाता है पानी,
यह भीगे-भीगे पौदों की जवानी, मुझे डसती हैं ये घड़ियां सुहानी,
ज़मीं पर बारिशें क्या हो रही हैं?
मेरी क़िस्मत पै हूरें[3] रो रही हैं!

वे अब तक क्यों न आए, क्यों न आए? वे आए तो मुझे सावन लुभाए,
मुझे वे, औ' उन्हें परदेस भाए, कहां तक राह देखूं हाय, हाय,
उड़े जाते हैं वे बादल बरस कर,
मेरे दिल अब न रो, कमबख़्त, बस कर!

अहमद नदीम क़ासिमी

आहू[4]

माथे पै बिंदी, आँख में जादू, ओठों पै बिजली, गिरती थी हरसू[5]।
चाल लचकती, बात बहकती, जैसे किसी ने पीली हो दारू[6]।
अँखड़ियां ऐसी, जिन में रक़्सां—छिन में राधा छिन में राहू।
ऐसी भड़क थी ख़ल्क़[7] थी हैरां, रेल पै आया, कहां से आहू?

'यलदरम'

---

[1]ठंडक। [2]अग्निवर्षा। [3]परियां। [4]मृगछौना। [5]सब ओर। [6]मदिरा। [7]जनता।

मैं तुझ से मुहब्बत करता हूं

मैं तुझ से मुहब्बत करता हू ।
ओ मुझ से ख़फ़ा रहनेवाले ! ओ मुझ को बुरा कहने वाले !
मैं तुझ से मुहब्बत करता हू , मैं तेरे नाम पै मरता हू ।
मैं तेरा अदना[1] बंदा हू , राज़ी-ब-रज़ा[2] रहनेवाला ।
मैं तेरा अदना बंदा हू , सरगमें वफ़ा[3] रहनेवाला ।
मैं तेरा अदना बंदा हू , कदमों में गिरा रहनेवाला ।
तू मुझ से ख़फ़ा क्यों रहता है, ओ मुझ से ख़फ़ा रहनेवाले !
तू मुझ को बुरा क्यों कहता है, ओ मुझ को बुरा कहनेवाले !
मैं तुझ से मुहब्बत करता हूं ! मैं तेरे नाम पै मरता हूं !

'मजीद' मलिक

आग़ाज़[4]

मुझे तुझ से इश्क नहीं नहीं ! मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं[5]—
तू हो मुझ से दूर अगर कभी , तुझे ढूंढती हो नज़र कभी ,
तो जिगर[6] में उठता है दर्द-सा , मेरा रंग रहता है जर्द-सा ।
मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं, मुझे तुझ से इश्क नहीं नहीं !
मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं, मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं—
तू अगर हो मजमए आम[7] में, किसी खेल में किसी काम में ,
तो मैं छिप के दूर ही दूर से , तुझे देखता हूं ग़रूर[8] से ।
मगर ऐ हसीनाए नाजनीं, मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं !
तू कहे यह मुझ से अगर कभी, मुझे ला दो लालो-गुहर[9] कभी,

---

[1]गरीब । [2]तेरी ख़ुशी ख़ुश रहनेवाला । [3]सदैव तेरा हुक्म माननेवाला ।
[4]आरंभ । [5]ऐ सुंदरी तरुणी । [6]हृदय । [7]जनता की भीड़ । [8]गर्व । [9]हीरे-मोती ।

तो मैं दूर-दूर की सोच लू, मै फलक के तारे भी नोच लू,
यह सबूत शौके-कमाल[1] दू, तेरे पाओं में उन्हें डाल दू।
मगर ऐ हसीनाए नाज़नीं, मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं!

'मजीद' मलिक

कौन किसी का मीत?

कौन किसी का मीत?
सावन की तूफ़ानी रातें, कैफ़भरी[2] मस्तानी रातें,
रातें, वह दीवानी रातें, बीत गई हैं बीत!
कोई सितम-ईजाद नहीं है, दाद नहीं, फरयाद नहीं है,
उन को कुछ भी याद नहीं है, मुँह देखे की प्रीत!
बाँके बालम के बलिहारी, उस की चितवन की छबि न्यारी,
मैंने जीती बाज़ी हारी, हार भी उन की जीत।
मन-मूरख यह भूल रहा है, काँटों ही पर फूल रहा है,
गाता है और भूल रहा है, आशाओं के गीत!

सोहनलाल, 'साहर'

वहीं ले चल मेरा चर्खा

मुझे मा-बाप के घर में वह इतमीनान[3] हासिल[4] था,
कि दुनिया भर की उम्मीदों का गहवारा[5] मेरा दिल था।
हुई हालत मगर बिल्कुल वही सुसराल में आकर,
फँसे जैसे कोई आज़ाद पछी जाल में आकर।
मुहल्ले भर की सारी औरतें मुझ को बनाती हैं,

---

[1] पक्के प्रेम का प्रमाण। [2] मस्ती भरी। [3] शांति। [4] प्राप्त। [5] घर।

मैं उन का मुँह चिढ़ाती हूं, वह मेरा मुँह चिढ़ाती हैं।
सहे जाते नहीं अब मुझ से ताने सास ननदों के,
क़यामत है रहूं किस तरह दिन भर पास ननदों के!
वहीं ले चल मेरा चर्ख़ा, जहा चलते हैं हल तेरे!
तेरी फ़ुरक़त[1] की मारी तुझ को हरदम याद करती है।
मुझे ले चल कि मेरी आत्मा फ़रयाद करती है!
न आँसू आएँगे रुख़[2] पर, न घबराएगा दिल मेरा,
कि तेरे साथ रहने से बहल जाएगा दिल मेरा।
यह माना हैं बहुत दिलचस्प सुबहो-शाम के जल्वे,
रहे तुम आँख से ओझल, तो फिर किस काम के जल्वे!
तुम्हारे साथ रह कर अपना ग़म सब भूल जाऊँगी,
तुम्हें गाता जो देखूँगी तो ख़ुद भी साथ गाऊँगी।
मैं अपने दर्द से जंगल के वीराने को भर दूँगी,
मैं अपने गीत से सारी फ़िज़ा आबाद कर दूँगी।
मेरी ख़्वाब-आफ़रीं[3] तानों में खो जाएँगे पञ्छी भी,
दरख़्तों[4] की। तरह मबहूत[5] हो जाएगे पंछी भी।
वही रौनक़ वही सामान आएगा नज़र मुझ को,
मै हूँगी साथ तो वह बन भी हो जाएगा घर मुझ को।
वहीं ले चल मेरा चर्ख़ा, जहां चलते हैं हल तेरे!

'फ़ाख़िर' हरियानवी

चाह का भेद

उन्हें जी से मैं कैसे भुलाऊँ सखी, मेरे जी को जो आके लुभा ही गए!
मेरे मन में वह प्रेम बसा ही गए, मुझे प्रीत का रोग लगा ही गए!

---

[1]विरह। [2]मुख। [3]नींद सुलाने वाली। [4]वृक्षों। [5]मुग्ध।

किए मैंने हज़ार-हज़ार जतन, कि बचा रहे प्रीत की आग से मन,
मेरे मन में उभार के अपनी लगन, वह लगाव की आग लगा ही गए!
बड़े सुख से यह बीते थे चौदह बरस, कभी मैं ने चखा न था प्रेम का रस,
मेरे नयनों को श्याम दिखा के दरस, मेरे दिल में वह चाह बसा ही गए!
कभी सपनों की छाओं में सोई न थी, कभी भूल के दुख से मैं रोई न थी,
मुझे प्रेम के सपने दिखा ही गए, मुझे प्रेम के दुख से रुला ही गए!
रहे रात की रात सिधार गए, मुझे सपना समझ के बिसार गए,
मैं थी हार, गले से उतार गए, मै दिया थी जिसे वह बुझा ही गए।
सखि कोयले 'सावनी' गाएँगी फिर, नई कलिया छावनी छाएँगी फिर,
मेरी चैन की रातें न आएँगी फिर, जिन्हें नैन के नीर मिटा ही गए!
मेरे जी में थी बात छिपा के रखूं, सखि चाह को मन में दबा के रखूं,
उन्हे देख के आँसू जो आही गए, मेरी चाह का भेद बता ही गए।

'अज्ञात'

ग्वालन

इस की आँख में प्रीत का रस है, इस के मन में प्रेम की लहरें।
इस के सिर पर दूध की मटकी, इस के घर में दूध की नहरें।
हँसमुख, सुंदर, छैल-छबीली, सब को दूध पिलाती है यह।
कहती है जब 'माखन ले लो!', गोकुल याद दिलाती है यह!
खेले थे परवान चढ़े थे[1], इस के घर में श्याम कन्हैया।
दुनिया थी यह इक भवसागर, खेती थी यह इस की नैया!
कितनी पाक और कितनी सुदर! कृष्ण मुरारी इस ने पाले।
प्यार से उन को कहती थी यह, 'आजा प्यारे माखन खाले'!

---

[1]बड़े हुए थे।

पालती है यह अब भी हम को, अब भी इस की रीत वही है।
देती है यह अब भी माखन, प्रेम वही है, प्रीत वही है।
आओ बढ़ कर इस से पूछें— क्योंरी ग्वालन, श्याम कहाँ हैं?
उन बिन भारत भर है सूना, उस के दिल आराम कहाँ है?
वह जो मिलें तो उन से कहना, श्याम मुरारी फिर से आओ,
बोल करो फिर बाला अपना, भारत के फिर भाग जगाओ!

मनोहरलाल 'राहत'

कमल से

ऐ कमल, ऐ जल-परी, ऐ झील के तारों की जोत!
तेरे कारण प्रीत-सागर में खुली गंगा की सोत।
धारता है रूप कुछ ऐसे तू ऐ नाज़ुक कमल,
मोहनी मूरत पै तेरी आँख जाती है फिसल।
गुदगुदा देती है तुझ को जिस समय कोयल की कूक,
मुस्कराहट से बदलती है तिरे हिरदे की हूक।
तू कहाँ, इक हंस है पानी पै पर खोले हुए।
चाँद पनघट पर उतर आया है पर तोले हुए।
या कोई बगला खड़ा है सर उठाए घात में,
या इकट्ठा हो गया है फेन चौड़े पात में,
या यह चाँदी का कटोरा है 'कटोरा-ताल' में,
या यह शीशे का दिया जलता है 'चौमुख ताल' में,
या किसी देवी की सुमिरन गिर पड़ी तालाब में,
या गड़ी है कोई फूलों की छड़ी तालाब में,
या खुला है फूल की सूरत में भादों का भरम,
या लिया है नूर के तड़के ने दरिया पर जनम।

'शाद' आर्फ़ी

सपने में क्यों आते हो ?

चुपके-चुपके ताक लगाए,
साँस की आहट तक ना आए,
नाग समान कई बल खाए,
रैन अँधेरी, हू का आलम,
कैसे निडर हो, सुंदर बालम !
ऐसे में जब आते हो।
जी को धड़का जाते हो।
ऊपर वाला राह बताए,
राह में वह ठोकर ना खाए !
बिगड़ी बात कहीं बन जाए !
आए सोए भाग जगाए !
बैरी है ससार तुम्हारा।
मैं हारी जब मन को हारा।
सपने में क्यों आते हो ?
नींद उड़ा ले जाते हो !

लतीफ़ अनवर

ओ मेरे बचपन की कश्ती

ओ मेरे बचपन की कश्ती, इन काली-काली रातों मे,
किस जानिब[1] भागी जाती है, इन तूफ़ानी बरसातों मे ?
दिल में उलफ़त, आँखों मे चमक, नज़रों में हिजाब[2] आने को है।
भँवरों से निकल, लहरों से सँभल, तूफ़ाने शबाब[3] आने को है।

---

[1] तरफ़। [2] लज्जा। [3] जवानी का तूफ़ान।

शहरों में डाकू बसते हैं, ले चल मुझ को सहराओं में!
ओ मेरी जवानी, ले भी चल, जंगल की मस्त हवाओं में!
आ उस जा[1] भाग चलें जिस जा, यह जिस्म[2] लुटाए जाते हैं।
जिस जा आज़ादी की ख़ातिर, सर भेंट चढ़ाए जाते हैं।
जहां दिल की नज़रें[3] चढ़ती हैं, आज़ादी के दरबारों में।
जिस जगह जवानी पलती है, तलवारों की झनकारों में।

'क़मर' जलालाबादी

चंदा मामू

प्यारे चाँद चमकनेवाले, दुनिया भर को तकने वाले,
सब के सिर पर तेरा डेरा, सब से ऊँचा घर है तेरा।
तू जब अपनी ख़ास शान से, नीले-नीले आसमान से,
दूर उभरता दिया दिखाई, बोल उठी झट बुढ़िया माई —
'बेटा तेरा मामू आया'। मैं कहता हूं 'मामू कैसा'!
सब आते हैं यह नहीं आता, इंजन-गाड़ी यह नहीं लाता।
यह लो मेरी गेंद उछल कर, जा पहुँची है तारों के घर।
हाँ ऐ चाँद अब नीचे आना! दूध मलाई माखन खाना!
मेरे दिल का टुकड़ा बन जा! रूठा है चुपके से मन जा।
मेरी इन आँखों में रहना! कुछ भी करना, कुछ भी कहना!

ख़ज़ानचंद, 'वसीम'

फूल-फूल ऐ सरसों फूल!

फूल-फूल ऐ सरसों फूल!
आज फूल कल-परसों फूल, सदा सुहागिन बरसों फूल!

---

[1]जगह। [2]शरीर। [3]भेंटें।

जोबन पाकर बन में फूल, तन से फूल औ' मन से फूल !
फूल-फूल ऐ सरसों फूल !
पगली कोयल के ये बोल, तेरे मेरे दिल के बोल,
चुपके-चुपके सुनती रह ! सुन-सुन कर सिर धुनती रह !
फूल-फूल ऐ सरसों फूल !
मस्ती भरी हवाओं मे, जग की धूप औ' छाओं में,
झूमे जा, लहराए जा, आँखो मे मुसकाए जा !
फूल-फूल ऐ सरसों फूल !
फूल-फूल दीवानी फूल, पाकर नई जवानी फूल,
दुनिया की नजरों से दूर, अनमैली आँखों से दूर,
फूल-फूल ऐ सरसों फूल !
ऐ वनवासी की जोगन, ओ री, पी की बैरागन !
जब तक तन में साँस रहे, पिया मिलन की आस रहे।
फूल-फूल ऐ सरसों फूल !
आज फूल कल-परसों फूल, सदा सुहागन बरसों फूल।
फूल-फूल ऐ सरसों फूल।

ख़ज़ानचंद 'वसीम'

हठीले भँवरे

हठीले भँवरे मत गुजार !
रूप-गंध-रस-कोमलता का, दो दिन है ससार,
जीवन भर रोएगा जी को, दो दिन करके प्यार !
हठीले भँवरे मत गुजार !
जो कलिया खिल कर मुरझाई उन की ओर निहार !
आज कलंक हैं फुलवारी का कल थीं जो सिंगार !
हठीले भँवरे मत गुजार !

प्रेम का मीठा रोग लगा कर कैसी हाहाकार ?
मन पापी है दुख का कारण, पापी मन को मार !
हठीले भँवरे मत गुजार !
भूल न पतझड़ को ऐ पागल, मेरी ओर निहार !
प्रेम-बसत के खडहर पर करती हूं हाहाकार !
हठीले भँवरे मत गुजार !
जिस की आस पै दुनिया छोड़ी छोड दिया घर-बार,
उस पापी ने ठोकर मारी करके आँखे चार !
हठीले भँवरे मत गुजार !

बिहारीलाल, 'साबिर'